जनकपुर की झाँकी

तां दृष्ट्वा मुनयः सर्वे जनकस्य पुरीं शुभाम्।
साधु साध्विति शंसन्तो मिथिलां समपूजयत्॥

—श्रीमद्वाल्मीकि--बाल० ४८।१०

श्रीप्रेमनिधिजी महाराज

श्रीसीताराम

❀ श्रीसीतारामजी ❀

श्री जनकपुर की झाँकी

देश सुहावन पावन वेद बखानिय।
भूमि-तिलक सम तिरहुति त्रिभुवन जानिय॥
—श्रीजानकी मङ्गल
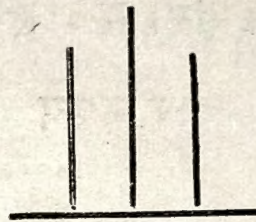
भूमि भाल जिय जानु तिलक रचना मिथिला है।
वरणत महिमा जासु शेष शारद शिथिला है॥
—श्रीमिथिला-विलास
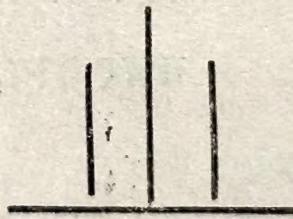
प्रदर्शक—
पं० स्वामी श्रीअवधकिशोरदासजी श्रीवैष्णव
श्रीप्रेमनिधिजी महाराज

श्रीसीताराम

श्रीसीताराम

प्रकाशक—

श्रीरामानन्द-आश्रम
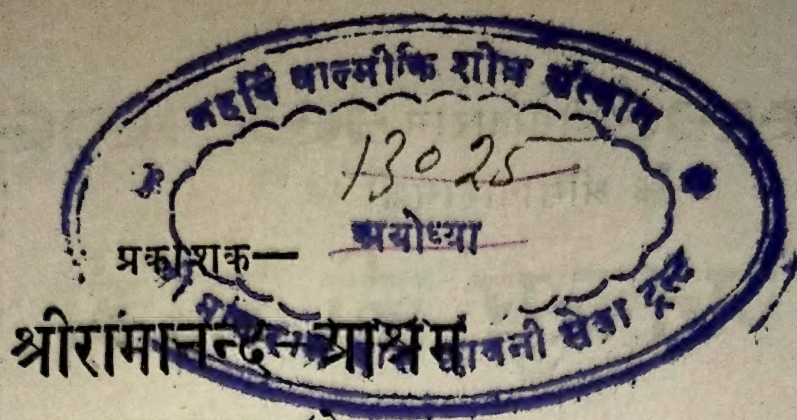
जनकपुर धाम, (नेपाल)

वाया-जयनगर जि० मधुबनी (बिहार)

द्वितीय संस्करण--प्रति १०००

बिजया दशमी सं० २०३१

निछावर चार रुपये
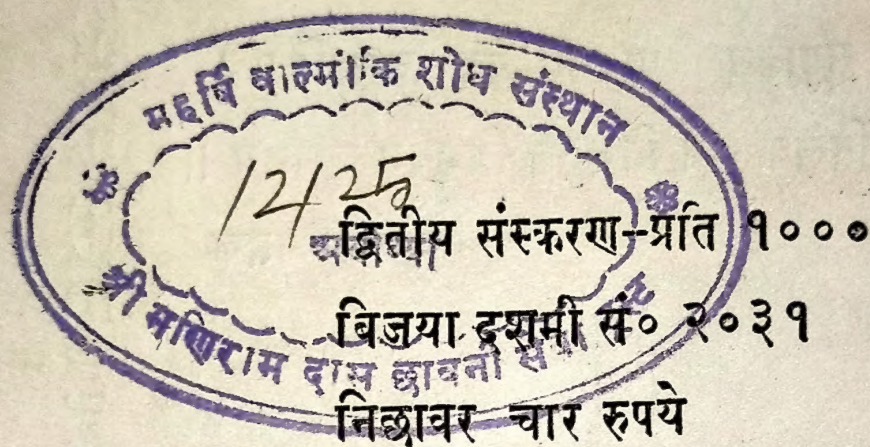
प्राप्ति स्थान—

श्रीसीतारामीय--सेवा मन्दिरम्

नजर बाग, अयोध्या, (उ०प्र०)

मुद्रकः—मनीराम प्रिन्टिङ्ग प्रेस, श्रीअयोध्याजी।

विषय-सूची

पृष्ठ

सामयिक-स्मरणम्-

श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के अद्वितीय एक सेवा भावी सन्त थे, समाज की मूक सेवा करना उनका लक्ष्य था; धन सम्मान की दुर्गन्ध से सर्वथा दूर ही रहना उन्हें अभीष्ठ था, मेरा उनका आत्मीय स्वजन सम्बन्ध था, उन्होंने मेरी कई पुस्तकें 'जागृति-कार्यालय' प्रयाग को छापने के लिये दे दी, उनमें एक 'जनकपुर की झांकी' भी थी। मेरे परम प्रिय अभिन्न हृदय मित्र का परमहंस परिव्राजक श्रीरामगोपालदासजी महाराज शास्त्री शुभ नाम था। आज वे दिव्य धाम साकेत में विराजते हैं। परन्तु उनकी अमर कीर्ति भारतीय सन्त समाज में अखण्ड विराजमान है।

श्रीजनकपुर की झांकी वि० सं० २००४ श्रीरामानन्द जयन्ती पर छपी थी, वीसों वर्ष से अप्राप्य इसको पुनः छपाने का प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिली, भीषण महर्घता के समय में पुनः प्रकाश पथ में लाना करुणानिधान श्रीकिशोरीजू को अभीष्ट होगा।

इसके सुन्दर चित्रों से सुसज्जित संस्करण को देखकर स्वर्गीय सन्त की आत्मा तथा मेरे वात्सल्य भाजन श्रीहरिचरणलाल वर्मा भी अत्यन्त प्रसन्न होंगे। आशा है सुधीजन मानव सुलभ त्रुटियों को क्षमाकर इसे अपनावेंगे।

छाया स्टूडियो जनकपुर धाम के कलाकार श्रीशुकदेवप्रसाद को धन्यवाद है। जिनके सौजन्य से अधिकांश चित्र प्राप्त हुए हैं।

विजया दशमी २०३१
श्रीसेवा मन्दिरम् अयोध्या। }

अवधकिशोरदास
'प्रेमनिधि'

परम पूज्य प्रातःस्मरणीय आचार्य श्री

गुजरात के प्रसिद्ध महात्मा युगद्रष्टा सन्त अनन्त श्रीस्वामी

श्री सीतारामीय श्री मथुरादासजी महाराज

समर्पणम्—

अनन्त करुणानिधान जिन श्रीसद्गुरु देवने—

१– श्रीमिथिला-अवध में निवास करवाकर श्रीधाम के रहस्य को हृदयङ्गम करवाया=

२– श्रीमिथिला अवध युगलधाम में दृढ़निष्टा प्रदान की।

३– श्रीमिथिला अवध का दिव्य दर्शन करवाकर कृतार्थ किया,

४– श्रीमिथिला का स्नेह सम्बन्ध दिव्य आत्मीय भाव प्रदान कर श्रीप्रिया प्रियतम से नेह नाता जोड़ा।

५– अन्तर्यामी स्वरूप से अन्तर में विराजमान होकर यह 'झांकी' लिखवाने का सौभाग्य प्रदान किया।

उन दीन दयालु श्रीसद्गुरु भगवान् के शीतल-सुखद अभय वरद कर कमलों में सादर सप्रेम 'श्रीजनकपुर की झांकी' समर्पित है।

आपका ही एक अपराधी
अधम सेवक
'प्रेमनिधि'–'अवध'

श्री सीतारामीय आचार्य स्वामी

श्रीमथुरादासजी महाराज प्रणीत

❀ श्री मिथिला-प्रशस्ति ❀

दोहा

श्री मिथिला वर भूमि है, सीता जन्म अनूप ।
योग भोग महँ जहँ करैं, योगेश्वर नर भूप ॥१॥
कोटि जन्म को कांदलो हृदय थिरान्यो आय ।
श्रीमिथिला जल पायके स्वच्छ होत छन मांय ॥२॥

मिथिला है दिव्य पुर तुल्य नाहीं कौनो और
शिव अज आदि पुर सब ही को गुर है ।
यामें वसे धर्म धुर सियावर भक्ति पूर,
काम क्रोध किये चूर बड़े धर्म शूर है ॥
कोटि तीर्थ दान शूर ज्ञान योग भर पूर,
तप व्रत धर्म धूर याके विना धूर है ॥
सिय पिय रस चूर कियो वश चाहै फूर,
"मथुरा" के मन यह स्वामिनि को पूर है॥

मन मोहन है सिय जन्म मिथिला सुभूमि,
जहँ वाल केलि रची राम प्रिया आयके ।
शुक सदा वाहि मुख मिथिला सुयश जौन,
वेद शास्त्र ख्यात नहीं गावे कभूचाय के ॥
रामसिया मुख नामजपे सदा आठोंयाम,
रहे नित्य सिया धाम मुट्ठी चूरा खायके ।
दासन को दास बनि, सुख दुःख सम गुनि,
रस रूप बने मस्त सिया गुण गायके ॥

श्रीजनकपुर धाम के प्रसिद्ध तीर्थों की सूची ।

१—श्रीजानकी मन्दिर
२—श्रीराम मन्दिर
३—श्रीजनक मन्दिर
४—गङ्गा सागर
५—धनुष क्षेत्र सर
६—पाद प्रक्षालन सर
७—श्री लक्ष्मण मन्दिर
८—महाराज सागर
(दशरथ तलाव)
९—अरगजा कुण्ड
१०—रङ्ग भूमी
११—सङ्कट-मोचन
१२—श्रीतुलसी स्मारक
१३—श्रीरामानन्द आश्रम
(श्रीदुलहा भगवान का मन्दिर)
१४—विहार कुण्ड
१५—ज्ञानकूप--विद्या कूप
१६—रसिकनिवास (सीताकुण्ड)
१७—दूधमती गङ्गा
१८—अग्नि कुण्ड
१९—रत्न सागर
२०—मणि मण्डप

ये सब तीर्थ अन्तर्गृही परिक्रमा के अन्दर तथा सीमा के आस-पास हैं। इनके दर्शन पैदल घुमकर किये जाते हैं। क्योंकि अधिकांश दर्शनीय स्थानों पर पक्की सड़कों का अभाव ही है।

* कुछ दूर के अन्य सुप्रसिद्ध तीर्थ *

१—धनुषा जी, ६ कोश १२ माइल पूर्वोत्तर।
२—जनक सरोवर (परशुराम कुण्ड) ५ कोश १० माइल धनुषा जी के रास्ते में।
३—कञ्चन वन, ३ कोश ६ माइल पश्चिमोत्तर।
४—गिरिजा स्थान (बागतड़ाग) ५ कोश १० माइल दक्षिण।

५—अहिल्या स्थान (गौतम कुण्ड) १५ कोश ३० माइल दक्षिण पश्चिम "कमतौल" स्टेशन से १ माइल पर है।

६—कमला जी ९ कोश पूर्व १८ माइल, जयनगर स्टेशन पर तथा मोटर के रास्ते राजमार्ग से गोडार--शीसापानी के पास

७---नन्द महरी, गोडार-शीशापानी उतरकर २ माइल पैदल जनकपुरसे १० कोश २०माइल, यहाँ उत्तरवाहिनीकमला है

८----विश्वामित्र-आश्रम (विशौल) ५ कोश १० मा० दक्षिण-पूर्व

९--पंथ पाकर २६ माइल पश्चिम सीतामढ़ी के रास्ते मोटरसे।

१०—सीतामढ़ी ३२ माइल पश्चिम, श्रीजानकी जन्मभूमि है।

११-श्रीपशुपति, श्रीधाम से विमान तथा मोटर दोनों साधन मिल जाते हैं। नरकटियागंज लाइन के रक्सौल स्टेशन से वीरगंज भीमफेरी तक रेल तथा आगे मोटर का साधन भी मिलता है। इनके दर्शनों के लिये प्रायः पैदलही जाना पड़ता है कुछ ही तीर्थ रेल-मोटर से कर सकते हैं। सड़कें प्रायः नेपाल में कच्ची तथा भारत में पक्की हैं। जनकपुर की यात्रा कार्तिक से आषाढ़ तक ही करना ठीक है। बरसात में कष्ट होता है।

श्रीराम जयराम, जय जय राम।

तीर्थों की यात्रायें क्यों करें ?

तीर्थों की विशेषता भारतवर्ष में है, क्योंकि यह धर्मप्रधान और आध्यात्मिक उन्नति को ही अपना परम धन समझता है और वास्तव में आध्यात्मिक उन्नति ही मानव जीवन की सच्ची सफलता है। शुद्ध, सात्विक, सदाचारपरायण, प्रभु-भक्त जहाँ विराजमान होकर अपने प्यारे प्रभु को प्रेम के पाश में बाँधकर आकर्षण करते हैं "तत्तीर्थं तत्तपोवनम्" बन जाता है। इसीलिए कहा गया है कि—

दानमिज्या तपः शौचं तीर्थ सेवा श्रुतिस्तथा।
सर्वाण्येतानि तीर्थाणि यदि भावेन निर्मलः ॥
निगृहीतेन्द्रियग्रामो यत्रैव वसते नरः।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्करं तथा ॥

अयो० माहात्म्य--अ० ३+७-८

"यदि भावना निर्मल है तो दान-पूजा, तप, तीर्थसेवा; कथा श्रवण ये सभी तीर्थ हैं। जितेन्द्रिय पुरुष जहाँ बसता है वहीं उसको कुरुक्षेत्र और पुष्करादि तीर्थ हैं।' तीर्थोंका इतिहास भक्त और भगवान की गाथाओं से परिपूर्ण है। जहाँ कहीं भी भक्त और भगवान् अपना अप्रतिम चमत्कार दिखलाये हैं वहीं तीर्थ बन गए हैं। यही कारण है कि तीर्थों के प्रति मानव समाज की विशेष श्रद्धा रहती है। अगर अपने घरों में संयोग न भी मिले तो भी तीर्थों में जाने पर तो—

गङ्गा स्नानं सतां संगो दानं च हरि पूजनम् ।
आतिथ्यं च पुराणानां श्रवणं मुक्ति साधनम् ॥
वदन्ति मुनयो सर्वे साधूनां संगमो वरः ।
यत्तो ज्ञानं हरे भक्तिः पाप हानिश्च जायते ॥

अयो० मा० अध्याय० ३+२७-२८

इत्यादि अनुकूल संयोग गङ्गा जी का स्नान-दान-पूजा साधुओं का सङ्ग, अतिथि पूजा, पुराणों का श्रवण ये मुक्ति के साधन सहज ही मिल जाते हैं। मुनि और महात्मागण कहते हैं कि साधुओं का सङ्ग ही सर्वश्रेष्ठ है, जो ज्ञान भक्ति को उदय कर पापों को नष्ट करता है। तीर्थों में सन्त भक्तों की बिशेष आसक्ति रहने से जितना अधिक और अच्छे सज्जनों का संग तीर्थों में मिल सकता है उतना अन्यत्र नहीं मिल सकता। तीर्थों में ऐसे-ऐसे विरले संत रहा करते हैं कि जिनके दर्शन देवताओं को भी दुर्लभ हैं। क्योंकि—

अब चित चेति चित्रकूटहिं चलु ।
कोपित कलि लोपित मङ्गल मगु,
बिचरत बढ़त मोह माया मलु ।
भूमि बिलोकु रामपद अंकित,
बन बिलोकु रघुवर बिहार थलु ॥

यही सिद्धान्त मानकर आजके जमाने में सन्त महात्माओं ने घूमना प्रायः छोड़ दिया है। आज भी अयोध्या, मिथिला, ब्रज, चित्रकूट,हरिद्वार आदि पावन प्रदेशोंमें सच्छात्र निर्दिष्ट सर्व-लक्षणोंसे सम्पन्न महात्माओं के शुभ दर्शन होते हैं, वैसे महात्मा

अन्यत्र कहाँ मिल सकेंगे ? हाँ यह बात दूसरी है कि तीर्थों के शहरी वातावरण से बचने के लिये ऐसे महात्मा अपने को ऐसे छिपाये रहते हैं कि कोई जल्दी नहीं लख पाता है। फिर भी सच्चे श्रद्धालुओं के लिये उनके दर्शन दुर्लभ भी नहीं हैं। इसलिये तीर्थों की यात्रा प्रशस्त मानी गयी है—

कितने लोग कहा करते है कि भाई हमारे गाँव और देश में जैसी जमीन और मनुष्य हैं वैसे ही तो तीर्थों में भी हैं, फिर वहाँ क्यों जायँ ? घर बैठे ही हरिभजन क्यों न करें ? परन्तु बिचार करने से मालूम होता है कि यह सिद्धान्त भी गलत ही है, क्योंकि एक ही गाँव में ये जमीन तो अच्छी है, बड़ी महँगी बिकेगी, और यह तो ठीक नहीं है। यह भेद तो लगा ही रहता है, एक हाड़ माँस के पुतले में अगर हाथ पाँव में कोई क्षति पहुँचे तो विशेष चिन्ता नहीं करते हैं परन्तु गले या पेट या शिर में कोई आघात पहुँचे तो कितनी भयंकर चिन्ता होती है। यही हाल देश और तीर्थ विशेषों में भी माना जाता है= शास्त्र कहते हैं कि—

यथा शरीरस्योद्देशाः केचिन्मुख्यतमाः स्मृताः।
तथा पृथिव्या उद्देशाः केचित्पुण्यतमाः स्मृताः।
प्रभावादद्भुतं भूमेः सलिलस्य च तेजसः।
अत्याग्रहान्मुनीन्द्रानां तथा तीर्थाणि बिद्यते ॥

भूमि के अद्भुत प्रभाव से, जल के अनुपम तेज से तथा महात्माओं के अत्यन्त प्रेमाग्रह से तीर्थ अद्भुत प्रतापी हो जाते हैं—यही कारण है कि हमारे गृह की निज पूजा से ग्राम

के मंदिरों में कुछ विशेष श्रद्धा मालूम होती है, क्योंकि वहाँ पर हमारे जैसे अनेकों भावुकों की भावसंपत्ति एकत्रित होती है। और उन ग्राममंदिरों से भी तीर्थ--मंदिरों में और भी विशेष श्रद्धा प्रकट होती है क्योंकि वहाँ हमारे ग्रामवासी भक्तोंके जैसे असंख्य ग्रामनिवासी आ-आकर अपने-अपने निर्मल भावों को समर्पण कर अपना जन्म कृतार्थ करते हैं "संघे शक्तिः कलौ-युगे" के अनुसार तीर्थों में अनायास ही भावुक भक्तों का और सच्चे संतों का परस्पर संगठन हुआ ही करता है। उनके पवित्र अन्तःकरण, पावन नामध्वनि और प्रेम पुष्पों की पावन सौरभ दूरसे ही मनुष्य के अन्तःकरण पर जबर्दस्त प्रभाव डालती है। आज के नास्तिक जमाने में भी तीर्थ में जाने पर एकबार प्रेम की छिपी धारायें प्रवाहित होने लगती हैं और कुछ न कुछ पुष्प तुलसीदल भी लेकर प्रभु चरणों में समर्पण करने की सहृदय सज्जनों के मन में एक बार कामना हुए बिना नहीं रहती। इसीलिये कहा है कि—

अयोध्यां दृश्यमानायां हृष्ट रोमा च सुन्दरि ! ।
वाहनं संपरित्यज्य लुण्ठते धरणी गतः ॥
पञ्च सूना कृतं पापं तथा मार्ग कृतं च यत् ।
कृमी कीट पतङ्गाश्च निहताः पथि गच्छताम् ॥
परान्नं परपानीयं यः स्पृष्टेन्न च सङ्गमः ।
तत्सर्वं नाशमायान्ति ह्ययोध्या दर्शने कृते ॥
अयोध्या दर्शनं यस्तु करोति मनुजो यदि ।
सप्तजन्म कृतं पापं नश्यते नात्र संशयः ॥

॥ अयो० माहात्म्य ॥

तीर्थ का दर्शन करते ही वाहन का परित्याग कर धरणी पर साष्टांग पड़ जाना चाहिये, (इसीलिये प्रभुने जब अयोध्या थोड़े ही दूर थी तभी पुष्पक विमान से उतर कर सबको अयोध्या का माहात्म्य सुनाकर प्रणाम किया था,) ऐसा करने से तीर्थों में जाते समय अज्ञानतावश रास्ते में किये पाप,, चीटीं, पक्षी, जीवजन्तु आदि चलते समय मरे हुए जीवों का दोष, एवं परान्न-पान भोजनादि ऋण सभी नष्ट हो जाते हैं, एक बार श्री अवध आदि प्रभु धामों के दर्शन करने से सात जन्मों के पाप नष्ट होते हैं।'

ये है तीर्थों का प्रभाव, तीर्थों में अनेकों की भाव संपत्ति एकत्रित रहने से भाव के भूखे भगवान् वहाँ से अन्यत्र कहीं नहीं जाते। तीर्थ--मंदिरों में जाकर आर्तपुकार करते ही प्रभु उसकी प्रार्थना सुन लेते हैं और दूसरी बार भक्त अपनी मन-कामना पूर्ण होने पर हँसते-हँसते पूजा करने दौड़ा आता है।

यदि कहें कि और भी तो प्रभु को प्रसन्न करने और पापों को नष्ट करने के अनेकों साधन हैं फिर तीर्थों की यात्रा क्यों करें ? इसका भी शास्त्रकार उत्तर देते हैं कि—

ऋषिभिः क्रतवः प्रोक्ता वेदेस्वेव यथा क्रमम्।
फलं चेह यथा बुद्धि प्रेत्य चेह च सर्वशः॥
ते न शक्या दरिद्रेण यज्ञाः कर्तुं महीतले।
बहूपकरणा यज्ञाः नाना संभार विस्तराः॥
यो दरिद्रैरपि विधिः शक्यः प्राप्तुं महेश्वरि।
तुल्यो यदा फलैः पुण्यैस्तन्निबोध शुचिव्रते॥

ऋषीनां परमं गुप्तं देवानामपि दुर्लभम् ।
तीर्थाभिगमनं चैव यज्ञैरपि विशिष्यते ॥

—अयो० महा०

"ऋषियों ने यज्ञादिक अनेकों उपाय बतलाये हैं। परन्तु उनमें बहुत ही उपयोगी वस्तुओं और धन का संग्रह करना पड़ता है, जो गरीबों से कभी नहीं हो सकता, परन्तु दरिद्र भी चाहे तो पैदल घूम फिर कर तीर्थ यात्रा कर सकता है और संतों का संग कर प्रभुको प्राप्त करने का मार्ग ढूंढ़ सकता है। इसलिये तीर्थ यात्रा यज्ञों से भी विशेष उपयोगी मानी गयी है।"

पहले जमाने में रेल का साधन नहीं था फिर भी श्रद्धालु भक्त चारों धाम की पैदल यात्रा करते थे, उससे कई लाभ होते थे। अपने देश के सभी दर्शनीय स्थानों का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त होता था। देश-विदेश की वस्तुओं का ज्ञानप्राप्त होता था बड़े-बड़े महात्मा और विद्वानों का सङ्ग मिल जाता था। रात दिन अब इतना दूर तीर्थ रह गया। अब कल प्रभु दर्शन होंगे। इस प्रकार की निरंतर प्रभुस्मृति बनी रहती थी परन्तु अब तो रेल की यात्रा के कारण बहुत से लाभ छूट से गये हैं। फिर भी आज भी पैदल घूमकर यात्रा करने वाले संतों की कमी नहीं है और तीर्थ यात्रा के सच्चे सुख का अनुभव भी वे ही करते हैं। उनके साथी गृहस्थ भी उतने दिनों के वास्ते गृह परिवार का विस्मरण कर सच्चे वैराग्य का सुख प्राप्त कर लेते हैं। तथा प्रभु भजन की मस्ती का आनन्द प्राप्त करते हैं।

इन उद्धरणों से तीर्थ यात्रा संबन्धी बहुत सी बातें स्पष्ट हो चुकी हैं। आशा है पाठक इस ओर ध्यान देकर तीर्थों की महत्ता समझेंगे और अपने भारतीय इतिहास के जीते जागते इन चित्रों की शोभा एवं श्रद्धा को बढ़ाते रहने का शुभ प्रयत्न करेंगे—

कितने महाशय कहा करते हैं कि तीर्थों की यात्रा करना तो अच्छा है परन्तु अमुक पर्वपर अमुक मेला लगादिया जाता है यह प्रथा ठीक नहीं है। हमारे भाइयों की यह शङ्का शास्त्रीय सिद्धान्तों को समझने पर नष्ट हो जाती है। ग्रह तिथि और नक्षत्रोंका भूमंडल पर बड़ा बिचित्र प्रभाव पड़ता है। गत भूकंप में ग्रहों के एकत्रित होने से कितना भारी उत्पात मच गया था। प्रतिवर्ष भी ज्योतिष तत्त्ववेत्ताओं द्वारा बतलाई बहुत सी बातें सत्य पाई जाती हैं जिसका अनुभव प्रत्येक को होता है। भारत के प्राचीन ऋषियों ने इन्हीं सब बातों का अनुभव करके किन-किन योगों में किस-किस तीर्थ प्रदेश पर विचित्र प्रभाव पड़ता है इसका वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण कर उसका माहात्म्य लिखा है। उसदिन वहाँ जाने पर प्रत्येक मानव-हृदयमें एकबार धार्मिक श्रद्धायें लहराने लगती हैं, और पहले पैदल रास्ता भयावह था इसलिये जनसमूह एकत्रितहोकर दर्शनार्थ जाया करता था। यही कारण है कि उन दिनों मेले पर लोग जाया करतेथे। आगेचलकर वही स्थायी मेले बन गये। इन मेलोंसे कई तरहके लाभ जनता को प्राप्त होते थे। तीर्थ के इतिहास से महापुरुषों की यादगारी हुआ करती थी। लोक परस्पर एक दूसरोंसे आज भी तीर्थ का माहात्म्य कहते हुए उस तीर्थ के विशेष पूज्य देव-

मन्दिर और महात्माओं की कथायें कहते हैं। इस प्रकार भक्त और भगवान् का निरन्तर स्मरण, ऐतिहासिक घटनाओं की पुण्य स्मृति, उन तीर्थ पूज्य देव और महापुरुषों के प्रति जनता के आदर भाव की वृद्धि,प्रान्तीय और देशी वस्तुओं का सुन्दर प्रदर्शन, इष्ट-मित्र विद्वान् और सन्तों का परस्पर सम्मिलन, कथा-कीर्तन द्वारा लोकपरलोक में उपयोगी वस्तुओं के ज्ञान की प्राप्ति,तीर्थाटन के साथ अपने देश भाइयों के गाँव शहर रीति रहन-सहन आदिकों का परिचय, कस्बे-कस्बे की भाषा भाव, सुख दुःख और अन्य उपयोगी कलाओं का ज्ञान, व्यापारियों को व्यापार उन्नति के नये-नये साधन, आदि कई तरह के अनुभव प्राप्त होते थे। आज रेल का साधन होते हुए भी जो भाई पैदल यात्रा करते हैं उनको और रेल यात्रियों को भी इन में से बहुत सी बातों का खास ज्ञान प्राप्त होता है,और सबसे विशेष लाभ तो यह होता है कि जल हवा के परिवर्तन से शारीरिक और निरन्तर भगवत्स्मरण से मानसिक पवित्रता को प्राप्त कराने में तीर्थ अत्यधिक सहायक होकर गृह-परिवार की चिन्ता से भी उतने दिनों के वास्ते मुक्त कर देते हैं। ऐसे उपयोगी तीर्थों की यात्रा कौन सहृदय करना न चाहेगा? और जो प्रभु की पावन रजों का स्पर्श कर कौन अधम अपना उद्धार कर जन्म सफल न बनायेगा ? बन्धुओं, आओ ! एक बार इन भगवद्विभूतिओं के दिव्य दर्शनकर अपना मानव-जन्म कृतार्थ करो और तीर्थ पावन सन्तों का समागम कर प्रभु को प्राप्त करने के प्रशस्त मार्ग पर प्रयाण करो !

भवदीय—

अवधकिशोरदास

श्रीरामभक्तिके प्रबल प्रचारक--श्रीसम्प्रदाय के प्रधान आचार्य। पृ०८

अनन्त श्रीस्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराज
श्रीरामानन्द आश्रम, जनकपुर धाम
श्रीरामानन्द- स्वयंरामः प्रादुर्भूतो महीतले। (श्रीवैश्वानर संहिता)

श्रीरामानन्द आश्रम, जनकपुर धाम

वाञ्छितार्थं प्रदास्यामि भक्तानां राघवस्य तु ।
सर्वदा जागरूकोऽस्मि रामकार्य धुरन्धरः ॥ (श्रीरामरहस्योपनिष

❀ प्रेमी भक्तों से ❀

वात्सल्यरस सम्पूर्णां मदीयकुल देवताम् ।
रामभद्राङ्कमासीनां वन्दे जनकजामहम् ॥
सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरु परम्पराम् ॥

श्री मिथिलाजी की महिमा अपरम्पार है। श्रीराम भक्तरस लुब्ध मधुकरों का यह सर्वाधिक परम प्रियधाम है। श्रीजनकपुरकी वर्तमान झांकी का दर्शन कराने के बहाने इस अधम को भी श्रीधाम का अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग रहस्य समझने का यत्किञ्चित् अवसर मिल गया, प्रभु की इस महती कृपा की बार-बार बलिहारी है। शास्त्र कहते हैं—

राम पादाङ्कितां भूमिं राममन्त्र समन्विताम् ।
ये वदन्ति नरा ब्रह्मन् ! ते धन्याधन्यजीविनः ॥

बृहद्विष्णु पुराणे, मिथिला महात्म्ये अ० १०। ६

"श्रीसीताराम जी की चरण रजसे विभूषित श्री राम मन्त्र मंडित श्रीमिथिलाजी का जो प्रेम पूर्वक नाम उच्चारण करते हैं वे धन्य हैं।"

मिथिलेति त्रिवर्णीयंश्रुतितोपि गरीयसी ।

—बृहद्वि० मिथिला माहा० अ० १० ।२३)

मि-थि-ला ये तीन वर्ण वेदों से भी बढ़कर हैं क्योंकि वेद-पाठी विद्वान् विप्र तो त्रिगुणात्मक कर्मकाण्डके जटिल बंधनोंमें बँध जाते हैं परन्तु श्रीमिथिलाजी का प्रेमी भक्त तो माँ मैथिली की गोद में बैठकर विधि निषेध के द्वन्द्व से मुक्त हो जाता है। भक्ति सर्वश्रेष्ठ एवं दुर्लभ पदार्थ है। प्रभु भी याचकों को "मुक्ति ददाति कर्हिचिन्नतु भक्तियोगः" मोक्षपद दे देते हैं परन्तु अपनी भक्ति प्रायः नहीं देते। भक्ति के भण्डारी तो प्रभु के कृपापात्र भाग्य-भाजन महा भागवत ही हैं। वह परम दुर्लभ प्रभु-प्रेम-भक्ति श्रीमिथिलाजी की कृपा से अवश्य प्राप्त होती है।

त्रिवारं मिथिलायां यो परिक्रामति भक्तितः।
जानकी रघुनाथस्य प्रियो भवति नित्यशः।
मिथिला वासिनः सर्वे साक्षाद्राम स्वरूपिणः।
तेषां हि दर्शनेनैव जीवन्मुक्त तमो भवेत् ॥

—मिथिला महात्म्य १०। १२-१३।

तीन बार जो मिथिलाजी की परिक्रमा भक्ति पूर्वक कर-लेता है वह नित्य श्री सीताराम जी का प्रिय बन जाता है। मिथिला वासी सभी जीव श्रीराम स्वरूप हैं। उनके दर्शन से मनुष्य जीवन्मुक्त बन जाता है। महात्मा श्री सूर किशोर जी ने कैसा सुन्दर उपदेश दिया है—

"उद्योतन प्रेम की सूर किशोर',
उपासक सन्तन की भुवि पेखी।
का बहुकाल जिये जग में,
धिक् जीवन जो मिथिला नहिं देखी ॥"

वे धन्य हैं जो इस धाम के दर्शन करते हैं, और वे परम धन्य हैं जो श्रीधाम निवासी बनकर इसकी अन्तरङ्ग झाँकी अपने मनोमन्दिर में करते हुए प्रभु के परम कृपा--भाजन बनते हैं। परन्तु कलिमल ग्रसित पामर जीवों का इतना सुन्दर भाग्य कहां ? पास में रहने वाले भी जब माया के परदे में छिपे उस आराध्य की ओर देखना भूल जाते हैं तब दूसरों की तो बात ही क्या करना ? फिर भी दया-निधान सन्तों को संसार की यह स्थिति भली नहीं लगती। वे इसको सुधारने की चेष्टायें सदाकाल से करते आये और करते हैं। अपने आचरण-उपदेश और ग्रन्थों द्वारा लोगों का वाह्य वैभव से पिंड छुड़ाकर अन्तरलोक की नित्य लीलायें दिखलाना चाहते हैं। इसीलिये भगवान् शंकर कहते हैं—

देशान्तर्गतो वाऽपि नमेद्यो मिथिलामिमाम् ।
पापानि तस्य नश्यन्ति तमः सूर्योदये यथा ॥

—रुद्रयामलोक्त मिथिला महात्म्य' ६। ३६।

"देशान्तर में रहने वाला भी यदि मंगल मूर्ति श्रीमिथिला जी का ध्यान धर कर प्रेम से प्रणाम करता है तो उसके सभी पाप वैसे ही नष्ट हो जाते हैं जैसे सूर्योदय के प्रभाव से अन्धकार।" जिस भूमि का इतना महत्व है उसके दर्शनों के लिये कौन आतुर न होगा। प्रभु के निजधाम का रहस्य तभी जाना जा सकता है जब हृदय में बैठकर श्यामसुन्दर दरसावे। इसी लिये कई युग बीत जाने पर भी माधुर्य महोदधि प्रभु श्री-सीतारामजी की नित्य लीलास्थली मिथिला जी के दर्शनों के

लिये प्रतिवर्ष प्रत्येक पर्व पर लाखों यात्री लालायित होकर आते हैं और इसकी पुण्यतमरज में लोटते हैं, साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करते हुए पचासों मील से लोग "बोल, बोल दे जानकी माई की जय" पुकारते हुए श्रीराम के दर्शन करते हैं और लीलाधर की ललित झांकी निहारने के लिये कई सन्त एकान्त अमराई-टीला-पर्ण कुटी-अथवा खेतों और मैदान में 'सीताराम--सीताराम' नाम रटते हुए प्रेम विह्वल रुदन करने लगते हैं। सैकड़ों संकीर्तन मण्डलियाँ भगवन्नाम की तुमुल ध्वनि से आकाश भर देती हैं और अनेकों अपना जीवन प्रभु के पदारविन्दों पर न्योछावर करके कृतार्थ हो जाते हैं।

परन्तु संसार के सभी जीव इस परम लाभ को प्राप्त नहीं कर सकते। अधिक मनुष्य तो दर्शन करके आये हुए भक्तों के मुख से यात्रा वर्णन सुनकर ही तृप्त होते हैं, शास्त्र भी कहते हैं—

मिथिला दर्शिता येन यद्वा यो गन्तुमिच्छति।
तस्य दर्शन मात्रेण पापी पापाद्विमुच्यते ॥

—बृहद्विष्णु० मि० मा० १२-८।

"मिथिला जी के जिसने दर्शन कर लिये हैं अथवा जो दर्शन करने जाता है, उसके दर्शन करने से भी पापी पाप से छूट जाता है। मिथिला जी के दर्शनार्थ जानेकी जब मनुष्य इच्छा करता है तभी उसके पितर प्रसन्न होकर आशीर्वाद देने लगते हैं।" उसी श्रीधाम के दर्शनार्थ पुण्य-वृत्ति जाग्रत हो एतदर्थ यह निबंध पाठकों की सेवा में समर्पित किया जा रहा

है। प्रेमी भक्त जो जनकपुर धाम के दर्शनार्थ आते हैं उन्हें भी यहाँ पण्डे और तीर्थ पुरोहितों का नितान्त अभाव होने से श्रीमिथिला जी के दर्शनीय तीर्थों का परिचय प्रायः इस पुस्तक से भली-भाँति हो सकता है। संयोगवश जो यहां तक नहीं आ सकते हैं वे भी घर बैठे श्रीमिथिला धाम का मनोहर वर्णन पढ़-सुनकर परमानन्द प्राप्त कर सकते हैं और जो दर्शन कर चुके हैं उन्हें भी इसके द्वारा दर्शन किये हुए लीलाओं का पुनीत अनुभव अत्यन्त सरलता से पुनः पुनः हो सकता है।

यह धाम नैपाल--राज्य में है और इसके अधिकांश दर्शनीय तीर्थ भी नैपाल राज्य की सीमा के अन्तर्गत है। इसलिये सड़क और सवारी साधनों का प्रायः अभाव सा ही रहता है। पुराने समय के पुनीत तीर्थों की भाँति ही इसकी यात्रा करनी पड़ती है। (अब जनकपुर धाम तक नैपाल की रेल हो गई है जो भारत के जयनगर स्टेशन से यहां आती है। तथा सीतामढ़ी से आने वालों को भिट्ठामोड से राजमार्ग द्वारा (हाइवेरोड) मोटर से आने की सुलभता होगई है इससे यात्रियों को आने जाने में सुभीता है। जहां तक हो सका है स्वयं घूम फिर कर सब तीर्थों का परिचय प्राप्त करके इसमें विवरण दिया गया है। आशा है प्रेमी भक्त इससे लाभ उठाकर मेरा श्रम सफल करेंगे और मानव स्वभाव जनित जो त्रुटियां रह गयी हैं उन्हें कृपा कर सूचित करेंगे तो अगले संस्करण में सुधार कर दिया जायगा।

लोक कल्याण निरत जिन रसिक सन्तों के आग्रह से

यह झांकी लिखी गयी है उनका मैं बारम्बार उपकार स्मरण करता हूँ और साथ ही मेरे अभिन्न मित्र श्रीसाकेत धाम निवासी महात्मा श्री जनक-दुलारी शरण जी को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इसको सुन्दर रूप में प्रकाशित करने के लिये पूर्ण आग्रह किया अन्त में अनन्त ब्रह्माण्ड नायक परम रस विग्रह रघुनाथ जी की प्राण प्रिया श्रीकिशोरी के चरण में बारम्बार प्रार्थना है कि वे इसके पाठकों के हृदय में पुनीत प्रेम का उदय कर अपनी करुणामयी गोद में बैठाने की दया कर कृतार्थ बनावें।

श्री रामानन्दाश्रम	सन्तपद रेणु—
जनकपुर धाम (तिरहुत)	अवधकिशोरदास
श्रीरामानन्द जयन्ती, सं० २००४	"श्रीवैष्णव" प्रेमनिधि।

जय जय श्रीमिथिले महारानी।
जय जय प्रेम भक्ति-रस दानी॥
कृपा करहु मिथिलेश सुनैना।
युगल रूप निरखौं भरि नैना॥
दुलहा राम सिया दुलहिन की।
जय रसिकन के जीवन धन की॥
जय श्रीजानकी वल्लभ प्यारे।
यहि सुमिरण यहि ध्यान हमारे॥
सीताराम चरण रति मोरे।
अनुदिन बढ़े अनुग्रह तोरे॥

❀ श्री मिथिला जी के द्वादस नाम ❀

मिथिला१ तैरभुक्तिश्च२ विदेह निमिकाननम्३ ।
ज्ञानक्षेत्रं४ कृपापीठं५ स्वर्णलाङ्गल पद्धतिः३ ॥ २२ ॥
जानकीजन्मभूमिश्च७--निरपेक्षा८-विकल्मषा६ ।
रामानन्दकरी१०-विश्वभावनी११-नित्यमङ्गला१२ ॥१३
इति द्वादस नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।
स प्राप्नुयाद्रघुश्रेष्ठं भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ २४ ॥

—बृहद्विष्णु पुराणोक्त मिथिला माहात्म्ये २ अध्याय

मिथिला—१ तिरहुति—२ विदेह निमि कानन—३ ज्ञानक्षेत्र —४ कृपापीठ—५ स्वर्णलाङ्गल पद्धति—६ जानकीजन्मभूमि —७ निरपेक्षा—८ विकल्मषा—६ रामानन्दकरी—१०--विश्व-भाविनी--११ और नित्यमङ्गला—१२ ये श्री मिथिलाजी के बारह नाम जो नित्य प्रेमपूर्वक पढ़ता या सुनता है वह भोग, मोक्ष और श्रीरघुनाथ जी को प्राप्त कर लेता है ।

❀ श्री मिथिला जी की प्रार्थना ❀

ब्रह्मादयः सुरगणा स्तुवन्ति वेद वाक्यतः ।
नित्यस्थले नित्यलीले नित्यधाम्नि नमोस्तुते ॥१६॥
धन्यं त्वं मिथिले देवि ! ज्ञानदा मुक्ति दायिनी ।
रामस्वरूपे वैदेही सीताजन्म---प्रदायिनी ॥ १७ ॥
पापविध्वंशके मातर्भवबन्ध---विमोचिनी ।
यज्ञ-दान तपो ध्यान स्वाध्याय फलदे शुभे ॥ १८ ॥

कामिनी कामदे तुभ्यं नमस्यामो वयं सदा ।
इत्यादि स्तुतिभिर्नित्यं स्तुवन्ति निवसन्ति च ॥ १६ ॥

—वृहद्विष्णु पुराणोक्त मिथिला माहात्म्ये, १० अध्याय

ब्रह्मादिक देवता वेद वाक्यों से प्रार्थना करते हैं कि (हे नित्य लीलाभूमि नित्यधाम श्री मिथिला जी आप ज्ञान और मोक्ष देने वाली है अतएव धन्य हैं। आप रामस्वरूप हैं विदेह पुरी हैं। श्री जानकी जी को जन्म देने वाली हैं। पाप नाश करने वाली और भव बन्धन छुड़ाने वाली हैं। यज्ञ-दान-तप-ध्यान-स्वाध्यायादि शुभकर्मों का फल देने वाली और सकामुकों की कामना पूर्ति करने वाली हैं। हम सब आपको बारम्बार सदा सप्रेम प्रणाम करते हैं।) इत्यादि स्तुति करके देव लोग इस पुरी में बसते हैं। श्री मिथिला निवासियों को भी नित्य प्रार्थना करनी चाहिये।

श्री मिथिला वासियों के प्राणधन—

* श्रीदुलहा भगवान् की झांकी *

श्रीरामानन्द-आश्रम-जनकपुर धाम

हमरे मिथिला देश में, धार्यो दूलह वेष।
याते यही उपासना, चाहिय हमें हमेंश॥

दुलहा राम सिया दुलहिन की। जय रसिकन के जीवन धन की॥
जय श्री जानकी वल्लभ प्यारे। यहि सुमिरण यहि ध्यान हमारे॥

❀ श्री मिथिला विहारिण्यै नमः ❀

❀ श्री रामानन्दाचार्यो-विजयते ❀

श्री जनकपुर की झाँकी

नित्यां निरञ्जनां शुद्धां रामाऽभिन्नां महेश्वरीम् ।
मातरं मैथिलीं वन्दे गुणग्रामां रमा रमाम् ॥ १ ॥
प्रपन्नानां गतिं त्वेकां जन सन्तारणोत्सुकाम् ।
वात्सल्य रस पूर्णाङ्गीं रामकान्तां सदा भजे ॥ २ ॥
साम्राज्यमर्पयति भक्ति लवेप्युदग्रं—
प्रेम्णि प्रदर्शयति पाद सरोज शोभाम् ।
विघ्नान्निवारयति या भजतां समन्तात्—
सा जानकी विजयते कुल दैवतं नः ॥ ३ ॥

❀ श्रीमिथिला-महिमा ❀

श्रीमिथिलाजी मधुर रसोपासक श्रीरामभक्तों का निज धाम है। परब्रह्म की सुन्दरतम मनोभिराम अभिव्यक्ति का आनन्द मिथिला निवासियों ने लूटा है। भक्त प्रेमाधीन प्रभु जब पर वैकुण्ठ साकेत धामसे धरातल पर नरवपु धारण कर अवतीर्ण हुए तब प्रभु का निजलोक भी श्री मिथिला भूमि में आकर विराजमान हुआ। कहा भी है=

आगते तु जगन्नाथे साकेताज्जगतीतले ।
वैकुण्ठस्तु निजांशेन मिथिलाभूमिमाविशत् ॥

—रुद्रयामलोक्त, मिथिला माहात्म्य, ३।३०

तथैव मैथिलास्सर्वे महामङ्गल विग्रहाः ।
नित्यभूता सदाशुद्धाः पुनरावृत्ति वर्जिताः ॥ १४ ॥
वृहद्विष्णुपुराणोक्त मिथिला माहात्म्य

यही कारण है कि श्रीरामविवाहोत्सव के अवसर पर 'विधिहिं भयेउ आश्चर्य विशेषी। निज करणी कछु कतहुँ न देखी' कहना पड़ा है। वैदिक क्रिया कलाप जो केवल त्रिगुणात्मक अतएव कर्म जाल में जकड़ने वाला है उसका प्रचुर प्रचार भारत में सर्वत्र हुआ परन्तु भवभीतिभञ्जक ब्रह्मतत्त्वका यथार्थ रहस्य जो आर्य संस्कृति की सर्वश्रेष्ठ विभूति एवं वेद वेदान्त का तात्पर्यार्थ माना जाता है, मिथिला का ही मुख्य धन है। वेदों में शतपथ ब्राह्मण (१४-५-१) कौषीतकी उपनिषद (४।१) वृहदारण्यक (३।१।१) और तैत्तरीय में (३-१०-६६) आदि प्रसंगों पर महाराज विदेह की कथा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सुन्दरी तंत्र-भविष्य पुराण-श्रीमद्भागवत और रामायणादि आर्यग्रन्थों में भी श्रीधाम की महिमा भली भांति वर्णित है। वृहद्विष्णु पुराण के २२ अध्याय और रुद्रयामल ६ पटल के ६ अध्याय श्रीमिथिला यशगानके स्वतंत्र रूपसे उपलब्ध होते हैं। श्री मिथिला निवासी सभी विशुद्ध तत्त्व के ज्ञाता एवं भगवत्प्रिय बन जाते हैं। पूर्वकाल में तो एक पिंगला ही ऐसी थी जो विषयवश अपना जीवन नष्ट कर रही थी अन्त में उसको भी वैराग्य श्री मिथिलावास के प्रभाव से पैदा हुआ और बोल उठी—

"विदेहानां पुरे ह्यस्मिन्नहमेव विमूढधीः ।
यान्यमिच्छन्त्यसत्यस्मादात्मदात् काममच्युतात् ॥"
—भागवत-११-८-३४

"विदेहों के नगर में मैं ही एक ऐसी विमूढ़ मति हूं जो भगवच्चरणारविन्दों का परित्याग कर काममोहित असत्पदार्थों की ओर लालसा भरी दृष्टि से देखा करती हूं। अब मैं भी आत्मा में अन्तर्यामी स्वरूपसे विराजमान उसी परम प्रियतम प्रभु के हाथ बिककर अपना कल्याण साधन करूँगी।" राजा लोग रजोगुण के ऐश्वर्यपूर्ण साधनों के साथ रहने के कारण बड़े विषयासक्त बन जाते हैं। परन्तु यहाँ तो उलटी ही बात है—

"प्रणवौं परिजन सहित बिदेहू। जिनहिं रामपद गूढ़ सनेहू।
योग भोग महँ राखेउ गोई। रामबिलोकत प्रगटेउ सोई॥"

जबकि दूसरे लोग "वंचक भक्त कहाई रामके। किंकर कंचन कोह काम के" बन रहे हैं। इसमें भी एक कारण है--मिथिला नरेश योगेश्वरों के सत्सङ्ग का दुर्लभ लाभ जो सदा प्राप्त करते रहते हैं।

एते वै मैथिला राजन्नात्मविद्याविशारदाः।
योगेश्वर प्रसादेन द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि॥
(भागवत--६-१३-२७)

"हे राजन्! ये सब मैथिल राजा आत्मविद्या में परम विशारद हुए और योगेश्वरों की कृपा से घर में रहते हुए भी द्वन्द्वों से मुक्त हो गये।" जिस भूमि में भौतिक ऐश्वर्य और पारमार्थिक रहस्य दोनों पूरिपूर्ण हुए उस भूमि का महत्व वेद से लेकर आज तक के सन्त अविकल रूप से वर्णन करते आये हैं, मैं श्रीधाम के प्रति श्रद्धापुष्टि और प्रेम पूर्ति के लिये महात्माओं की वाणी का कुछ प्रसाद यहाँ परोस रहा हूं—

हमसब सकल सुकृतकी राशी । भये जगजनमि जनकपुरवासी
जिन जानकी राम छबि देखी । को सुकृति हम सरिस विशेखी
---श्रीरामचरितमानस

मिथिला महिमा अवधि है, मिथिला मङ्गलरूप ।
एक बार मिथिला गये, नर न परे भवकूप ॥
—प्रेमनिधि

मिथिला महिमा की कथा, कहै कवन मतिमान ।
भूरि मेरु सम लागही, गोपद सिंधु समान ॥
देव सरी मिथिला कथा, पावन परम विचित्र ।
अवगाहत अलि उद्धरत, भक्त भगीरथ पित्र ॥
कल्पलता मिथिला कथा, अमल अनूपम आलि ।
अविरल भक्ति प्रदायिनी, सिय रघुबर रस शालि ॥
जनकपुरी मिथिला कहत, बिधि हरि होयँ पवित्र ।
सो मैं वरणौं कवन विधि, महिमा परम विचित्र ॥
---श्री मिथिला भाव भूषण

मिथिला बिनु नाते नहिं दरसै ।
पढ़े गुने समुझै समझावें, पोथा लादे खर से ॥
लसति अनादि थली मणिभूमी, मुक्ति फिरै घर-घर से ।
विहरत सदा रसिक रघुनन्दन, लली चरण रज परसे ॥
यही जानि सुख मानि वसी सब, कंचन वन रस अरसे ।
शची-शारदा--मातु भवानी, कमला सेवन करसे ॥

जे रूखे रस कथा पगे नहिं, मोह निशा प्रिय चरसे ।
लहे न रसिकराज गुरु संगति भव-नदी बहै ग्रह गरसे ॥

---श्री युगल प्रियाजी

श्री काष्ट जिह्वा देव स्वामी जी बड़े धुरन्धर विद्वान् और अनन्य श्रीरामोपासक हो गये हैं, इन्होंने 'श्री मिथिला-बिन्दु' और 'श्रीजानकी-बिन्दु' दो स्वतन्त्र ग्रन्थ श्रीमिथिला रहस्य समझाने के लिये रचे हैं उसमें से दो एक पद्य नीचे दिये जाते हैं, देखिए तो कितनी अगाध श्रद्धा के ये उद्गार हैं---

श्रुतिको सार मथित सोई मिथिला, प्रगट भई तेहि वसुधनमें ।
सोई मैथिली झलक रहीं हैं, योगि जनन के ध्यानन में ॥
जीवन्मुक्त विदेह दशा से, जो बिहरत गंभीर बन में ।
तिनको परम तत्व वैदेही, जनि भूलहुँ बकवादन में ॥३॥

\+ + +

सिद्ध पीठ यह मिथिला रही पै अलख रही ।
अब भई सोई उजागर जानेसि लखक सही ॥
मिथिला की महिमा पर शिव जी की मोहर है ।
जो साधारण जानहिं सो नर छोहर है ॥

\+ + +

तिन सन्तन की बलिहारी जे सिया जू के नगर वसत ।
छोटी कुटिन में सिया राम की, जोरी रुचिर पधारी ।
रात दिवस परिचरत प्रेम से बारहिं बार निहारी ॥
सरल सुशील भाव के भूखे, धरम नेम व्रत धारी ।
नाचत गावत परम हरष से, बैठि बजावत तारी ॥

कोऊ पखारत कोऊ सिंगारत, कोऊ चँवर कर ढारी ।
कोऊ गावत अरथ बतावत, ललित कथा विस्तारी ॥
चरण शरण सब बिधि से जिनके, भइ अन्दर उजियारी।
आन 'देव' इनके आंगन में देखत धरम विचारी ॥
जे सिया जू की नगर वसत ॥ ८६ ॥

+ + +

सिया जू के पायन की सुधा तनिक चिखले ।
यह जो न जानै तो मेदिन से सिखले ॥ १११ ॥

+ + +

मेरो कहां अस भाग द्वारे पर्यौ रहौ ।
सन्तन को कछु जूठन काढन; मिलै अलोनो साग ।
केहि गनती में इन्द्र बापुरो, जस कूकर औ काग ॥
तीनि काल सिया जू की झांकी, देखी परिहिं बेदाग ।
जुग-जुग से सोवत यह जियरा, देखौं कैसे न जाग ॥
सन्त चरण रज तनको भूषण, सोई अचल सोहाग ।
रतन मणिन के बरहौ भूषण, मल सम करिहौं त्याग ॥
सदा वसन्त दिवारी जग मग, मची रहे नित फाग ।
सिया राम की जोरी के आगे, है अनन्द की बाग ॥१३॥

❀ ❀ ❀ ❀

मिथिला को न पावत सात सरग ।
बीज मंत्र या थल प्रताप से, जपतहिं महँकत जैसे अरग।
रुद्र-देव-विधि से प्रति पालत, जिनको चमकत दान खडग ॥

❀ ❀ ❀ ❀

जेहिं कारण जप--तप को साधत, घर तजि मूँड मुँडावत।
याको देखन सोई देवता, अनायास उर आवत॥

❀ ❀ ❀ ❀

श्री मिथिला जी का अपर नाम श्रीधाम है और इसके मुख्य बन 'कञ्चनबन' को 'श्रीवन' भी कहते हैं। श्रीधाम में बसने के लिये श्रीयुगलानन्यशरण जी महाराज "उज्वल उत्कण्ठा विलास" में कैसा सुन्दर भाव दिखा रहे हैं—

मन--बच--वपु श्रीधाम मधि, कब वसिहौं सुख--संग।
देखत दृग दुति दिव्य महि, मोदमयी रस रङ्ग॥२॥
श्री विमला वैभव विमल, वरणत वदन सप्रेम।
अचल निवास सजाइहौं, सन्तत सजि निज नेम॥३॥
धाम सनेहिन साथ मम, कब बढ़िहैं अनुराग।
अधिक अमानी होय हिय, सुनिहौं सरस सुवाग॥१७॥
अपर कुदेशन में भ्रमत, श्रमत सुधाम विहाय।
तिन सन नेह निवारिहौं, समुझि बिवर धन हाय॥१८॥
मान प्रनिष्ठा धूरिसम, रिधि सिधि धूर समान।
अनत बड़ाई विष निरखि, वसिहौं धाम प्रधान॥१६॥
—"श्रीधामोत्कण्ठा"

मिथिला अवध निवास करि, शाक पात जे खात।
तिनके भाग्य समूह लखि, ब्रह्मादिक ललचात॥

❀ ❀ ❀ ❀

सच्चिद आनन्द धाम जनकपुर।
जेहि ध्यावत विधि हरि हर सब सुर॥
—श्रीसीतायन।

कह 'सूरकिशोर' विचार यही, हिम आतप औ वर्षा सहिये।
चुरवौ चबिकै फुलवौ भखिके, मिथिला महँ बाँधि कुटी रहिये।

❀ ❀ ❀ ❀

वर्णाश्रम धर्म विचार गये, द्विज तीरथ देव भये शिथिला।
रहि और न ठौर कहूं जगमें, तब 'सूरकिशोर' तकी मिथिला।

❀ ❀ ❀ ❀

नित्य यह धाम मिथिला है। ग्रथित गोलोक शिथिला है॥

=श्रीमिथिला-विलास।

– जनकपुरी जय--जय श्री मिथिला।
दरश-परस जेहि-नाम हूँ सुमिरन, होत पाप सब शिथिला।
सुख कारण निशि वासर ध्यावत, करत जतन बहु कितला।
श्रीमिथिला वसि सिया राम भजु, 'प्रीतिलता' नित चितला॥

=श्रीजानकीवरशरणजी महाराज

देश विशेष अनूप पूर्व उत्तर दिशि तिरहुति।
रसा ऊर्वरा भूमि सकल सम्पति बस बूती॥
भूमि भाल जिय जानु तिलक रचना मिथिला है।
वर्णत महिमा जासु शेष शारद शिथिला है॥

----श्री रसिक अली जी,

इत्यादि सहस्रों सन्तों ने श्री मिथिला यश गाकर जीवन सफल बनाया है। मैंने भी "मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहिं मग चलत सुगम मोहिं भाई॥" मान कर उनकी अमर वाणी द्वारा ही वर्णन करना सरल और श्रेष्ठ समझकर ये वचन उद्धृत किये हैं। जिनके ग्रंथ रत्न भी प्रायः प्रकाश पथ में

नहीं आने से पाठकों को एकत्र कुछ वचनों का संग्रह भी सुलभ होगा। अस्तु, आइये अब श्रीजनकपुर का दर्शन करें, इसके पहले एक बात और भी सुन लीजिये—

❀ श्रीअवध और मिथिला ❀

सन्त और शास्त्रकारों ने श्रीसीता और श्रीराम दोनों प्रभु को अभिन्न माना है। श्रीमुख वचन भी है-"अनन्या राघवेणाऽहं भास्करेण यथा प्रभा" (श्रीवाल्मीकि रामायण) गोस्वामी जी भी "गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न। बन्दौ सीता राम पद जिनहिं परम प्रिय खिन्न।" कह कर इस बात को स्वीकार करते हैं। उसी प्रकार युगल प्रभु का धाम भी एक समान माना गया है। शास्त्र में "मिथिला सर्वतः पुण्या यथाऽयोध्या तथा हि सा" कहा गया है। भक्त-सन्त और रसिक महात्माओं का भी यही उपदेश है—

"बहुत मोहि सन्तन कह्यो बुझाय।
मिथिला परसि अवध कूं परस्यो, दूनो तार मिलाय।
एक परसि दूजो बिनु परसे, खंडित भाव दिखाय॥"

+ × +

मिथिला अवध है एक समान। याको करिये ध्यान॥
ब्रह्मपुरी श्रुति इनको बोलत, तैसोई कहत पुराण।
दोनों ब्रह्मपुरी में काको, करिये लघु गुरु ज्ञान॥
एकै ज्योति दोउन में झलकत, ज्यों आंखिन में भान।
दोउ ब्रह्म कहुँ को मानेगो, माने से नुकशान॥
सिया राम से बना ब्रह्म पद, लड़त तहाँ अज्ञान।
यह रहस्य सन्तन ही के घर, का जनि हैं रुखड़ान॥

और पुरी नहिं ब्रह्मपुरी कही, मुनिहुं मन गौरान।
कवन 'देव' को मैं गोहरावौं, चुप रहनो मन मान॥
—श्रीकाष्ठ जिह्वा देव स्वामी,

यही भावना प्रधान है, परन्तु 'को बड़ छोट कहत अपराधू' मानते हुए भी श्रीगोस्वामीजी 'ब्रह्म रामते नाम बड़ वरदायक वर-दानि' कहकर ही सन्तुष्ट हुए हैं, भले संसार में प्रभु के धाम अनेकों हैं, सर्वत्र वह लीलावपुधारी नाना नाम रूप से रमण कर रहा है, फिर भी जितनी गाढ़ आत्मीयता यहाँ के उपासकों में दृष्टि-गोचर होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है, जहाँ उस सचराचर स्वामी रूप राशि भगवन्त को प्रार्थना-स्तुति और विनय सुनायी जाती है और इस प्रकार उन्हें रिझाने का प्रयास किया जाता है, वहाँ इस धाम के भावुक भक्त ससुराल के नाते ललकार कर गालियाँ देते हुए उन्हें हँसाते हैं। श्रीरघुकुल कमल दिवाकर भी उस गाली को सुनकर बड़े प्रसन्न होते हैं, इसीलिये तो 'समय सुहावनि गारि' सुनाकर बरातियों को प्रसन्न किये गये थे। आज भी यहाँ यदि कोई अवधवासी बनकर आवे तो उसे मिथिला की मीठी गालियाँ सुनने का सौभाग्य अवश्य प्राप्त होगा। 'श्रीराम कलेवा' के समय यह रहस्य देखने लायक होता है, क्योंकि यहाँ की भावना ही है "विनु गारी ज्योंनारी कैसी? पुरुषोत्तम को गारी कैसी?" कोई-कोई प्रेमी तो—'तिल भर गारी न दैछी, सुनु कथा कहै छी' कह-कह कर श्रीरघुवंश के राजाओं की ऐसी-ऐसी कथायें सुनाते हैं जिन्हें सुनकर अवधवासी लजा से जाते हैं। विवाहोत्सव पर लौकिक रीति-रिवाजों के अनुसार कच्चे धागे में बाँधकर उस जगदाधार से भी धान कुटवाते हैं और अनेकों

मधुर लीलायें करते हैं। जो देख सुनकर प्रेमियों को बड़ा आनन्द होता है। अनन्तकल्याण गुण गुणार्णव प्रभु को भी यह सब अत्यन्त प्रिय लगता है तभी तो—"समय सुहावनि गारि विराजा। हँसहिं राऊ सुनि सहित समाजा" कहा गया है। यहाँ के भक्त प्रभु से यही कहा करते हैं कि—

अहां छाँड़ि ससुरार कहाँ जैहो सरकार,
प्रभु रहिं जइयो मिथिला नगरिया में ॥
अगहन चुरवा कुटायब, गारी दे-दे के पवायब
सुख बरसत जनक डगरिया में ॥ "आदि

श्रीअवध में प्रभु मर्यादा पुरुषोत्तम अपनी पूर्ण मर्यादा लेकर विराजे हैं, परन्तु यहां ऐश्वर्य और माधुर्य-लीला एवं लोकमर्यादा दोनों का ऐसा विलक्षण तत्व संमिश्रण हुआ है जो अनिवर्चनीय आनन्द देता है। महाराजा विदेह तत्त्वदर्शियों के सम्राट् थे, उन्होंने ब्रह्मके जिस स्वरूप का आराधनकर जिस भावना के बलसे प्रभुको यहाँ आकर्षित किये हैं, वही उपासना मिथिलाका हृदय सर्वस्व है। श्री-मिथिला माहात्म्य के अनुसार प्रभु जब बरात के साथ विदा होने लगे उस समय श्रीकिशोरीजी के वियोग में महाराज जनक मृतक से होगये थे, तब प्रेमार्णव श्रीराजीवलोचनजू ने उन्हें सान्त्वना प्रदान करने के लिये निजरूप से यहां रहना स्वीकार कर लिया और द्वितीय लीला विग्रह अवध तथा वनलीलाओं का आधार बना। तभी तो रसिक सन्त जन कहते हैं—

"राम नहिं तजत कबहुँ ससुरारी।
सासु ससुर कर भाव अनूपम, अनुपम सरहज गारी।

वेदन के मन्त्रहुँ ते लागत, अधिक राम को प्यारी ॥"
श्रीमिथिलेश सुनयनाजू के, प्रेमहिं सकत न टारी।
'प्रेमलता' तेहिं लागि बसत पिय, मिथिला सिय उरधारी ॥"
—श्रीप्रेमलताजी,

यहाँ के उपासकों का एकमात्र आश्रय अनन्त ब्रह्माण्डेश्वरी श्रीमिथिलेशराजदुलारीजी की अनुकम्पा ही है। श्रीरामप्रियाजू की कृपा से राजराजेश्वर रघुनन्दन जू तो स्वयं प्राप्त हो जाते हैं, फिर लोक मर्यादा में भी लड़कीं वाले लड़की के घर की कुछ भी सहायता लेना अपने गौरव के प्रतिकूल और अधर्म मानते हैं। महात्मा सूरकिशोर जी ने इसीलिए कहा है—

"मिथिला वसि राम सहाय चहैं, तो उपासक कौन कहे भलकी।
जिनके कुल पून सपूत नहीं, तिन्ह आश दमादन के बलकी॥

मिथिला निवासी तो श्रीकिशोरीजी की ही कृपा मनाते रहते हैं और गाते हैं कि—

"जो मेरो अवगुण उर धारो।
तो मिथिलेश नन्दिनि स्वामिनि, कलप कोटि लगि नाहिं उबारो॥
जो ब्रह्माण्ड अखिल को नायक, नेति-नेति कहि निगम पुकारो।
तव वश रहत सदा सोऊरघुवर, रसिक शिरोमणि छवि मतवारो॥"

यथार्थ में पिता से माता का गौरव शतगुना माना गया है, प्रभु भी जब भक्त पर अत्यन्त करुणार्द्र होते हैं तब "करौं सदा तिनकी रखवारी। जिमि बालकहिं राखमहतारी" कहते हैं। दया का पूर्ण विकास मातृ हृदय में ही माना गया है, मातृभाव दिखाते

हुए आचार्यों ने श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में जगज्जननी और जगत्पिता श्रीरघुनन्दनजी के श्रीमुख अभयवरद वाक्यों का विचार करते समय श्रीकिशोरीजी को अत्यन्त दयापूर्ण मानते हुए अपनी कृपा के सामने प्रभु की गोष्ठी का वैभव तुच्छ कर देने वाली' कहा है। प्रभु तो जीवों से अपराधों की माफी माँगते हुए 'तवास्मि' याचना करवाकर तब कहीं अपनाना चाहते हैं परन्तु श्री श्रीजू ने तो—

पापानां वाऽशुभानां वा वधार्हाणां प्लवङ्गम ।
कार्यं कारुण्यमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति ।।'
—युद्ध काण्डे

"पापी हों, अधम हों, मार डालने लायक अपराधी हों उन सभी जीवों पर श्रेष्ठ पुरुषों को करुणा ही करनी चाहिये क्योंकि कोई किसी का अपराध नहीं करता, सब अपना कर्मफल भोगते हैं" कह-कर पूर्ण दया का भण्डार ही खोल दिया है। वास्तव में माँ बच्चे का अपराध देखने लगे तब तो दयाधर्म का दिवाला ही निकल जायगा। प्रभु की करुणा दया, अनुकम्पा और कृपा की साक्षात् मङ्गलमयी मूर्ति ही माँ मैथिली जू हैं। पूर्वाचार्यों का उपदेश है कि 'जीव शरण में आना चाहता है उस समय श्रीसद्गुरु भगवान श्री-किशोरी के चरणों में उसे अर्पण कर देते हैं, तब प्रभु उसी के गुणा-वगुणों की विवेचना करते हुए योग्य समझकर स्वीकार करना चाहते हैं। परन्तु कृपासागरी श्री श्रीजू प्रभु से कहती हैं कि "नाथ! पहले इसको स्वीकार कर लिया जाय तब गुणावगुणों से यह स्वयं पार हो जायगा।" कितनी उदारता है आपके अन्तःकरण में ? उस वात्सल्य रसपूर्ण माँ की गोद में बैठने का और उसके पावन चरणों की रज में लोटने को किसका मन नहीं होता होगा ?

जिस प्रकार श्रीजू दया में सर्व प्रधान हैं वैसे ही उनका श्रीधाम भी अनाथ आश्रितों का सर्व श्रेष्ठ आधार है । अनेको रसनिष्ठ सन्तों ने श्रीधाम की दिव्य विभूती का रसास्वादन कर अनुभव के आनन्द श्रोत बहाते हुए अपना और अनन्य भावुकों का अपरिमित कल्याण किया है । रसमूर्ति श्रीयुगल प्रभु की मधुर झांकी निहार कर आज भी अनेकों जीव परम कृतार्थ होते हैं और सदा के लिये श्री मिथिला के भव्य भावुक रसका आश्रयण कर "रसो वै सः" रघुनन्दन की दिव्य माधुरी पर मुग्ध हो जाते हैं, परब्रह्म के दूलह वेषका मंजुल ध्यान मानस पटलपर अंकित कर आत्मा का सच्चा सुख प्राप्त कर लेते हैं । 'ब्याह विभूषण सुन्दर साजे' प्रभु का दर्शन करते समय हो मिथिला निवासियों ने—

"हमरे मिथिला देश में, धार्यो दूलह वेष ।
याते यही उपासना, चाहिये हमें हमेश ॥

—मोदलता पदावली

निश्चय कर लिया है और उसका प्रवाह अभी तक अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित हो रहा है , मिथिला निवासियों के प्रभु सदा दूलह वेषमें ही विराजमान रहकर नाना प्रकार के भक्त सुखद विहार करते रहते हैं । उन्हें 'पंथ कथा खर आतप पवनू' सहने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती । अस्तु यह विषय बहुत गम्भीर है, जो केवल रसपूर्ण रसिक सन्तों के सत्सङ्ग द्वारा ही जाना जा सकता है । तात्पर्य यह है कि श्रीमिथिला की उपासना श्रीमिथिला धाम और श्रीमिथिलेश-दुलारीजू का वैभव कई अंशों में श्रीअवध के रहस्य से आगे बढ़ जाता है । सन्तों ने भी यही कहा है—

"सियाजू की सर करि सकत न राम।
याको न्याय करिहिं बेलागी, यहाँ न हठ को काम॥
जनक देवैया राम लेवैया, काको ऊँचो धाम।
जगमें प्रथम सिया कहि पाछे, परत राम को नाम॥
'श्री' पद ही से सब की शोभा, सो श्री सिया ललाम।
सीय चरित ही धरे राम पर, ऋषि की यही कलाम॥
केश सँवारन-पगधोवन में, को छवि बनत गुलाम।
'देव' रहस्य समुझि अस सुमिरत, सियको आठो याम॥

इत्यादि सन्तों के उपदेश मननीय हैं। शास्त्रों में भी—

अयोध्या--मथुरा--माया--काशी--काञ्ची--अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्ष दायकाः॥

ये सातों पुरी परम पवित्र और मोक्षप्रद मानी गयीं हैं। इन सातों पुरियों में तीर्थ स्वरूप प्रभु के अङ्गों की भी भावना की गयी है; यथा—

विष्णोः पादमवन्तिका गुणवतीं मध्ये च काञ्ची पुरीं—
नाभौ द्वारवतीं तथा च हृदये मायापुरीं पुण्यदाम्।
ग्रीवामूलमुदाहरन्ति मथुरां नासाग्र वाराणसी—
मेतद्ब्रह्म पदं वदन्ति मुनयोऽयोध्या पुरीं मस्तके॥

—पद्म पुराणान्तर्गत अयोध्या माहात्म्य॥

यह श्लोक बहुत प्रसिद्ध है। तीर्थ विग्रह प्रभु की मूर्ति में उज्जैन चरण; काञ्ची पुरी मध्य;-द्वारका नाभी, हरिद्वार हृदय, मथुरा ग्रीवामूल,-काशी नासिका, और अयोध्याजी मस्तक माना जाता है।

यह मुनियों का कथन है, परन्तु 'तिलकं विना मस्तमकम' शोभि
और माङ्गलिक नहीं माना जाता है, इसीलिये विना श्रीमिथिला
अवध की भावना सुखप्रद नहीं होती, क्योंकि—

भूमेस्तिलकमित्याहुः मिथिला तत्त्व वित्तमैः (लोमश संहिता

भूमि तिलक सम तिरहुति त्रिभुवन जानिय ॥

=श्री जानकी मंगल

भूमि भाल जिय जानु तिलक रचना मिथिला है।

—मिथिला--विलास

पृथ्व्यां सन्ति विमुक्तिदा अवयवा श्रेष्ठाअयोध्यादयः।
आत्मा भून्मिथिलेति सत्य कथनं कोप्यत्र नो संशयः॥

=श्रीरामायण-रसायनम्

पृथिवी में मोक्ष देने वाले श्रेष्ठ धाम श्री अयोध्यादिक अनेक
हैं परन्तु सबकी आत्मा श्री मिथिला जी ही हैं, इसमें कुछ भी संश
नहीं है, और भी एक सन्त ने कहा है---

जगमें तीरथ धाम बहु, अवध समान न एक।
मिथिला सरिस न अवध सो, जानहिं विमल विवेक॥
जानहिं विमल विवेक, यहां नहिं हठको कामा।
पर ब्रह्म श्रीराम, भये लखि चकित ललामा॥
सिय विभूति ऐश्वर्य; अकथ गुण महिमा अगमें।
'प्रेमलता' यह रहस, गुप्त अति प्रगट न जगमें॥

कहा गया है; दोनों एक समान होते हुए भी—युगल धाम-युगल
स्वरूप और युगल प्रभु की लीलाओं का परम प्रेम पूर्वक आराधन

क्रिया जाय तब तक पूर्ण रस-दर्शन दुर्लभ ही है। यदि हम उस मधुर रस की दिव्य अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं तो सर्वतोभावेन एक निष्ठ होकर युगल सरकार के चारु चरणारविन्दों का आश्रय लेना चाहिये।

यहाँ तक संक्षिप्त रूप में श्रीमिथिला जी के कुछ अन्तरङ्ग रहस्य का वर्णन किया गया है। आइये अब उस श्रीधाम की वर्तमान झाँकी झाँक कर परमानन्द प्राप्त करें—

मिथिला सी मिथिला सिय सी सिय, राम राम से कहते हैं।
समता जोग न अपर देवत्रय जिन्ह की पद रज चहते हैं॥

—श्रीसीताराम रहस्य दर्पण,

श्री मिथिला नाम का अर्थ

मकारो विश्वकर्ता च थकारस्स्थिति पालकः।
लकारो लयकर्ता वै त्रिमात्राशक्तयोऽभवन्॥ १६॥
तस्मात्त्रिवर्णकं नाम ब्रह्म विष्णु शिवात्मकम्।
प्रणवेन समं विद्धि सर्वाघौघ निवारणम्॥ २४॥

—मिथिला माहात्म्य, १० अध्याय

मैत्रेय मुनि से पराशर जी कहते हैं कि—मकार विश्वकर्ता विधाता का, थकार स्थिति पालक विष्णु भगवान का और लकार लयकर्ता महेश्वर का वाचक है और मि-थि-ला-तीनों वर्णों में जो तीन मात्रायें हैं वे उनकी शक्तियों का बोधक है। इस प्रकार त्रिदेवात्मक 'मिथिला' नाम वेद प्राण प्रणव के समान परमपावन एवं समस्त पापों का समूह नाश करने वाला है।

स्वप्नेऽपि 'मिथिला' नाम यदि कश्चित्समुच्चरेत् ।
सीता राम प्रियो भूयान्नरो जन्मनि जन्मनि ॥१४॥

—मिथिला माहात्म्य १२ अध्याय

'स्वप्न में भी 'मिथिला' नाम उच्चारण करने वाले को यह परम लाभ होता है कि वह जन्म जन्मान्तर में भी श्री-सीतारामजी का ही प्रिय भक्त बना रहता है।"

श्रीअगस्त्य जी ने मिथिला का अर्थ इस प्रकार किया है—

अन्तर्बहिश्च सर्वत्र मथ्यन्ते रिपवः सदा ।
'मिथिला' नाम सा ज्ञेया जनकैश्च कृता मही ॥

—अगस्त्य-रामायण ।

"भीतर और बाहर के शत्रुओं का जहाँ सर्वदा मद मथन किया जाता हो उसे 'मिथिला' नाम से जानी जाती है। श्री-जनकजी ने उसी पावन भूमिपर अपनी राजधानी बसाई है।"

मिलन करावे सिय रघुवर से, थिर मन प्रभु पदमें करती ।
लाभ परम प्रियप्रेम पदारथ, देती शुभ 'मिथिला' धरती ॥

—प्रेम निधि

जगत जलधि, तिरहुत कमल, जनक नगर मकरन्द ।
'प्रेमलता' सिय गंध शुचि, भ्रमर सु रघुकुल चन्द ॥

श्री मिथिला का विस्तार

पूर्व में कोशी नदी, दक्षिण में भागीरथी गंगा, पश्चिम में गण्डक नदी (जिसे नारायणी और शालिग्रामी भी कहते हैं) और उत्तर में हिमालय की विशाल वन श्रेणी है। इस प्रान्त

के मध्य की भूमि 'मिथिला' (तिरहुत) नाम से प्रसिद्ध है। आजकल इसको उत्तरी विहार, भी कहते हैं, पूर्व से पश्चिम कोशी किनारे से गण्डक पर्यन्त ९६ कोश अर्थात् १९२ मील लम्बा और हिमाचल की वन श्रेणी से भागीरथीगङ्गा पर्यन्त उत्तर से दक्षिण ६४ कोश अर्थात् १२८ मील चौड़ा यह पावन प्रदेश है। इस प्रान्त में कदली और रसाल वनों से सदा हरियाली छाई रहती है। अमरूद-अनार-कटहल (फणस) और लीची के भी बड़े-बड़े बगीचे होते है। स्वच्छ मीठे जल पूर्ण सरोवर और छोटी-छोटी नदी नालों की तो इधर कोई कमी ही नहीं है। साधुओं में कहावत है कि "तिरहुत मण्डल, हाथ कमण्डल" अर्थात् तिरहुत की यात्रा में डोरी साथ में न हो तो केवल जल पात्र से भी काम चल सकता है। समयानुसार कमल-कुमुद-बेला-मोगरा-जूही-चम्पा-हीना-गुलाब-केवड़ा और गेंदा आदि सुरभित सुमनावलियाँ शीतल-मन्द पवन के झकोरों में सुगन्ध सरसाती रहती हैं। भूमि तो परम मृदुल, मखमल के मानों पांवड़े बिछे हों वैसी सूक्ष्म अबीर गुलाल सी रज से सुशोभित पथिकों को बड़ा आराम देती है। घर इधर लोग बाँस और घास की पर्ण कुटियाँ जैसे मनोहर लिपे पोते, केला-नींबू-पुष्प-तुलसी आदि उपवन से अलंकृत परम रमणीय अलग-अलग बनाते हैं। धनवानों को पक्के मकानों का भी शौक है। परन्तु देखने में हरे-भरे कच्चे मकान ही सुघर लगते हैं। आराम भी इनमें अधिक है, दुःख केवल आग-पानीका है। सालों साल गाँव के गाँव स्वाहा हो जाया करते हैं

घास फूस को जलते कितनी देर ? जरा भी गफलत सब चौपट कर देती है। पोशाक इधर धोती साड़ी और अंगरखी या जामे का है। कोई-कोई पाग और दुपलिया टोपी भी पहनते हैं। नेपाली टोपी और गांधी टोपी का भी प्रचार है। रहन-सहन पोशाक सब सादा है, लोग भी प्रायः कम पढ़े-लिखे और सीधे सादे हैं, फिर भी धुरन्धर विद्वान् धनवान और ऐश आराम में चकनाचूर लोगों का भी सर्वथा अभाव तो नहीं ही है, कांटा कंकड़ का तो इधर नाम ही नहीं। भोजन दाल-भात दही तरकारी और चूड़ा दही का है। लोग दही तरकारी के अधिक आदी हैं। हवा पानी यहाँ सदा सब ऋतुमें सब को अनुकूल रहता है। आम के महीने और अगहन मास विशेष आनन्दप्रद हैं। कहावत प्रसिद्ध है कि—"मिथिला के दही चूड़ा कटहर आम। वर्णत पंथ चले श्रीराम,' अर्थात् यहाँ का आम, कटहल, लीची, दही, चूड़ा और अमावट प्रसिद्ध है, जिनकी प्रशंसा प्रभु ने श्रीमुख से बड़े चाव से की है।

नदियाँ

मिथिला में पन्द्रह नदियाँ प्रधान हैं; ये सब 'लघुमीना लघु वीचि मालिका' (साकेत महाकाव्य) से सुशोभित हैं; सन्तों का कहना है कि श्रीकिशोरी जी की बाल क्रीड़ा का सुख लूटने के लिये ये सभी नदियाँ छोटी-छोटी घुटन भर जल प्रवाह से सतत सुशोभित मकरादि घातक जल जन्तु रहित और कीच पंक से शून्य सुन्दर लघु लहरियाँ वाली हो गईं। इनके नाम ये हैं—

कोशी--१, कमला--२, विमला ३, यमुना--४, भूयसी-५, गेरुका—६, जलाधिका—७, दुग्धमती—८, व्याघ्रवती—९, विरजा—१०, मांडवी--११, इच्छावती--१२, लक्ष्मणा—१३, वाङ्‌मती-१४, गण्डक-१५, -इनके सिवा अकुछी, जीवछ, त्रियुगा अधोवारा घोषा वनघोषा,धूमा वर्तनी और जंघा आदि अन्य नदियाँ भी मिथिला प्रान्त को सजल बनाकर सस्यश्यामला भूमि की शोभा विस्तार करतीं हैं।

ऋषियों के आश्रम

१—विश्वामित्र-आश्रम (विसौल)

पूर्व में विश्वामित्र आश्रम है, इसको आजकल विसौल कहते हैं, प्रभु कौशिक मुनि और भ्राता लक्ष्मण जी के समेत सर्व प्रथम यहीं विराजे थे, सुन्दर सरोवर तट पर विश्वामित्र जी की विशाल प्रतिमा के श्रीराम जी और लक्ष्मण जी के समेत दर्शन कर भक्त परमानन्द प्राप्त करते हैं। यह जनकपुर से १० मील लगभग है,फाल्गुन शुक्ला १२ को परिक्रमा-वासी लौटकर एक दिन यहाँ विश्राम करते हैं। बड़ा रमणीय मनोहर दृश्य है, यहाँ एक श्रीवैष्णव का स्थान भी है, आये गये सन्त, साधु, अतिथि, अभ्यागतों, को भोजन भी देते हैं और एक दिन समस्त परिक्रमा निवासियों को महा प्रसाद और कढ़ी का भण्डारा पवाते हैं। श्रीराम चरित मानस में भी इसका वर्णन है--

"देखि अनूप एक अमराई। सब सुपास सब भांति सुहाई॥
कौशिक कहेउ मोर मन माना। यहां रहिय रघुवीर सुजाना॥

भलेहिं नाथ कहि कृपा निकेता। उतरे तहँ मुनिवृन्द समेता ॥"

यहाँ प्रभु ने बरात आने तक मुनियों के साथ निवास किया है। आज भी 'अमराई' की शोभा दर्शनीय है। यहाँ का स्मरण कर प्रणाम करने से ऋग्वेद के पाठ करने का पुण्य फल प्राप्त होता है।

विश्वामित्राश्रमो प्राच्यां ऋग्वेदध्वनि नादिते ।
तमुद्देश्य नमेद्भक्त्या ऋक् पाठ फलभाग्भवेत् ॥
--रुद्रयामलोक्त मि० माहात्म्य।

—❀—
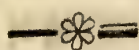
२—विभाण्डक-आश्रम

यह दक्षिण दिशा में है, यहाँ नमस्कार भक्ति पूर्वक करने से सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होतीं हैं। यह जनकपुर से लगभग ३० मील दूर है। परन्तु उसका प्रत्यक्ष दर्शन इस अधम को प्राप्त नहीं हुआ। यह दरभंगा जिले के जोगवन नामक स्थान में विरजा नदी के तट पर है, ऐसा सुना है।

३—गौतम-आश्रम, अहल्या स्थान

यह बड़ी प्रसिद्ध एवं पावन तीर्थ है जहाँ पाषाण भूता श्रापित अहिल्या को चरणरज दान कर दीनदयालु श्रीराघवेन्द्र जू ने उसका उद्धार किया था, यह जनकपुर से १५ कोस दूर है, पक्की सड़क ठेठ तक है, रेल से जाने वालों को भी सुभीता है, दरभंगा से नरकटियागंज जो पूर्वोत्तर रेलवे की लाइन गई है उसके 'कमतौल' नामक स्टेशन से करीब १ मील दूर अहियारी गाँव के पास यह स्थान है, प्रभुने चरणरज प्रदान की

उस जगह पर एक झोंपड़ी की छाया के नीचे अहिल्या जी की मृण्मूर्ति है, और पास में ही विशाल भव्य दरभंगा नरेश का बनवाया 'अहिल्या-मन्दिर' है, लोगों का कहना है कि उस खास जगह पर मन्दिर बनवाने का प्रयत्न करने पर अनेक विघ्न हुए तब बगल में मन्दिर बनवाया गया; यहाँ भी श्रीवैष्णव रसिक सन्त का एक मन्दिर है। यहाँ वेद वेदान्त के परम मर्मज्ञ पण्डित प्रवर महात्मा श्रीललितकिशोरीशरणजी महाराज बड़े रसनिष्ठ प्रसिद्ध सन्त होगये हैं, चैत्र में भारी मेला लगता है तथा अब परिक्रमा भी चलती है। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर 'गौतम कुण्ड' है, पास-पास ७ निर्मल जल पूर्ण कुण्डों का दृश्य परम मनोहर है। ये कुण्ड प्रवाह रूप में जल पास की दुग्धमती नदी में बहाते रहते हैं। स्थल चमत्कारी है और एकान्त रमणीय भजनोपयोगी है। कुण्ड पर श्रीमारुतिजी का मन्दिर है। इसका जल पातालोद्भव माना जाता है। यहाँ स्नान और नमस्कार करने से यजुर्वेद के पाठ का फल प्राप्त होता है।

गौतमस्याश्रमे याम्ये पातालोत्थित पाथसि।
स्नात्वाकुण्डे नमेद्भक्त्या यजुः पाठ फलं भवेत् ॥३०॥
—रुद्रयामलीय मि० माहात्म्य।

४—वाल्मीक-आश्रम (बलवा)

यह जनकपुर से पश्चिम नेपाल के सप्तरी पर्गना में है। यहाँ लक्ष्मणा और मण्डना दो पुण्यतोया नदियों का संगम है। नदी में जल वहता रहता है। यहाँ स्नान और भजन

पूजन करने से सामवेद के पाठ का फल प्राप्त होता है। इस गांव का नाम 'बलवा सरपल्ली' है।

वाल्मीक्याश्रममागत्य स्नात्वा नद्यस्तु संगमे।
तमुद्दिश्य नमेद्भक्त्या सामपाठ फलं लभेत् ॥२१॥

रुद्रयामलीय-मि० मा०।

५—याज्ञवल्क्य आश्रम

यह उत्तर में जहां धनुष के भग्न खण्ड के दर्शन होते हैं वहीं माना जाता है, आश्रम का पृथक रूप में कोई अस्तित्व नहीं है, यहां धनुष कुण्ड में स्नानकर पूजा करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं—

याज्ञवल्क्याश्रमे सौम्ये भग्नं तिष्ठति तद्धनुः।
तत्रस्नात्वा तदभ्यर्च्य पापराशीन्प्रणाशयेत् ॥२८॥

—रुद्रयामलीय, मि० माहा०।

उत्तरे याज्ञवल्क्यस्तु निवासेऽभिरतः सदा ॥२।३०।

=वृहद्विष्णु पुराणीय मि० माहा०।

इन ऋषि मुनियों को जो प्रतिदिन श्रद्धा पूर्वक प्रणाम कर मिथिलावास करता है, उनपर प्रभु श्रीराम प्रसन्न होते हैं।

प्रसिद्ध महादेव स्थान

पूर्वमें कपिलेश्वर और शिलानाथ महादेव प्रसिद्ध हैं, इनमें प्रथम १ मील और दूसरे १८ मील दूर हैं, ये समस्त सिद्धियाँ देने वाले हैं। अग्नि कोण में सर्वपाप नाशक कूपेश्वर महादेव हैं, ये जनकपुर से १ मील है। दक्षिणमें कल्याणेश्वर महादेव

हैं ये जनकपुर से १० मील हैं। अलेश्वर महादेव दस मील दक्षिण पश्चिम कोण में हैं। उत्तर दिशा में जलाधिनाथ और वायव्य कोण में क्षीरेश्वर महादेव प्रसिद्ध हैं। ये जनकपुर से १२ मील है और ईशान कोण में मिथिलेश्वर महादेव हैं, ये १० मील दूर है। ये सब जनकपुर की पञ्चकोशी (मध्यमा) परिक्रमा के किनारे-किनारे हैं। इनका विशेष वर्णन आगे आवेगा। इनके सिवा भैरव-स्थान,-सिद्देश्वर-स्थान, कुशेश्वर-नाथ आदि अन्य कई प्रसिद्ध महादेव हैं जो जनकपुर से १५×२०--२० कोस दूर हैं।

सरोवर

पुरन्दर सर, दशरथसर, भार्गवसर, रुक्मणीसर जनक सरोवर, बलदेवसर, गोपालसर, धनुषसर, पाद प्रक्षालन-सर, पाकवतीसर, लोमशसर, मुरलीसर, मध्यामासर, तैलदीर्घिका सर, दीर्घिका सर, चतुर्दीर्घिकासर, ऋक्षसर, धात्रीसर, सुनैनासर, धनुषक्षेत्रसर, लक्ष्मणसर, छत्रधारिणी सर, विषहरासर, ध्रुवसर, सनकादिकसर, गरुडसर, सप्तवेधासर, कष्ट हारिणी सर, अरगजा सर आदि प्रसिद्ध हैं।

इनके सिवा गङ्गा सागर, अग्निकुण्ड, विहार कुण्ड, महा-राजसागर, रत्नसागर, सीताकुण्ड आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। यहाँ 'बावन कुटी बहत्तर कुण्डा। फिरें सन्तजन झुण्डहिं झुण्डा, 'सुर-नर-मुनि सब नावैं मुण्डा।' कहावत प्रचलित है, वास्तव में यहाँ देव मन्दिरों की अपेक्षा कुण्ड और सरोवरों की अत्यधिकता है।

तीर्थ--कूप

१—जनक-कूप यह धनुषा जाने के रास्ते में 'पुरन्दहा ग्राम से पूर्वोत्तर जनकसरोवर के पास था, सन्तों का कहना है कि पहले यहाँ घोर जङ्गल था, उस समय 'परसुराम कुण्ड' के महान्त धनाढ्य जमींदार और सन्तसेवी थे, उनके बाद किसी साधू ने डाकुओं से धन बचाने के ख्याल से उस कुयें में पटरी डालकर धन गाड़ दिया और कूप बन्द कर दिया। जो कुछ हो, यदि यह बात सत्य है तो वहाँ के सन्तों को और ग्राम-निवासी भक्तों को उस कूप का पता लगाकर जीर्णोद्धार करने का पुण्यलाभ प्राप्त करना चाहिये। यहीं 'सुनैनासर' का भी खेत बना लिया गया है; धर्मपालक नैपाल नरेश के कर्मचारी चाहें तो उसका पुनःउद्धार हो सकता है। अभी उसको 'सर' के रूपमें देखने वाले सज्जन जीवित हैं। इस प्रकार कई तीर्थ नष्ट हो रहे हैं, उनकी रक्षा करना धर्मप्रिय राजा-प्रजा का मुख्य कर्तव्य है, नहीं तो कालान्तर में उनके नाम पर काल्पनिक सरोवरों की सृष्टि होना भी असंभव नहीं है।

२---अक्रूरकूप---इसका तो नाम निशान अभी तक देखने या सुनने में नहीं आया केवल माहात्म्य में नामोल्लेख है।

३---सतानन्द कूप---यह 'विहार कुण्ड' से पश्चिम 'मौनीय संस्कृत विद्यालय' के हाते में सुरक्षित है, इसका उद्धार भी श्रीमौनीबाबा करपात्री जी ने करवाया है।

४--ज्ञानकूप,—५--विद्याकूप,--ये दोनों भी 'मौनीय संस्कृत विद्यालय' के हाते में हैं, दोनों कूपों के मध्य में विद्यालय का अध्यापन भवन है।

६--७--सिरध्वज कूप और सैमन्तक कूप इन दोनों का भी प्रत्यक्ष अस्तित्व कहीं उपलब्ध नहीं हैं। महात्मा लोग शोध में हैं। इन सब कूप और सरोवरों का बड़ा महत्व हैं—

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च पुनर्जन्म न विद्यते।
तेषां स्नानेन पानेन महापुण्य फलं लभेत्॥ ३।२१॥

व्यापार--

यहाँ से 'सखुआ' लकड़ी, धान, चावल, मकई, सरसों तम्बाकू, तेजपात (पत्रक), मधु कायफल, त्रिफला, शतावरी, सेमरकँद आदि दवायें, और धूप बाहर जाता है। घी और आलू का भी व्यापार बढ़ रहा है। अब विदेशी फैशन की चीजों की भी भरमार हो गई है। इसका व्यापार भी खूब तगड़ा है।

❀ श्री मिथिला की यात्रा ❀

श्रीमिथिलाजी सनातन दिव्यदम्पति प्रिया प्रियतम प्रभु को भी 'प्रिय न काहि अस सासुर माई' के संबंध से अत्यन्त प्रिय है, सन्तों ने तो यहाँ तक कहा है—

'अस सुख मिलत न कतहुँ प्रभुहिं
जस पावत सिय सङ्ग ससुरारी।'

अन्य सप्तपुरियां मोक्षप्रदा मानी गयी हैं। परन्तु यह मिथिला तो प्रभु की सगुण लीलाओं का रसोपभोग कराने वाली अतएव 'मुक्ति फिरे घर घर से' सुशोभित है। इसी भगवत्प्रेम रसाप्लुता मंजुल भूमि में आद्या शक्ति, आह्लादिनी देवी श्री श्रीपद वाच्या भगवती सीताजी का प्रादुर्भाव हुआ है, वे पृथ्वी की

कुमारी होकर अवतीर्ण हुईं अतएव यह धरणीमाता का नैहर माना जाता है, प्रभु की मधुर लीलारस का स्वाद चखने के लिये यहाँ पृथ्वी देवी ने अपनी सम्पूर्ण कोमलता का विकास किया है। यही कारण है कि इसके चारों ओर महर्षियों के पुण्याश्रम, देव निवास और तीर्थ-नदी-सरोवर एवं कूपों की अधिकता है। महापुण्य का उदय होने पर प्रभु के इस धराधाम का दर्शन मिलता है। भाव, अभाव, किसी भी प्रकार से यहाँ की यात्रा मङ्गल प्रद ही है। मुण्डन, उपवास, स्नान, जप, तप, दान, पूजा पाठ, विद्यादान, अन्नदान, कन्यादान, गोदान, भूमिदान आदि जो कुछ करे कोटि गुण फल प्रद होता है। अगहन, माघ, फाल्गुन, चैत्र और वैशाख में विशेष यात्रा अवश्य करे। क्षणभर का भी मिथिलावास पापोंसे तार देताहै। मिथिला वास प्राप्त कर मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है और मरने के बाद श्रीराघवेन्द्र के नित्यधाम का अधिकारी बनजाता है। यहाँ सुन्दर सुन्दर मन्दिर बनाकर प्रभु के लीला विग्रहों की प्रतिमायें वेद विधान से प्रतिष्ठित करावे उसका पुण्यफल कौन वर्णन कर सकता है? घर बैठे भी 'मिथिला' नाम उच्चारण और धाम स्मरण कर जो कर्म करता है वह अनन्त फल प्रद हो जाता है। विरक्त सन्त महात्माओं को मिथिला मंडल में घूम फिर कर धर्म प्रचार और भगवद्भजन एवं भावुकों का सत्सङ्ग करते रहना चाहिये। जो मिथिला के दर्शनार्थ जाने की इच्छा मात्र करता है उसके सभी पाप संकल्प के प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं। यात्रार्थ जाने वाले मनुष्य को देखकर जीव

पवित्र होजाता है। जो वार्तालाप अथवा भोजन-जल विछावनादि द्वारा यात्री को सन्तुष्ट करता है वह श्रीजूकी कृपा का भाजन बनता है। देवता भी तरसते हैं कि यदि हम मनुष्य होते तो मिथिला की यात्रा कर श्रीराम धामके अधिकारी बन जाते, जिनका पाञ्चभौतिक देह मिथिला में छूटता है वह मोक्षपद पा लेते हैं। केवल मिथिला यात्रा करने वाला अखिल ब्रह्माण्ड के तीर्थों का फल अनायास प्राप्त कर लेता है।

जननी-जानकी भूमि--जान्हवी च जनार्दनः।
जन्मना सत्कुलप्राप्तिर्जकारा पञ्च दुर्लभा ॥ १२।१८।

❀ मिथिला वास और मिथिला वासी ❀

हम सब सकल सुकृत की राशी। भये जग जनमिं जनकपुर वासी।

\+ + +

एवं चाण्डाल पर्यन्ता मिथिला वास कारिणः।
अहो धन्यतमा ज्ञेया इति देवैः प्रसंसिताः।
किंपुनर्ब्राह्मणा राजन् रामाराधन तत्पराः॥
सर्वे ब्रह्म समा ज्ञेया अपि ये पशु पक्षिणः। २३। २४

—रुद्रयामलीय, मिथिला माहात्म्य।

चाण्डाल पर्यन्त सभी जीव मिथिलावासी होने के कारण अहो धन्यतम और देव प्रसंसित हैं, तब श्रीराम जी के आराधन में परायण अन्य मनुष्य और ब्राह्मणों की महत्ता का क्या कहना? पशु पंक्षी भी ब्रह्म समान समझने चाहिये।

मिथिला वासी सभी श्रीराम रूप हैं। उनके दर्शनमात्र से थोड़े या बहुत नये और पुराने सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

उनके माता-पिता धन्य हैं । उन्होंने सात अगली और सात पिछली पीढ़ियों समेत अपने वंश का उद्धार कर दिया है। पशु-पक्षी-गुल्मलता कीट पतङ्ग के रूप में भी मिथिला में जन्म होना अहोभाग्य का फल समझना चाहिये। जिन्होंने भारत वर्ष में जन्म धारण कर क्षणमात्र भी मिथिला वास नहीं किया उनका जन्म निष्फल है।

जनकपुर का बिस्तार

जनकपुर का वैभव अतुलनीय है 'जो सम्पदा नीच घर सोहा। सो विलोकि सुर नायक मोहा' यहीं हुआ था, और देखि जनकपुर सुर अनुरागे। निजनिज लोग सबहि लघु लागे इसी श्रीधाम का ऐश्वर्य था। भगवान् रामभद्रजू को भी इस पुर के दर्शनों के लिये बड़ा हर्ष था—

'धनुष यज्ञ सुनि रघुकुलनाथा। हर्षि चले मुनि नायक साथा॥'
'हर्षि चले मुनिवृन्द सहाया। वेगि विदेह नगर नियराया॥'
पुर रम्यता राम जब देखी। हर्षे अनुज समेत विशेषी॥'
'बनै न वरणन नगर निकाई। जहाँ जायँ मन तहाँ लुभाई॥'

आदि बचनों से प्रभु का जनकपुर दर्शन करने हर्ष पूर्वक चलकर और जनकपुर देखकर परम प्रसन्न होना स्पष्ट है। जे तिरहुति तेहि समय निहारी। तेहि लघु लाग भुवन दश चारी उस समय का ऐश्वर्य था, आज अपना वैभव अन्तर्हित कर लेने पर भी मिथिला तीर्थ स्वाभाविक शोभा प्राकृतिक सौन्दर्य सुख देने में अप्रतिम है।

जनकपुर धाम पूर्वमें हरिहरपुर तक, पश्चिम में जलेश्वर तक, उत्तर में धनुषा तक, और दक्षिण में गिरिजा स्थान

तक माना जाता है। दश योजन इसका सम्पूर्ण विस्तार है। यहाँ तक श्रीजनक महाराज का किला था जिसके लिये=
'होत चकित चित कोट विलोकी। सकल भुवन शोभा जनुरोकी।
कहा गया है। मिथिला की 'मध्यपरिक्रमा' इसी पंचकोशी के चौतरफा होती है, परन्तु अब जनकपुर धाम का इतना विस्तार नहीं है। वर्तमान जनकपुर जनकजी महाराज का निज महल माना जाता है जिसके लिये=
'अति अनूप जहाँ जनकनिवासू।'विथकहि विबुध विलोकि विलासू
कहा गया है। इसका विस्तार ५ माइल गोलाकार है। इसी श्रीक्षेत्र को अन्तर्गृही भी कहते हैं। श्रीस्वामिनी जू का निज महल इसके मध्य भाग में है। दूर देश के यात्रियों का केन्द्र-विन्दु यही है, मिथिला का यह हृदय है, प्रेमियों का यह प्राण सर्वस्व है। रामोपासक रसिक सन्तों का यह नयनाभिराम-लोक ललाम-आराध्य धाम है। आइये जरा घूम फिर कर श्रीधाम की सुन्दर शोभा निहार लें—

❀ श्री जनकपुर धाम ❀

'लखन हृदय लालसा विसेषी। जाइ जनकपुर आइय देखी।'
आने का रास्ता—उत्तर पर्वत श्रेणी नैपाल, भूटान, तिब्बत, आदि से अधिकांश आने वाले तो पैदल ही आते हैं, दूसरे साधन भी उन्हें सुलभ नहीं, परन्तु पश्चिम लखनऊ, कानपुर, काशी, अयोध्यादि की ओर से आने वालों को 'कानपुर-कटिहार अथवा लखनऊ बरौनी जंकसन वाली लाइन से 'समस्तीपुर' जंकशन होकर दरभंगा-जयनगर होते हुये एन. जे.जे. आर.

नैपाली रेलसे जनकपुर आना होता है। पूर्व कटिहार-मुकामा-घाट, सेमरियाघाट आदि से भी समस्तीपुर होकर ही आना पड़ता है, यह पूर्वोत्तर रेलवे का प्रसिद्ध जंक्शन है केवल निर्मली-झंझारपुर और भभटयाही से आने वालों को 'सकरी' जंक्सन से जयनगर होते हुये जनकपुर आना होता है। याद रहे परदेशी यात्री जनकपुर का टिकट मांगते हैं तो अक्सर स्टे-शन मास्टर जनकपुर रोड (पुपरी) का टिकट दे देते हैं इससे यात्री हैरानी में पड़ जाते हैं। जनकपुर से जनकपुर रोड १२ कोस है, सवारी बैलगाड़ी छोड़कर और कोई समयानुकूल नहीं मिलती, खर्च और समय भी अत्यधिक लगजाता है। इस लिये बाहरसे आने वालोंको पूर्वोत्तर रेलवेके जयनगर स्टेशन का ही टिकट खरीदना चाहिये। जयनगर स्टेशन से लगभग एक फर्लांग पूर्व पुण्यतोया कलकलनादिनी भगवती कमला नदी का स्नान करने का भी परम लाभ प्राप्त होता है। जय-नगर के स्टेशन से ८० गज के फासले पर पश्चिम नैपाली रेल का स्टेशन है, धीरे धीरे मधुर झोंके खाती ट्राम्बे जैसी छोटी सी रेल गाड़ी दो घन्टों में श्रीधाम पहुँचा देती है। नैपाली रेल और पोस्ट का भारत सरकार की रेल से या पोस्ट से कोई खास सम्बन्ध नहीं है। पोस्ट से तो सादी चिठ्ठियाँ-बुक पोस्ट-अखबारादिक गैर जिम्मेवारी की चीजें आती भी हैं

१—अब नेपाल काठमांडू से हवाई जहाज से ही अधिक यात्री आते हैं। मोटर के लिये भी राजमार्ग तैयार हो गया है। बस सरविस चालू है।

परन्तु रेल से आप सीधा कहीं से माल मँगा अथवा भेज नहीं सकते। बीच में जयनगर में कोई कार्य-कर्ता रहे तभी काम चल सकता है। यहाँ की यात्रा आश्विन के अन्त से आषाढ़ तक ही सुलभ है। बरसात में तो पानी की बाढ़ आदि से सड़कें और रेलवे लाइनें प्रायः टूट जाया करती हैं। कभी-कभी बीस, बीस दिनों तक आना जाना बन्द हो जाता है।

श्रीधाम की सीमा—यह ५ मील गोलाकार अन्तर्गृही परिक्रमा के भीतर बसा है, यद्यपि इसका विस्तार और भी अधिक है। वेद-उपनिषद-इतिहास-पुराण और लोक प्रसिद्ध मिथिला नरेश की यह राजधानी है। 'सच्चिदानन्द रूपाहि मायातीतानिरञ्जना' मां मैथिली की यह परम रम्य क्रीड़ा स्थली है। श्रीराघवेन्द्र प्रभु की विहार भूमिका है। महाराज निमि के वंशज मिथि राजा ने इसे पुनः सृष्टि के आरंभ में बसाई है। यों तो यह अनादि दिव्य भूमि है, प्रभु के अवतार काल में विकसित और अनवतार काल में निशीथ काल के कमल की भाँति सम्पुटित हो जाती है। शास्त्र वचनानुसार यमुनी और दुग्धमती इन दो पवित्र नदियों के मध्य का प्रदेश परमपुण्यप्रद जनकपुरधाम के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीसम्प्रदाय प्रवर्तिका श्री श्रीजू का लीला धाम और श्री सम्प्रदायाचार्यप्रवर परमहंस शिरोमणि अवधूत सन्त श्री-शुकदेवजी का सत्संग मन्दिर यही स्थान है। यहाँ आपको वेदान्त का व्यवहारिक ज्ञान हस्तामलकवत् प्राप्त हुआ था। त्रेता युग में यह वीतराग मुनीश्वरों का प्रधान पीठ माना जाता

था। यमुना और दूधमती के मध्य में पल मात्र भी वास करने वाला परमपद प्राप्त कर लेता है। भक्ति हीनों की भी श्रीधाम कृपा से सद्गति हो जाती है, देवता भी यहां मृत्यु चाहते हैं। 'अन्येषां तत्र का कथा।'

गंगावतार विरजा यमुनी यमुना स्वयम् ।
येषा दुग्धमती मध्ये स्वयमेव स्वरस्वती ॥
पुष्करादीनि तीर्थानि यानि सन्तीह भूतले ।
एतासां तु त्रिगङ्गानां कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥

—रुद्रयामल-३ पटल १७। १८

'श्रीगंगाजी का अवतार विरजा हैं, यमुनी यमुना का तथा दुग्धमती स्वयं सरस्वती हैं, संसार के पुष्कराजादिक महान् तीर्थराज भी उनकी सोलहवीं कला के समान भी नहीं हो सकते हैं। श्रीभूमिनन्दनी जू की सेवा के लिये ये तीर्थ नदियां मधुर रूप धारण करके आई हैं और धाम के चारों ओर घूम गई हैं। पूर्व में यमुना तथा दक्षिण और पश्चिम में दूधमती की धारा है। विरजा उत्तर में हैं। इस भूमध्य में बड़े-बड़े सिद्ध प्रेमी सन्त हो गये हैं और अलमस्ती में कह गये हैं—

आशिक हैं सियाराम नाम के, शहर जनकपुर रहते हैं।
अकड़े रहैं सदा सियावर बल, तीनि ताप नहि दहते हैं।
रखते नहिं परवाह किसी की, जगसे कछू न चहते हैं ॥
'सियलाल शरण' अलमस्त बने, नहिं चाल दूसरी गहते हैं॥

श्रीजानकी मन्दिर (बाहरी दृश्य)

श्रीजनकपुर धाम का सर्वश्रेष्ठ मन्दिर श्रीकिशोरीजू का (नौलखा) महल

पृष्ठ ५०

है। दिवङ्गत श्रीमहन्त नवलकिशोरदास जी महाराज ने स्वर्ण रजत सिंहासन, चौखट और किवाड़ समर्पण कर मन्दिर की शोभा और भी बढ़ायी है। स्वच्छ श्वेत मकराणा (संगमर्मर) के प्रस्तर के स्तंभ गच्ची से सुसज्जित जगमोहन जगन्मोहन का काम कर रहा है। दूर से करुणामृत सागरी-भक्तवत्सला माँ का दर्शन करते ही प्रेमियों के हृदय की प्रेम धारा प्रवाहित होने लगती है। प्रत्येक पूर्णिमा-पर्व त्योहार और श्रीरामनवमी श्रीजानकी-नवमी-विवाह पञ्चमी, श्रावण का झूला श्रीरामानंद जयन्ती और फाल्गुन परिक्रमा के अवसर पर तो प्रेमी जन समुदाय समुद्र की भाँति लहरें लिया करता है। साधु-ब्राह्मण अतिथि और विद्वानों का सत्कार भी भली-भाँति होता है। धर्मधुरन्धर नैपाल सरकार की ओर से नैपाली बड़े नाप की ७०० बीघा जमीन श्रीकिशोरी जी की सेवा में लगायी गयी है। इसके सिवा भेंट पूजा की भी आवक अच्छी है। मंदिर से उत्तर तरफ तैलदीर्घिका सर और अरगजा कुण्ड है। तथा नवीन विवाह मण्डप का निर्माण हो रहा है।

महात्मा श्री सूरकिशोर जी

यह सन्त वनस्थली के समान बने हुये जनकपुर का उद्धार करने वाले हुए हैं। इनका जन्म जयपुर राज्य का था, सनाढय ब्राह्मण कुल का शरीर था। इन्होंने श्रीपवन कुमार की आराधना कर दिव्य धाम का दर्शन पाया, और मिथिला माहात्म्य के अनुसार अनुभव में निहारे हुए तीर्थों का उदय किया। ये वात्सल्य रसके उपासक श्रीजनक जी को अपना

श्री जानकी मन्दिर का भीतरी सिंहासन

श्री सूरकिशोर जी की परमाराध्या श्रीकिशोरीजू का दिव्य दर्शन

भाई और श्रीकिशोरीजू को अपनी पुत्री मानते थे। श्रीअवध जाते थे तो सरयू के इसी पार ठहरते और अन्तगृही के भीतर अन्नजल ग्रहण नहीं करते थे, कहते थे बेटी का अन्नजल न लेना चाहिये।

गलता गादी जयपुर के महान्त राजा रामसिंह के समय में गृहस्थ बना दिये गये तब आपको अप्रिय लगा और अपने बड़े गुरुभाई के साथ लोहार्गल सीकर में आकर बस गये, वहाँ आप घूमने फिरने जायँ तो अपनी किशोरीजी को साथ ले जायँ और दुकानों पर जाकर "बच्ची: ये चीज लेगी, वह चीज लेगी ?' आदि कहते, कोई अच्छी चीज देखते तोश्रीसिया जू के लिए ले आते। यह भाव रूखे तपस्वी लोगों को अच्छा न लगा, आपने मौका पाकर श्रीजनकपुर का रास्ता नापा, आपके ठाकुर भी साधुओं ने नहीं दिये। आप यहां आकर प्रिय पुत्री के वियोग में करुण क्रन्दन करने लगे, अनन्त प्रेमार्णव जनकदुलारीजू से न रहा गया और स्वप्न में पीपल के पेड़ के नीचे गाय स्वयं थनों से दूध गिरा जाय वहाँ सवा हाथ धरती खोदकर अपनी पावन प्रतिमा निकालने का सन्देश सुनाया। जागकर आपने वैसा ही किया तो अपनी वही जयपुर वाली प्रतिमा प्रकट मिली और उसी दिन जयपुर में अन्तर्ध्यान होगई, बहुत दिनों के बाद सन्तों द्वारा दोनों तरफ की बात सुनी गयी तब रहस्य खुल गया।

एक बार मकवानपुर महारानी ने आकर सोने की सवाभर नथिया अर्पण की, पुजारी ने श्रीजू को धारण करादी,

आपको जब यह बात मालूम हुई तो बड़े दुखी हुये, हमारी सिरस सुमन सी सुकोमल सियाजू उतना भारी गहना कैसे पहन सकी होंगी ? हाय प्रभु ! कहीं नासिका में क्षति न हो गई हो ? आप दौड़े आये मन्दिर में, देखते हैं तो सचमुच नासिका से शोणित बह रहा है और नथिया गिर पड़ी है, आप मूर्छित हो गये, अचेतनावस्था में ही मधुर संजीवनी वाणी सुन पड़ी "पिता जी ! दुखी न हों, अबतो देखिये न एकदम अच्छा हो गया ?" काम कोकिला के कलित कण्ठ को भी लज्जित करने वाली अमृतोपम वाणी सुनते ही आँख खुल गई, वास्तव में श्रीजूका विग्रह अब स्वस्थ रूप में सुश्रृङ्गारित होगया था, अभी तक वही श्रीविग्रह श्रीजानकी मन्दिर में प्रधान सरकार के रूपमें पूजित हो रहे हैं, सामयिक उत्सव पर वही बाहर पधारते हैं। भग्न नासिका उनमें भव्य भाव का स्मरण कराकर आजभी प्रेमियों के हृदय भाव पूरित कर देती है।

एक बार आप अवध गये। शयन के समय शृङ्गार उतार कर सादा पोषाक प्रभु को धारण कराया गया था। अचानक भावोंद्रेक के कारण आप उठकर सरयूपार चलेआये और रोते-रोते अर्धरात्री होगई, अवधेश्वरी से यह न देखा गया, नख-शिख शृङ्गारित छवि से साकेत नायिका प्रकट होकर आश्वासन देते हुये बोली,—'बाबूजी !" दुखी क्यों हो रहे हैं ? मैं आपके लिये भोजन लायी हूं थोड़ा सा पा लीजिए !" यह कह कर स्वर्ण थाल दिव्य भोजन सामग्री से पूर्ण सामने रख दिया। आप बोले—क्या पाऊँ ? मैंने तो यह सोचकर सम्बन्ध जोड़ा

था कि चक्रवर्त्ति नरेन्द्र हैं, इनके घर बेटी सुख पायेगी, परन्तु सुख क्या भोगेगी, अङ्ग के आभूषण भी बेंच खाये। श्रीलाडलीजू बोली—'पिताजी ! देखिए न, सभी आभूषण तो मैं पहने हुये हूं, यहाँ कौन कमी है, आपकी दया से, ? वह तो गरमी का समय है, भार लगता था तो सब उतारकर मैंने ही धर दिये थे, "देखिये न ! आँख खोलिये न !!" आपने आँख खोलकर उस अपार सौन्दर्य राशि का दर्शन किया तब कहीं जी में जी आया। धन्य है ऐसे भाव भीने सन्तों को, और जय हो भक्त वत्सला श्रीवैदेही जू की।

आप तबसे कभी अवध नहीं गये और 'कोटिहुँ सुख जो होय ससुरारि तो बाप को भौन न भूलत बेटी" कह कर अपनी प्राणोपम पुत्री को दमाद के सहित सदा के लिए यहां बसाकर कृत कृत्य होगये। आपके शिष्य 'मामा श्रीप्रयाग दासजी" हुए जो अपने को श्रीरघुनन्दनजू का सार और उन्हें अपना बहनोई मानते थे। इनके भी चरित्र अत्यन्त विलक्षण हैं। इस भावना के सन्त आज भी मिथिला में बहुत हैं। वे मिथिला के मधुर दास माने जाते हैं।

श्री लक्ष्मण--मन्दिर

श्रीजानकी मन्दिर से पूर्वोत्तर कोण पर पासही श्रीलक्ष्मण जी का मन्दिर है, इसमें भी नैपाल महाराज की ओर से सेवा में जमीन अर्पित है, यहाँ आये गये सन्तों की सेवा भी होती है। जनकपुरके पुराने मन्दिरों में राम मन्दिर, जानकी मन्दिर और लक्ष्मण मन्दिर प्रधान माने जाते हैं। भूकम्प में क्षति-

ग्रस्त होने पर इसका जीर्णोद्धार नेपाल महाराज ने कराया है। लक्ष्मण मन्दिर से थोड़ा उत्तर "अरगजा सर और पूर्व तरफ 'लक्ष्मण सर है।

श्रीराम--मन्दिर

जानकी मन्दिर के बाद ,दर्शनीय प्राचीन मन्दिरों में श्री-राममन्दिर प्रधान है। जानकी महलसे एक सड़क पूर्व जाकर दक्षिण घूम गई है, उससे और एक सदर बाजार वाली सड़क जो महल के सामने से दक्षिण गई है उससे आगे मोड़ पर से पूर्व घूम जाने पर श्रीराम मन्दिर मिलता है। यह नेपाली ढंग का पुराना मन्दिर है, ऊपर सुवर्ण की छज्जायें मण्डपाकार महाराजा चन्द्र समशेर जङ्गराणा बहादुर के तरफ से भेंट स्वरूप चढ़ाई हुई है। मन्दिर में एकही साथ श्रीराम पञ्चायतन की परम प्राचीन मूर्ति और लक्ष्मीनारायण-विष्णु भगवान् तथा देवीजी की प्राचीन मूर्तियों के दर्शन होते हैं। लोग मन्दिर के भीतर भगवान् के पास में जाकर दर्शन करते हैं। सामने अभय मुद्रायुक्त वीरासनसे विराजमान श्रीरामदूत पवन कुमारजी के दर्शन होते हैं, दक्षिण तरफ चरण पादुका और श्रीमहादेवजी का मन्दिर है। उत्तर तरफ कैलाशवासी महन्तों की समाधियों का ताँता लगा हुआ है। यह मन्दिर श्रीसूर-किशोरजी के साधक शिष्य श्रीकिशोरीजू के अनन्य अनुरागी एक सन्यासी महात्मा श्रीचतुर्भुजगिरिजू के अधीन होकर अब सन्यासी दशनामी सन्तों के हाथमें है। किसी समय श्रीराम और जानकीजी के दोनों मन्दिर एकही संस्था के रूप में थे।

श्रीराम मन्दिर के ऊपरी स्वर्ण मण्डप का दिव्य दर्शन—

श्री जनकपुर धाम के प्रधान मन्दिरों में सर्व पूज्य प्रमुख स्थान—

श्री धनुष सागर　　(श्रीराम मन्दिर का बाहरी दृश्य)

जहाँ नित्य प्रति श्री शिव धनुष की पूजा श्री विदेह महाराज करते थे वह पवित्र सरोवर

आगे चलकर व्यवहार की सुविधा के लिये दोनों के बराबर हिस्से नैपाल सरकार ने बाँट दिये हैं। प्रायः जनकपुर और आसपास की जमीन में (जमीन्दारी में) और बाजार में दोनों के बराबर से हिस्से हैं। इस मन्दिर में भी ७०० बीघा जमीन नैपालकी ओर से सेवार्थ लगी हुई है। मन्दिर के बाहर पूर्वी फाटक के उत्तर तरफ मैनेजरी अड्डा है, नगर की सुरक्षा संबंधी सभी काम पहले यहीं से होते थे, परन्तु अब 'थाना'और 'सुपरिटेन्डेन्ट ऑफिस हो जान से काम बँट गये। तथा नगर पालिका की व्यवस्था भी हो गई है। मन्दिर के पूर्वी फाटक के दक्षिण तरफ 'हुलाक अड्डा' नैपाली पोस्ट ऑफिस है। इसका संबंध समस्त विश्व तथा भारत से है परन्तु जिम्मेदारी की कोई चीज बीमा मनिआर्डर-रजिस्ट्री-पार्सलादि कुछ नहीं आता जाता। पोस्ट द्वारा बाहर से तो केवल चिठ्ठियां बुक पोस्ट-अखबार आदि ही आता जाता है। इस मन्दिर के भीतर जूता खड़ाऊँ ले जाने की सख्त मुमानियत थी परन्तु अब उपेक्षा हो गयी है।

श्रीजनक जी का मन्दिर

श्रीराम मन्दिर से बाहर आने पर सामने 'धनुष क्षेत्रसर' मिलता है, इसी जगह शिवधनु की पूजा महाराज जनक करते थे। इस सरोवर के उत्तर पश्चिम कोण पर श्रीजनकजी का मन्दिर है। प्राचीन विग्रह है। गत भूकम्प में ध्वस्त होजाने पर पुनः जीर्णोद्धार धर्मप्रिय नैपाल महाराज की ओर से हुआ है। श्रीराममन्दिर और श्रीजानकी मन्दिर भी भूकम्प में क्षति-

ग्रस्त हो जाने पर नैपाल महाराज की ओर से मरम्मत कराये गये थे, राममन्दिर का चौतरफा मकान भी उसी समय नये ढंग से बनाया गया।

श्रीगंगासागर

जनकपुर का यह प्रधान सरोवर है। जो यहाँ आता है इसमें स्नान अवश्य करता है,मर्दाना और जनाना घाट अलग अलग है। गंगासागर नहाकर जानकीजी का दर्शन कर लेना ही यहां आस पास के प्रतिपूर्णिमा को मनोभिवान्छितफल प्राप्ति के लिये आने वाले दर्शनार्थी पर्याप्त मानते हैं। मेले भी विशेषतः इसी के आस पास अधिक लगते हैं। इसके पूर्वी मुहार पर श्री वैष्णव सन्तों के कई आश्रम और मन्दिर हैं। उसमें लक्ष्मणदासजी बाबा का मन्दिर विशेष प्रसिद्ध और दर्शनीय है, पहले के महान्त लोग साधुओं को अपनी जमींन में कुछ नहीं बनाने देते थे, इसलिये कि वे हमारी जमीन दखल कर लेंगे या स्थान पर अधिकार कर लेंगे। साधुओं के हाथ बँदोवस्तो या बेच देना भी उन्हें अप्रिय था, बाबा लक्ष्मण-दासजी उसी समय मिथिलावास और खासकर गंगासागर पर वसने की हठ पकड़ कर बैठ गये, उन्हें बार-बार हटाया गया, झोंपड़ी गुफा आदि बनाये परन्तु वह सब उजाड़ कर फेंक दिया गया, अन्त में बाबा लक्ष्मणदासजी की विजय हुई, अब आम तौर पर सन्त जमीन लेकर बसते हैं। गंगासागर का दक्षिण मुंहार 'मणिकर्णिका घाट है' यहाँ दूर-दूर के शव जलाये जाते हैं, नैपाल सरकार ने लोगों की सुविधा के लिये

श्री गङ्गा सागर

श्री जनकपुर धाम का सर्व श्रेष्ठ तीर्थ सरोवर

श्री जनकजी महाराज का मन्दिर

प्रणवौं परिजन सहित विदेहू । जिनहिं रामपद गूढ़ सनेहू ॥
योग भोग महँ राखेउ गोई । राम विलोकत प्रगटेउ सोई ॥

जलाने के लिये घाट से हटकर पक्के चौतरे बनवा दिये है। जेठ शुक्ला १० गंगादशहरा ग्रहण और प्रत्येक पुण्य पर्व पर मेला गंगासागर पर लगता है।

गंगासागर समस्त तीर्थमय पावनतम सरोवर है, महाराज निमि ने जब वशिष्ठ जी इन्द्र का यज्ञ कराने गये थे, उसी बीच में क्षणभंगुर शरीर जानकर गौतम जी से यज्ञ कराया, यज्ञांत के समय वशिष्ठ जी भी आ पहुँचे, उन्हें यजमान का यह काम बहुत अप्रिय लगा और निर्दोष गुरु का सहसा त्याग करने पर निमि को श्राप दे दिया, निमि ने भी निर्दोष शिष्य को—जो शुभस्यशीघ्रम देह की क्षणभंगुरता विचार कर शुभ कार्य कर रहा था—एकाएक श्राप देते देखकर वशिष्ठजी को श्राप दे दिया, दोनों बिना शरीरके होगये, मित्रा-वरुण के द्वारा उर्वशी से वशिष्ठजी का पुनः अवतार हुआ। निमि को पुनः जीवित करने का प्रयत्न मुनियों ने किया परंतु निमि ने देह बंधन स्वीकार नहीं किया, उन्हें नेत्र पलकों पर वास मिला, तब से लोगों की पलकें गिरने उठने लगीं, ऋषियों ने अराजकता के भय से निमि के देह का मंथन करना चाहा, परंतु ब्रह्म शाप से शापित अपावन देह को छुये कौन? उसी समय जगतपावन परमात्मा का बड़े प्रेम से ध्यान कर कोई उपाय दिखलाने की प्रार्थना की गई, जगदाधार श्रीहरि वहाँ प्रकट हुए, भक्तवत्सल प्रभु ने उसी समय सभी तीर्थों के समेत सप्त समुद्रों का आवाहन किया। तीर्थजलाप्लुत पावनतम निमि के देह का मंथन किया गया, इससे एक कुमार प्रकट हुए,

देवोपम उस राजकुमार का नाम 'मिथि' पड़ा, केवल पिता के अंश से प्रकट हुए अतएव 'जनक' कहाए, देह रहित निमि के आत्मज होने से 'विदेह' भी नाम हुआ। 'मिथिला' नगरी उन्हीं की बसाई है। उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है। तभी से सूर्यवंशी होते हुए भी अवध और मिथिला नरेशों का गोत्रभेद हो गया, पुरोहित भी बदल गये।

'मिथिला' के प्रकट होने पर जय शब्द और शंख दुन्दुभी नाद से प्रभु की कृपा मानते हुये देवताओं ने फूल बरसाये, उसी समय समस्त तीर्थों को एकांश से यहाँ रहने का आदेश देकर प्रभु अंतर्ध्यान हो गये।

> तस्मात्सर्वाणि तीर्थाणि सरितश्च सरांसि च ।
> तिष्ठन्ति सर्वदा तत्र गङ्गा सागरके जले ॥ १५ । ३७ ॥
> ज्येष्ठ शुक्ल दशम्यांतु ब्रह्माद्याः देवतागणाः ।
> स्नानार्थं तत्र गच्छन्ति मुनयो नारदादयः ॥ १५।२२ ।
>
> —वृहद्विष्णु पुराणीय मिथिला माहात्म्य'

पाठशाला

ज्ञान कूप और विद्या कूप के मध्य में नैपाल राजकीय संस्कृत पाठशाला है, इसमें लगभग एकसौ विद्यार्थी विद्यालाभ प्राप्त करते हैं, उनके भोजनादि का प्रबंध भी राज्य की ओर से होता है, व्याकरण-साहित्य और ज्योतिष आदि की शिक्षा दी जाती है। इसका निर्माण स्वनाम धन्य मौनीजी करपात्रीजी महाराज द्वारा हुआ है।

धर्मशालायें

गङ्गा सागर और धनुषक्षेत्रसर दोनों मिले हुए तलाव हैं। गङ्गा सागर से पश्चिम धनुषक्षेत्रसर है, इसके दक्षिण मुँहार पर 'कलकत्ते वाले की धर्मशाला' है, स्टेशन से उतर कर परदेशी यात्री सीधे धर्मशाला आते हैं, कुली सामान लेकर यहाँ पहुँचा जाते हैं। इसके सिवा एक और धर्मशाला दरभंगा वाले की है,परंतु यह छोटी और एक तरफ पड़ती है। जो जलेश्वर के रास्ते पर ब्रह्मचर्याश्रम के पास है। मेला के समय और अन्य समय में भी अधिकांश यात्री सन्तों के आश्रम--मन्दिर और आम के बगीचों में ठहर जाते हैं, यहाँ अभी ऐसी--ऐसी अनेकों धर्मशालाओं की आवश्यकता है, नैपाल के धर्मप्रिय सज्जनों को और भारत के दानवीरों को यहाँ धर्मशाला अन्नक्षेत्र-सदाव्रत-भजनाश्रम सरोवरों के घाट आदि बनवाकर पुण्य लाभ प्राप्त करना चाहिये। मेला के समय धर्मशाला में बहुत अधिक गन्दगी हो जाती है, इसकी स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की अत्यन्त आवश्यकता है। एक धर्मशाला श्रीरामस्वरूप साहु मुँजेलिया वाले की गंगासागर उत्तरघाट पर और बनी है। परन्तु खुले मण्डप की तरह है, ऐसी ही एक श्रीराम मन्दिरके सामने धनुष-क्षेत्र पर भी खुली धर्मशाला है।

दीर्घिका--सर

यह गङ्गासागर से पूर्व है आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन इसका विशेष महत्व माना जाता है। यहीं अन्तर्गृही परिक्रमा की सड़क है, सड़क के उस पार जर्नल साहब का दरबार है। दो

चार मंदिर और सन्त के आश्रम भी उसके आस पास में हैं। अन्तगृ ही परिक्रमा इसीजगह चौमुहानी पर से प्रारम्भ होतीहै।

विषहरा--सर

दीर्घिकासर के पास परिक्रमा वाली सड़क से थोड़ा दक्षिण की ओर बढ़िये तो 'विषहरा सर' मिलता है। इसके स्नान-पानादि से कभी विषधर का अवतार नहीं लेना पड़ता। इसी रास्ते थोड़ा पश्चिम बढ़ने पर सड़क से उत्तर 'मुरली-सर' है। कहते हैं भगवान् श्रीकृष्ण जब यहाँ पधारे थे तब वृन्दावन का प्रेम याद आगया और मुरली बजाने लगे, उसी पुण्य स्मरण के लिये इसका नाम 'मुरली सर' रखा गया है। विषहरासर' पर भी संतों की पर्ण कुटियां हैं। श्रीजानकी चरितामृत में ऐसी कथा है कि—लीला कौतुक में प्यासी सखियों को जल पिलाने के लिए श्रीकिशोरीजो ने खेलने के लिये अपनी मुरली की नोक से जल प्रकट किया इसलिए मुरली सर नाम पड़ा।

ब्रह्मचर्याश्रम

'मुरली-सर' से कुछ आगे बढ़ने पर •एक फर्लांग के बाद परिक्रमा की सड़क के भीतर "श्रीमारुति-मंदिर" है, उससे आगे उत्तर अलखेश्वर महादेव और अलखिया बाबा का आश्रम है, उसके बाद गायत्री-ब्रह्मचर्याश्रम है, इसमें वेद पाठी विप्रकुमार 'वेदाध्ययन करते हैं। उनके भोजनादि का प्रबन्ध श्रीदुर्गाचैतन्य ब्रह्मचारी की प्रेरणा से जो अब कैलाशवासी हो गये हैं—नेपाल महाराज की ओर से होता है। इसी के पास उत्तर तरफ दरभंगे वाले की धर्मशाला है।

पद प्रक्षालन तीर्थ (गोड़धोई पोखर)

ब्रह्मचर्याश्रम से पश्चिम सटा हुआ ही यह तीर्थ है अगहन मास में शुक्ल पंचमी और पूर्णिमा के दिन इसकी यात्रा होती है, यहाँ पर श्रीशिवमानस राजहंस पूर्णपरात्पर परब्रह्म के रमणीय रस विग्रह दूलहा भगवान् (मिथिला की मधुर बोली में नौशेबबुआ जी) के चरणारविन्दों को ऐश्वर्य और माधुर्य तत्वसारज्ञ राजर्षि जनक जी ने महारानी सुनैना जी के समेत बड़े प्रेम से पखारे थे। यह प्रसङ्ग श्रीगोस्वामी जी की अमर वाणी में सुनिये—

कनक कलश मणि कोपर रूरे। शुचि सुगन्ध मंगल जल पूरे॥
निजकर मुदित राय अरुरानी। धरे राम के आगे आनी॥
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी॥
वर विलोकि दम्पति अनुरागे। पाँय पुनीत पखारन लागे॥
लागे पखारन पाँय पंकज प्रेम तन पुलकावली।
नभ-नगर-गान-निशान जय धुनि, उमंगि जनु चहुँदिशि चली॥
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विराजहीं।
जे सुकृत सुमिरत विमलता मन सकल कलिमल भाजहीं॥
जे परसि मुनि वनिता लही गति रही जो पातक मई।
मकरन्द जिनको शम्भु शिर शुचिता अवधि सुर बरनई॥
करि मधुप मन मुनि योगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय-जय सब कहैं॥

इसके पश्चिम जानकी नगर नाम का मुहल्ला है। दक्षिण तरफ कुछ हटकर सड़क के किनारे सन्तों के आश्रम और मंदिर

हैं, उत्तर तरफ 'हाट' लगता है, इधर इसको 'पिठिया' बाजार कहते हैं, रवि और बुधवार हफ्ते में दो दिन यहां गांव की देहाती सभी चीजें रोजाना काम आने वाली बिकने आती हैं, दूकान की अपेक्षा 'हाट' में चीजें अच्छी सस्ती और जरूरत भर की मिल जाती हैं। शाक-भाजी-फल-आटा-दाल-चावल-गेहूं-अन्न-गुड़-लोहे लकड़ी का सामान-मसाले आदि सब कुछ मिलता है। इसके पश्चिम की ओर नेपाल का आकाशवाणी स्टेशन है। दुःख है कि इस तीर्थ को लोगों ने अत्यन्त गंदा कर रखा है।

पुरन्दर सर

इसी 'हाट' से उत्तर 'पुरन्दर-सर' है इसके पश्चिमोत्तर कोण पर दो एक संतों का निवास है; परन्तु यह धोबी लोगों को कपड़े धोंने के सिवा और किसी काम में नहीं आता, इसकी ओर ध्यान देना आवश्यक है, माघशुक्ला ५ बसन्त-पञ्चमी के दिन इसकी यात्रा होती है।

जो सम्पदा नीच गृह सोहा। सो विलोकि सुर नायक मोहा॥
रामहिं चितव सुरेश सुजाना। गौतम श्राप परम हित माना॥
देव सकलसुरपतिहिं सिहाहीं। आज पुरन्दर सब कोऊ नाहीं॥

देवेन्द्र को यह सुख श्रीराम विवाहोत्सव के अवसर पर यहीं प्राप्त हुआ था ऐसी मान्यता है।

महाराज--सागर

यह विशाल सरोवर चारों ओर संतों के निवास से परम रमणीय लगता है, कहते हैं—"इसमें एक बार सोने की मोटी

सी एक जंजीर पानी में तैरती सी निकली थी, लोग पकड़ने गये तो जिसने पहले हाथ लगाया उसके समेत विलीन हो गयी।' इसका बड़ा महत्व है, सरस्वती देखकर कामान्ध ब्रह्माजी का एक मस्तक शिवजी ने क्रोध पूर्वक त्रिशूल से काट डाला था अतएव उन्हें ब्रह्म हत्या लगी, और वह कपाल (शिर) उनके हाथ में चिपक गया, इस पाप को छुड़ाने वे भूमण्डल में अनेकों तीर्थों में गये, विधिपूर्वक स्नानादिक किया परन्तु उनका वह पाप न छूटा। पति के कष्ट से दुःखित पार्वती जी भगवान् के शरण गई, उसी समय देवर्षि नारद जी वहाँ पहुंचे, वहीं प्रभु के पूछने पर नारद जी ने महाराज सागर की महिमा सुनाई और कहा कि—

ब्रह्माण्ड गत तीर्थाणि स्नात्वायत्फलमश्नुते ।
महाराज सरो दृष्ट्वा तत्कोटि गुणितोऽधिकम् ॥ ३३ ।
यत्र स्नात्वा जामदग्न्यो विमुक्तो मातृ हत्यया ।
यत्रोत्सवो महानासीद्विवाहे जानकी पतेः ॥ ३४ ।

अ० १७ बृहद्विष्णुपुराणीय मिथिला माहात्म्य ।

'समस्त ब्रह्माण्ड के तीर्थों का सविधि स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है उससे कोटि गुणाधिक फल 'महाराज सर' के दर्शन यात्रा से होता है। जहाँ स्नान कर पूर्वकल्प में परशुराम जी मातृ हत्या से मुक्त हुए और जहाँ प्रभु श्री जानकी वल्लभजू के विवाह का महोत्सव हुआ था। जहाँ के मत्स्यभी सच्चिदानन्द स्वरूप हैं आपतो सब कुछ जानते हैं वहीं जाकर परम सुखी हो जाइये।' भगवान् भवानीनाथ यह सुनकर

मिथिला आये और 'महाराज सर' का दर्शन करते ही हाथ से मस्तक छूट गया, स्नान करते ही परमानन्द स्वरूप होगये, अम्बिकापति नीलकंठ महादेव जी 'महाराज सर' का यशोगान गाते कैलाश पधारे। उस दिन से इसका दूसरा नाम 'कपाल मोचन भी पड़ गया। यहाँ विवाह पञ्चमी (अगहन शुक्ला पञ्चमी) के दिन भारी मेला लगता है। इसके पश्चिम घाट पर श्री कोशलेन्द्र चक्रवर्ती महाराज दशरथ जी का मन्दिर है। उत्तर और पूर्व कोण पर मंगलमूर्ति हनुमान जी का मन्दिर है। दक्षिण ओर सन्तों के आश्रम और मन्दिर हैं। इसका जल स्वच्छ और गँभीर रहता है।

स्वर्ण-मण्डप

'महाराज सागर' के दक्षिण और पूर्व कोण पर 'स्वर्ण-मण्डप' है, यहाँ विवाह पञ्चमी और रामनवमी के दर्शन का बड़ा महत्व है। इसको श्री व्यास जी का स्थान कहते हैं।

'मण्डप' मिथिला में कई जगह है, एक जानकी मंदिर से उत्तर 'मड़वा' के नाम से प्रसिद्ध है, एक 'मणिमण्डप' के नाम से प्रसिद्ध है जो रत्नसागर से उत्तर रानी बाजार के पास है और अत्यन्त चमत्कारपूर्ण है, वसहिया में एक 'भरत-मण्डप' है, एक राम मन्दिर ही मण्डप माना जाता है। आनन्द रामायण में घर-घर मण्डप की सजावट का बर्णन है। तुलसीकृत में 'जनक नगर की शोभा जैसी। गृह-गृह प्रति-पुर देखिय तैसी' इससे लोग बहुत से मण्डप बनने का अनुमान लगाते हैं।

श्रीराम मन्दिर का भीतरी सिंहासन

श्री सीताराम लक्ष्मण जी का पुण्य दर्शन

मिथिला माहात्म्य के अनुसार श्रीराम मन्दिर ही 'विवाह मण्डप सिद्ध होता है, बारात की विदाई के समय मृत प्रायः बने श्री विदेह महाराज को धैर्य प्रदानार्थ प्रभु ने कहा है कि-

म भ्रातृकां ससीतां च स्वमूर्तिं स्थापयाम्यहम् ।
मण्डपे सर्व शोभाढ्ये ततो यास्येगृहं प्रति ॥ ८।२२

'भाइयों के और सीताजीके समेत मेरी मूर्ति स्थापन करके मैं घर जाऊँगा' ऐसा श्रीराम पञ्चायतन का प्राचीन विग्रह श्रीराम मन्दिरमें ही है। विश्वकर्मा द्वारा निर्मित मूर्ति पधराकर पुनः प्रभु ने कहा है—

'गङ्गा सागर के स्नात्वा कृत्वा च तर्पणादिकम् ।
सुवर्ण मण्डपं स्पृष्ट्वा दृष्ट्वा मन्मूर्तिमुत्तमाम् ॥ ३३
स्तुत्वा नत्वा च यो भक्त्या ब्रह्म प्राप्नोत्यसंशयः
कालस्य नियमो नास्ति अत्र तिष्ठाम्यहं सदा ॥ ३३
मज्जन्मनि विशेषेण यात्राकार्या मुमुक्षुभिः ॥'

'गङ्गासागर का स्नान कर स्वर्ण-मण्डप छूकर मेरी मूर्ति का मनोहर दर्शन करे, भक्ति पूर्वक प्रार्थना और प्रणाम करे, वह निःसंशय ब्रह्मपद पाता है, मैं वहां सर्वदा रहता हूं इसलिये कालका कोई नियम नहीं, सदा सर्वदा दर्शन करे, परन्तु मोक्षार्थी भी श्रीरामनवमी के दिन विशेषतः अवश्य दर्शन करे।' ये सब बातें राम मन्दिर में पायी जाती हैं।

तस्मात्सर्व प्रयत्नेन जनकस्य गृहं प्रति ।
गत्वा मण्डपं दृष्ट्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥८।३५॥

'गङ्गासागर स्नान कर आते समय पहले जनकजी का मन्दिर मिलता है तब मण्डपाकार स्वर्ण छज्जा से भूषित राम मन्दिर। आज यात्रियों को और भावुक भक्तों को तो सभी मण्डपों के स्नेह पूर्वक दर्शन करने चाहिये। सभी परम पूज्य है। तथा श्रीजानकी मन्दिर के दिवङ्गत महान्त श्रीनवलकिशोरदासजी महाराज को संगृहीत सामग्री लेकर नेपाल राज्य की ओर अभी एक नवीन मण्डप का निर्माण श्रीजानकी मन्दिर के समीप उत्तर दिशा में हो रहा है।

रङ्ग-भूमि

इसको 'बर बीघा' का रमना भी कहते हैं, श्रीरामविवाहोत्सव के अवसर पर यहाँ 'बरात' इकट्ठी होकर 'श्रीजानकी महल' जाती है। यह 'महाराज सागर' से उत्तर है, नैपाली बड़े नाप के १२ बीघा जमीन मैदान के रूप में सदा के लिये सुरक्षित रखी गयी है। श्रावण में शुल्कातीज के दिन 'झूलन का मेला' भी यहीं उत्तर तरफ श्रीजानकी बाग में होता है। इसके पश्चिम भाग में श्रीमौनी बाबा करपात्री जी का 'श्रीसाकेत बिहारी जी का मन्दिर' हैं, जिसको श्रीमणि पर्वताधीश का मन्दिर भी कहते हैं। यथार्थतः प्राचीन रंगभूमि तो 'धनुषाजी' है, यह प्रतिवर्ष विवाहोत्सव के लिये सन्तों के भावुक हृदय की देन है। इसके पूर्व तरफ एक सन्त के मन्दिर में चारों राजकुमारों के सपत्नीक दर्शन होते हैं दक्षिण तरफ 'अमृत बाग में पहले 'अमृत कुण्ड' था अब तो केवल नामलिखा पत्थर गड़ा हुआ है। इसके दक्षिण तरफ श्रीरामानंद-

संघ के श्रीवैष्णवों ने 'श्रीतुलसी-स्मारक' बनाया है और श्री-तुलसी जयन्ती प्रतिवर्ष यहीं धूमधाम से मनायी जाती है।

सङ्कट मोचन

रङ्गभूमि से थोड़ा उत्तर श्रीसंकट मोचन हनुमान जी का मंदिर है, वीरासन से भक्त भयभञ्जन आशीर्वादी मुद्रा से विराजमान महाबीर जी के विशाल विग्रह का दर्शन भव-संकट छुड़ाकर परमसुखी कर देता हैं। जनकपुरमें श्रीहनुमान-जी का यह प्रसिद्ध मन्दिर है।

अरगजा कुण्ड

रङ्गभूमि से लगा हुआ उत्तर तरफ 'अरगजा कुण्ड' है। भगवान् रामचन्द्र को विवाह के समय अंगराग (उबटन) लगाकर सुगंध वासित निर्मल जल से स्नान करवाया गया था। श्रद्धापूर्वक इसमें स्नान करने से चर्म रोगों से छुटकारा मिलता है। काशी अस्सीतट वासी देवदत्त ब्राह्मण को शिवजी और वृषभ के श्राप से कुष्ट रोग होगया था, उपदेश दिया कि श्रीमिथिलाजी जाओ, तुम्हारे सब दुःख नष्ट हो जायँगे। उनका उपदेश सुनकर 'देवदत्त' मिथिला आया, रास्ते में मिथिलावासी चर्मकार के दर्शनमात्र से उसकी व्याधि छूट गयी, और 'अरगजा-कुण्ड' का स्नान करने से दिव्य देह पाकर प्रभु के धाम चला गया।

अङ्गरागाभिधं तीर्थममृतोदक संयुतम्।
कर्मणा मनसा वाचा यत्पापं समुपार्जितम्।
स्नान मात्रेण तत्सर्वं नश्यते नात्र संशयः॥

—मि० मा० ११--४१।

इस कुण्ड के पश्चिम घाट पर श्रीसीतारामजी का मन्दिर है। और पूर्वोत्तर कोण पर नेपाल की 'टेलीफोन आँफिस, है, दक्षिणघाट पर संकीर्तन भवन का नवनिर्माण हो रहा है। तथा दिवङ्गत श्री महान्त जी महाराज की चरणपादुका है।

श्रीरामानन्द-आश्रम

श्रीदुलहा भगवान का मन्दिर

रङ्गभूमि से पश्चिम विहार-कुण्ड, रत्नसागर आदि जाने का जो रास्ता गया है जिसका नगरपालिका ने श्रीरामानन्द मार्ग नाम रक्खा है उस रास्ते में 'पाकवती' सर के चारों ओर सन्तों के निवास हैं, और थोड़ा आगे बढ़ने पर रत्नभवन मिलता है, उससे आगे राजमार्ग से पश्चिम तथा श्रीरामानन्द मार्ग से दक्षिण श्रीरामानन्द-आश्रम है, इसे 'श्रीमिथिला कनक भवन 'और' दुलहा भगवान का मन्दिर भी कहते हैं, यहाँ अत्यन्त मनोहर श्री कनक भवन विहारी-विहारिणीजू की सुन्दर झाँकी के दर्शन होते हैं, मिथिला की भावना के अनुसार 'कोहवर-कुञ्ज' में प्रभु यहां दुलहा रूप में विराजमान हैं, इसलिये दुलहा भगवान् का मन्दिर कहते हैं श्रीसम्प्रदायाचार्य भगवत्पाद श्रीरामानन्दाचार्य जी महाराज के श्री विग्रह तथा 'चरण पादुका' विराजमान हैं, इसलिए प्रधान नाम 'श्रीरामानन्द-आश्रम' प्रसिद्ध है। श्रीरामानन्द-जयन्ती (माघ कृष्ण सप्तमी) के दिन प्रतिवर्ष बड़ा समारोह एवं भजनोत्सव होता है, अन्य पर्व श्रीरामनवमी; श्रीजानकी नवमी, विवाह पञ्चमी,

श्रीजनकपुर धाम का प्राचीन सन्त सेवी प्रसिद्ध स्थान

श्रीविहार-कुण्ड (श्रीजानकी-ह्रद)

श्रीजनकपुर का सर्वप्रिय सर्वश्रेष्ठ सरोवर, श्रीकिशोरीजीके जलविहार का रमणीय स्थल
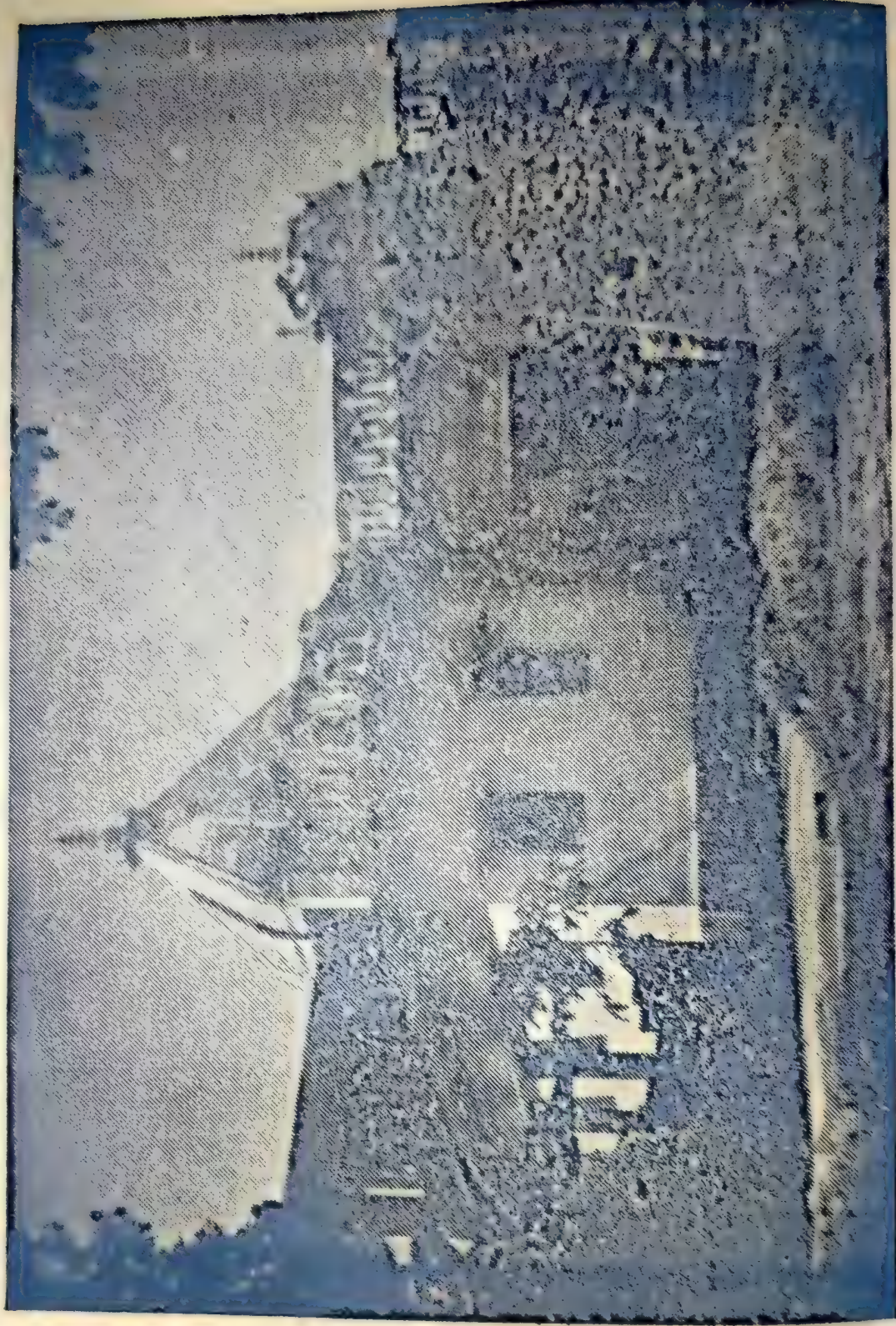
झूलन-होली-शरद् अन्नकूट आदि अवसरों पर यहाँ का साज शृङ्गार अनुपम होता है। एक बार जो यहाँ दर्शन कर लेता है उसे बार-बार दर्शन करने की लालसा लालायित कर देती है। श्रीदुलहा सरकार के द्वार पर श्रीमन कामना सिद्ध श्री-हनुमानजी तथा श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज के दिव्य दर्शन होते हैं। जनकपुर के यात्रियों को यहाँ एक बार अवश्य दर्शन करना चाहिये। इन पंक्तियों के अधम लेखक को श्रीकिशोरीजी ने यहीं शरण प्रदान कर कृतार्थ किया है। सत्संगी सज्जनों को शास्त्रावलोकन और प्रश्नोत्तरादि द्वारा हरिचर्चा करने का यहाँ परम लाभ प्राप्त होता है। वैष्णव सिद्धान्तों को समझने की जिज्ञासा वाले वहाँ आकर पूर्ण, सन्तोष प्राप्त करते हैं।

विहार-कुण्ड (श्रीजानकी हृद)

श्रीरामानन्द आश्रम से पश्चिम सन्तों के मन्दिर और आश्रम हैं। आगे आम के बगीचे से बाएँ एक रास्ता घूम गया है। उसी रास्ते पर 'रानीपट्टी तोताद्रि मठ' मिलता है, यह श्रीरामानुजीय श्रीवैष्णवों का मन्दिर है, इसमें श्रीबरदराज भगवान् और श्रीसीता राम लक्ष्मण जी की प्राचीन प्रतिमाओं के मधुर दर्शन होते हैं। आगे मिथिला के प्रसिद्ध रमणीय सरोवर 'विहार-कुण्ड' के दर्शन मिलते हैं। इसका जल सदा निर्मल गम्भीर और सुस्वादु बना रहता है, इसके चारों ओर सन्तों के आश्रम और मन्दिर हैं, यहाँ का दृश्य बड़ा सुन्दर है, श्री मिथिलेश राजनन्दिनी अपनी अन्तरङ्ग सखियों के समेत यहाँ जल विहार के लिये पधारतीं थीं, इसीलिये यह

'विहार-कुण्ड' और जानकी ह्रद के नाम से प्रसिद्ध है, नीशीथ काल में यहाँ प्रेम से श्रीसीताराम नाम रटते हुए परिक्रमा करने वालों को जल लहरियों के साथ-साथ प्रभु कृपाके अलौकिक अनुभव प्राप्त होते हैं, श्रद्धापूर्वक कुछ दिन ऐसा करने से अवश्य परमानन्द प्राप्त होता है। यहाँ जुगल जोड़ी-वनिया मन्दिर और 'श्रीयुगल बिनोद-कुञ्ज' (श्रीरामदासजी का स्थान) प्रसिद्ध सन्त सेवी वैद्यराज श्रीरामप्रिया शरणजी का स्थान, श्री चारुशीला कुञ्ज, श्री बौधायन-आश्रम, आदि दर्शनीय है। विवाह पञ्चमी और श्रीजानकी नवमी के दिन यहाँ की विशेष पर्व यात्रा होती है। इसके जीर्णोद्धार के समय कई प्राचीन प्रतिमायें आदि वस्तुएँ निकली थीं, जो कुछ दिन सन्तों की पर्ण कुटियों में रहकर अब नष्ट हो गई हैं। रसनिष्ट सन्तों का यह परम भावास्पद तीर्थ है। पहले अन्तर्गृही परिक्रमा यहीं से उठती थी। निशीथ वेला में एकान्त मनस भजन करने से तथा परिक्रमा लगाने से कभी कभी अत्यन्त विलक्षण चमत्कार यहाँ सन्तों को दिखायी दिये हैं।

रसिक--निवास

यह विहार-कुंण्ड से दक्षिण बलवाटोल से पूर्व में है, यहाँ श्री रसिकअली जी नाम के प्रसिद्ध मधुर रसोपासक सन्त हो गये हैं, ये बड़े कवि विद्वान् एवं भजनानन्दी थे, इनके रचे २४ ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, उनमें कई प्रकाशित भी हुए हैं फिर भी उनका सर्व सुलभ संस्करण आवश्यक है। सुना जाता है कि इनकी दिव्यलोक यात्रा के समय मिथिलापुरी भर में अन्तरिक्ष दुन्दभी नाद सबको सुन पड़ा था।

ज्ञानकूप--विद्याकूप

ये विहार-कुण्ड से पश्चिम हैं, यहां पर विदेह महाराज की ज्ञानसभा' लगती थी और विदेहवंशीराजकुमारों का विद्यालय (ऋषिकुल) था, यहाँ बैठकर भजन करने वालों को अनेकों प्रकार के दिव्य अनुभव प्राप्त होते हैं । श्री दिव्य धाम साकेत वासी परमहंस श्रीसियालाल शरण जी को यहाँ ऐसे दिव्यसुख मिले थे।

विद्या कूप जले स्नानात्पानाद्विद्यानिधिर्भवेत् ।
ज्ञानकूप समाश्रित्य त्रिकालज्ञो भवेन्नरः

—रुद्रयामल, मि० माहात्म्य ।

विद्याकूप के जल से स्नान-पानादि करने से विद्यानिधि बनता है और ज्ञान कूप का आश्रय लेने वाला त्रिकालज्ञ बन जाता है। ये 'श्री मौनीय संस्कृत विद्यालय' के हाते में है, इस विद्यालय को अब नेपाल राज्य ने 'संस्कृत कोलेज' बना दिया है। सब प्रबन्ध राजकीय हो गया है। निमि और नव-योगेश्वरों का श्रीमद्भागवत प्रसिद्ध पुण्यसंवाद् यहीं हुआ था, यहीं ज्ञानोपदेश देते समय मुनियों को महाराज विदेह के प्रति ऐसा भाव पैदा हुआ कि 'जब हम गृहत्यागी माया से परे न हुए तो ये राज सुख भोगने वाले कैसे हो सकते हैं? इनका ज्ञान केवल शब्दाडम्बर मात्र ही है, दैवेच्छा से उसी समय मिथिला में आग लगी, मुनि सब भागे तुम्बा कौपीन बचानेके लिये परन्तु श्रीविदेह महाराज निर्द्वन्द बैठे रह गये, जब वे सब लौटकर पुनः आये तब पूछने पर आपने कहा—

'मिथिलायां प्रदग्धायां न मे किञ्चित्प्रदह्यति ।'

मुनीश्वर विदेह महाराज का आन्तरिक्त भाव समझकर नत मस्तक हो गये । यहीं पर ब्रह्मतत्त्व के परमोपदेष्टा के रूप में याज्ञवल्क्य को गायें उपहार में मिली थी, अभी तक यह ज्ञानोपदेश का भवन बना हुआ था । इसके पास 'शतानन्द-कूप' भी है ।

दूधमती गङ्गा

ज्ञानकूप से दक्षिण सीता कुण्ड स्थान है, जो पहले सन्त सेवा में प्रसिद्ध था । परन्तु अब नष्टप्राय हो गया है । उसके आस-पास में सन्तों की पर्ण कुटिया भी है, ज्ञानकूप से पश्चिम सीधी एक पगदण्डी दूधमती तट पर गई है, यह सन्तों की भजन भूमिका है, यहाँ श्रीस्वामी प्रेमदास जी महाराज और श्रीराम बाबा नामके दो भगवत्प्रेमी अनन्य नामानुरागी सन्त हो गये हैं । श्रीस्वामी प्रेमदास जी महाराज ने एक दफे श्रीसीताराम नाम नवान्हिक अखण्ड कीर्तन के अवसर पर दूध के अभाव में दूधमती के जल से तस्मई (खीर) प्रसाद बनाकर सन्तों को पवाया था, और कई प्रेमियों को 'दूध की धारा के प्रत्यक्ष दर्शन कराये थे । दूधमती सरस्वती का अव-तार है, अन्तः प्रवाह रहता है, कहीं गुप्त कहीं प्रकट हो जाती हैं, इसका बड़ा महत्त्व है । श्रीजानकी जी के जन्म के अवसर पर सभी देवों ने नाना प्रकार के वस्त्रालङ्कार समर्पण कर जग-द्धात्री की सेवा की, उस समय कामधेनु ने धरणीजा को स्तन-पान कराया था, वाल आनन्दोद्रेक से स्थनों से दूध बहा

जाता था तथा चपलता वश दूध पीते समय श्रीकिशोरीजी जो फेन नीचे गिराती थी वह दूधमती के नामसे जनकल्याणार्थ श्रीमुख प्रसादी स्वरूप नदी बन गयी, हर्षोल्लसित कामधेनु ने भी खूब दूध पिलाकर सेवा रस लूटा, मिथिला माहात्म्य में कहा है—

जानकी प्रिय कामार्थे जनकस्य गृहेस्थिता।
जानकी धात्री भूतासा कोटि कल्मष नाशिनी ॥१८।१६
वासो दुग्धमती तीरे कुर्यात्क्षणमपि द्विज।
जन्म जन्मान्तरात्पापाद्वास मात्रेण मुच्यते ॥१८।२४॥

यदि दैव योग से यहाँ मृत्यु हो जाय तो प्रभु का परमधाम मिलता है। इसकी श्रद्धापूर्वक यात्रा करने से श्रीजनक लडैतीजू प्रसन्न होती हैं। श्रीजानकी नवमी (वैशाख शुक्ल ६) को यहां पर्व यात्रा होती है। अगहन में इसके स्नान का विशेष महत्व है। इसका विन्दुमात्र भी कोटि जन्मोंके पाप धो देताहै।

अग्नि--कुण्ड

दूधमती से लौटकर पुनः ज्ञानकूप पर आकर उत्तर की तरफ बढ़ने से 'अग्नि-कुण्ड' मिलता है, यहाँ महाराज विदेह के समय में यज्ञीय पावक रहता था। यहाँ भी मन्दिर और सन्त निवास हैं। यहीं परमहंस वैदेही शरणजी होगये हैं। जिनका 'युगल किशोर कुञ्ज' कुण्ड से पश्चिम है, ये कवि-लेखक और मिथिला धाम के अनन्य प्रेमी थे, इन्होंने तीर्थ क्षेत्रों पर तीर्थ का नाम और पर्वयात्रा तिथि लिखवाकर सर्वत्र पत्थर गड़वाये हैं, ये श्रीरामानन्दीय श्रीवैष्णव और मैथिल

ब्राह्मण थे। अग्नि-कुण्ड में कभी-कभी इन्द्र धनुष की भांति धनुष का उदय होता है, और कभी लगातार कई दिन रह जाता है, उसको पाताल स्थित धनुष खण्ड मानकर लोग पूजते और दर्शन करते हैं। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन यहाँ मेला लगता है। इस कुण्ड पर श्रीगुप्त रामजी और राजारामशरण जी अच्छे सन्त होगये हैं ? श्रीरामकृपालु शरणजी और श्री-रामदुलारीशरण जी दो विद्वान् सन्त इसी कुण्ड पर निवास करते हैं।

रत्न--सागर

अग्नि-कुण्ड से पूर्व की ओर चलने पर मध्यमा सर मिलता है, उससे आगे रत्नसागर के दर्शन होते हैं। यहां सन्त सेवा में सुप्रसिद्ध सिद्धयोगी सन्त बाबा श्रीनारायणदास जी महा-राज होगये हैं, जिन्होंने एकबार 'सवालक्ष' संतों को आमन्त्रित किये थे, अभीतक यहां की सन्त सेवा प्रसिद्ध थी अभी भी समयानुकूल सन्त सेवा होती है यहां श्रीजनकजी का 'रत्न-भण्डार' रहता था। इसके दक्षिण मुँहार पर 'रत्न सागर' मन्दिर और झूलन गृह है, पश्चिम तरफ सुन्दर पुष्पवाटिका और उत्तर तरफ भी दो तीन मन्दिर हैं, पूर्व तरफ हनुमान जी का मन्दिर और जम्बूवन है। इसके उत्तर तरफ 'पिंडारीटोल' है जिसमें 'पिंगला' नाम की वेश्या रहती थी, उससे उत्तर 'रानी बाजार' नाम का मैदान है और वहीं पयसरणी कुण्ड है। 'रानी बाजार' जनकजी का 'रनिवास माना जाता है।

मणि--मण्डप

यहाँ छोटे-छोटे दो टीले हैं, उन्हें मडँवा और चौरी या वेदी कहते हैं, लोगों का कहना है कि यहां कोई रात में वस नहीं पाता, उपद्रव होता है, यहां एकान्त भजनानन्दी सन्तों को दिव्य अनुभव हो जाया करते हैं। लोग बड़ी श्रद्धा से दर्शनार्थ आते हैं और पुण्यभूमि की पावनरज में लोटते हैं, यहां मण्डप का दर्शनीय स्वरूप बन जाय तो प्रेमियों की और भी प्रसन्नता बढ़े। स्वर्ण-मण्डप की भांति कल्पभेद से यहां भी कभी विवाह मण्डप रहा होगा। कितने सन्तों का भाव है कि यहां प्रभु मणि-मण्डप में विराजमान होकर नृत्यवाद्यादि रहस्य सुख दान करते थे। यह रत्नसागर से उत्तर आधा मील करीब है। स्थान चमत्कारी है, दश वर्ष पहले इसमें स्वर्ण के नाव पर रत्नसिंहासन के प्रत्यक्ष दर्शन हुए थे।

रुक्मणी और वलदेव सर

रत्नसागर से पुनः "श्रीरामानन्द आश्रम" होते हुए रङ्ग-भूमि आकर उत्तर पूर्व कोण तरफ जाय तो रुक्मणी सर मिलता है, अथवा रत्नसागर के पासही परिक्रमा वाली सड़क से सीधे पूर्व कुछ दूर चलने पर 'ब्रह्मपुरी' के बाद 'रुक्मणी सर' मिलता है। उसीके पास 'वलदेव सर' भी है, 'स्यामन्तकमणि' की खोज में शतधन्वा के पीछे निकले हुए प्रभु श्रीकृष्णचन्द्रजी और बलरामजी मिथिला के उपवन में उसे पकड़ पाये, परन्तु उसे मार डालने पर भी मणि न मिलने पर दोनों को वड़ा

खेद हुआ, उसी समय बलदेव जी ने—"अहं विदेह मिच्छामि द्रष्टुं प्रियतमं मम" (१० । ५८ । २४ भागवत) कहकर मिथिला चले आये और "उवासतस्यां कतिचिन्मिथिलायां समाः ततः" मन लगने से कई वर्ष रह गये। उन्हीं की यादगारी में यह 'बलदेव' सर है। भगवान् श्रीकृष्ण भी राजा 'बहुलाश्व, और 'श्रुतदेव, ब्राह्मण के यहाँ अतिथि होकर पधारे थे (भाग० १०-८६) उस समय रुक्मणीसर-गोपालसर-मुरलीसर आदि उसके पुण्य स्मरणार्थ बनाये गये होंगे। इनकी पर्वयात्रा श्रावण मास में होती है। यहाँ दो एक वैष्णव सन्त भी बस गए हैं। इसके पश्चिम तट पर श्रीरामस्वरूप साहु ने हाई स्कूल तथा श्रीसरस्वती मंदिर भी बनवाया है, पूर्व तट पर कन्या विद्यालय भी बनवाया है।

स्टेशन

'रुक्मणी सर' से थोड़ा पूर्व स्टेशन पड़ता है, यहाँ धान की दो मीलें और दो चार रईस बस जाने से व्यापारी लोगों का जमाव रहता है। कुछ दूकानें भी होगई हैं। स्टेशन से जानकी मन्दिर आधा मील लगभग है। अब रूस की सहायता से बड़ी भारी 'सिगारेट-फैक्टरी' बन जाने से आधा शहर इसी के आस-पास में बस गया है।

यों तो यहाँ तीर्थ मन्दिर-कुण्ड और अन्य ऐसे अनेकों स्थान हैं परन्तु मुख्य-मुख्य तीर्थों का दिग्दर्शन पाठकों को कराया गया है। विशेष जिज्ञासुओं को 'मिथिला माहात्म्य' देखना चाहिये। साथ ही उन तीर्थों का संक्षिप्त महत्व-कथा-इतिहास भी इसलिये लिख दिया गया है कि उसे पढ़कर उन स्थानों पर जो लीलायें हुई हैं उनका ध्यान भी होता रहे और माहात्म्य ज्ञान पूर्वाहि भक्तिः प्रेम निगद्यते' भी चरितार्थ हो।

मिथिला की परिक्रमायें

'पुर रम्यता राम जब देखी। हरषे बन्धु समेत विशेषी ॥
वापी-कूप-सरित-सर नाना। सलिल सुधा सम मणि सोपाना ॥
गुञ्जत मञ्जु मत्त रस भृङ्गा। कूजत कल बहु बरण विहंगा ॥
बरण-बरण विकसे जल जाता। त्रिविध समीर सदा सुखदाता॥

सुमन-वाटिका बाग बन, विपुल विहंग निवास।
फूलत--फलत सुपल्लवत, सोहत पुर चहुँ पास ॥'

यह 'श्रीराम चरित मानस' कथित सभी बातें केवल 'मणि सोपाना' छोड़कर आज भी यहाँ प्रत्यक्ष देखने में आती हैं। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य आज भी वैसा ही है, मित्रो! "गृह कारज नाना जंजाला। ते अति दुर्गम शैल विशाला" शनैः-शनैः धैर्य के साथ लाँघकर एक बार तो इस लोकललाम मिथिला धाम का दर्शनकर जीवन सफल बनाओ! देवदुर्लभ मानव तन भी फिर क्षणभंगुर ही तो है, आखिर हम व्यावहारिक कामों में भी कितना समय नष्ट कर देते हैं और मनमाना काम न होने पर पछताते हैं, तब यहाँ तो सिवा लाभ के कष्ट तो कुछ होना ही नहीं है। जो जिसको सच्ची लगन से चाहता है वह उसे अवश्य प्राप्त होता है, यह ईश्वरीय नियम है, हमें भी सच्ची लगन लग जायगी तो यह लाभ अवश्य प्राप्त हो सकेगा, जितनी श्रद्धा की कमी होगी उतनी ही देर होगी। बन्धुओ! हृदय की समस्त मलिनता एवं कुतर्क वादों का एकान्त त्याग करके प्रभुपदरज मण्डिता माँ मिथिला की प्रेममयी प्रतिमा का

दर्शन कर कृतार्थ बन जाओ। जहाँ की चिड़ियाँ भी "सखि सीता कहो" और 'सीता' आदि मधुर शब्दों द्वारा महात्माओं के मन को मुग्ध बना देती हैं, उस 'हरिततृण संकुला सजला-सफला-सस्यश्यामला कदली रसाल वनोपेता भूमि की पुनीत रज में लोटकर पाप पुञ्जों को नाश कर परमप्रेम के पात्र बन जाओ। यहाँ की छोटी-बड़ी किसी भी परिक्रमा के अवसर पर 'जय सियाराम' नाम ध्वनि निनादित नभ मण्डल में विचरण कर हृदय को भक्ति भावना से भर दो। सन्त-भक्तों की चरणरज के साथ-साथ प्रभुपदरज से भूषित कलेवर बन-कर दिगम्बर भोले बाबा का ब्रह्मसुख घड़ी भर के लिये भोग लो, फिर तो वह आजीवन स्मरणीय सर्वस्व धन हो जायगा। इसीलिये सन्तजन सदुपदेश देते हैं—

"जाय देखि आवहु मिथिलापुर।
विमल भूमि मृदु मंजु मनोहर, कलि शिथिला कर आसपासपुर॥
हिय थल अमल मैथिली पिय सह,अवशि उपजिहै प्रिय प्रेमांकुर॥
आल वाल नव नेम छेम कर, सींचहु गुरु पद प्रेम वारि कुर॥
शाखा अभिलाषा पल-पल पर, पल्लव मंजरि फल फलि है उर॥
प्रेमापरा रूप रस नव रस, नस-नस से नसि जैहें तिहुँ जुर॥
लतिका प्रेम प्रभा दम्पति सुख, युगल विहारिणी देहें श्रीगुरु॥'

—श्रीयुगल विहारिणी जी

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी भी यहाँ आकर कह गये हैं कि—
'रे मन! सीता-रटु रे।
मिथिला अवध चित्रकूटादिक, प्रभु धामन में अटु रे।'

महात्मा 'तिलाम' जी तो और भी अधिक आग्रह पूर्वक कहते हैं :—

'वैष्णव सहजहिं में बनि जात ।
चित्रकूट अवध औ मिथिला, इन तजि अनत न जात ॥
सियाराम तजि आन न जांचै, कितनै कोऊ कहात ॥
हनूमान सियाराम दुलारे, इनको हृदय लगात ॥
जन 'तिलाम' सियाराम की चेरी इनहीं को यश गात ॥

एक बार आप भी सन्तों के स्वर में स्वर मिलाकर कहिये—

वन्दौं मिथिला धाम सोहावन, पावन परम प्रकाशी ॥
जनकनन्दिनी पुरी मनोहर, वेदथली सुखराशी ॥
सेवन करत रहत निशिवासर, मथुरा-माया काशी ॥
'प्रीतिलता' की स्वामिनी सीता, केलि करत रस राशी ॥

—श्रीजानकीवर शरण जी महाराज ।

बृहत्परिक्रमा

यह परिक्रमा सम्पूर्ण मिथिला मण्डल की है, और पूर्व में कोशी नदी से प्रारम्भ होती हैं। 'सिंहेश्वर' स्थान से, जो कोशी नदी के किनारे है वहाँ से रघुनाथजी का स्मरण करते हुए चले, कौशिकी और गंगाजी के संगम पर स्नान कर गंगा-भागीरथी के किनारे शालिग्रामी संगम (सोनपुर) तक आंवे, जहाँ हरिहरक्षेत्र मेला लगता है, वहाँ से शालिग्रामी तटपर चलते हिमालय की वनश्रेणी में विचरते हुए पुनः कोशिकी किनारे कामेश्वरनाथ और सिंहेश्वरनाथ का दर्शन कर

परिक्रमा पूर्ण करे। यह शास्त्रीय पद्धति है, इस परिक्रमा को कोई भाग्यशाली विरक्त सन्तजन ही कभी कभी करते हैं।

परिक्रमा के समय पालनीय नियम

जब तक परिक्रमा पूर्ण न हो तब तक ब्रह्मचर्य--शुद्ध सात्विक भोजन--मन वाणी एवं शरीर की पावनता और इन्द्रियसंयम रखना चाहिये। झूठ और क्रूर भाषण विलाप और बकवाद का त्याग कर देना चाहिये, निरन्तर भगवन्नाम जपतेहुए आवश्यक बातेंजो-प्रिय सत्य और हितकर हो-बोलनी चाहिये। मल-मूत्र-थूकना आदि बाईं ओर ही सदा करे। निवास, शयन और विश्राम भी परिक्रमा के बाहर बाईं ओर करे। प्रभु की पूजा-तीर्थस्नान-दान-नाम-संकीर्तन कथा-श्रवण और सत्संगादि द्वारा सर्वदा प्रभु में मन लगाये रहे, रामायण-पाठ और रामलीला का ध्यान करता रहे उसको कोटिगुण फल किलता है। अन्यथा दुष्टाचरण करने से श्री-रामजी की अप्रसन्नता का भाजन बनता है, विधिपूर्वक परि-क्रमा करने वालों को अनन्त ब्रह्माण्ड की परिक्रमा का फल प्राप्त होता है—

प्रीयन्ते पितरस्तस्य प्रीयन्ते सर्व देवताः।
प्रीयन्ते राघवोरामः,स्वशक्त्यासीतया सह॥

३। ३६ मिथिला महात्म्ये।

❀ मध्य (पञ्चकोशी) परिक्रमा ❀

यह परिक्रमा फाल्गुन की अमावस्या से प्रतिवर्ष प्रारम्भ होती है इसे पञ्चकोशी और चौरासी कोशी भी कहते हैं, पन्द्रह

दिनों में पूर्ण होती है। कुल चालीस कोस चलना पड़ता है, यद्यपि माहात्म्य की कथा के अनुसार पाँच दिनों का विधान है परन्तु यात्रियों की सुविधा और भजन भाव की अधिकता के लिये सन्तों ने इसका रूप वदल दिया है, यह जनकपुर धाम के पांच-पांच कोस चारों ओर घूम गई है, इसलिये 'पञ्चकोशी' नाम यथार्थ है, मिथिलामाहात्म्य में इसका 'मध्य परिक्रमा' नाम हैं, यथार्थ में यह न तो बहुत बड़ी है और न छोटी ही है, इस लिये 'मध्य परिक्रमा' नाम भी सार्थक ही है। हजारों नर नारी आवाल वृद्ध समेत सन्त समुदाय 'जय सियाराम जय-जय सियाराम' नामध्वनि से पन्द्रह दिनों तक मिथिला मण्डल को निनादित किये रहते हैं। दिन-रात भगवन्मय जीवन हो जाता है। कहीं नाम संकीर्तन, कहीं, कथा; कहीं लीला झांकी, और कहीं सामुहिक भजन भावना से विश्रामस्थान महातीर्थ वन जाते हैं प्रत्येक पड़ाव पर सन्त ब्राह्मण और अनाश्रित गरीव भिक्षुकों के भोजनादि की सामग्री प्रचुर प्रमाण में ग्रामवासी बड़ी श्रद्धा से एकत्रित किये रहते हैं, विछाने के लिये धान का पयाल-जलावन आदि का भी पूरा प्रवंध रखते हैं। इसका वृहद् प्रचार श्री सिद्ध बावा और श्रीसियालाल शरणजी महाराज परमहंस परिव्राजक के समय में हुआ है। प्रति दिन तीन चार कोस चलना पड़ता है। सद्-गृहस्थ अपने भोजनादि का सामान वरतन-रावटी तम्बू आदि साथ लेकर चलते हैं, सन्त समूह भी चाँदनी-सामियाना-वरतनादि साथ लेकर चलते हैं, अधिकांश यात्री आम

के बगीचों की घनी छाया में सुख पूर्वक रह जाते हैं, कभी-कभी बरसात हो जाती है तो कष्ट होता है। परन्तु पास के गाँव घरों में आश्रय मिल जाता है। जहाँ रास्ते चौड़े हैं वहाँ तो उतना नुकसान नहीं होता परन्तु जहां संकीर्ण पथ आता है वहाँ लोग फसल लगे हुए हरे-भरे खेतों को चलकर साफ कर देते हैं, बैलगाड़ी और गाय घोड़ा वाले तो किसान के रोकने पर भी लूट पाट करते चलते हैं। परन्तु प्रभु कृपा से श्रद्धालु जनता सब सह लेती है। यद्यपि परिक्रमा वासियों को ये सब न करने के पाठ का उपदेश होता रहता है फिर भी सब एक से नहीं रहते। गाँजा-भाँग-तमाखू मांस मदिरादि सभी निषिद्ध वस्तुओं का परिक्रमा करने वालों को त्याग कर देना चाहिये और रसिक सन्तों की भाँति संकीर्तन अथवा नाम जप करते हुए चलना चाहिये। परिक्रमा के रास्ते पर पड़ने वाले कितने गाँव बड़े गन्दे मिलते हैं,ग्राम निवासियों को परिक्रमा वासियों के स्वागतार्थ और प्रभु कृपा फल प्राप्त्यर्थ उस दिन-जिस दिन परिक्रमा गाँव होकर चलती है पूर्ण स्वच्छता रखनी ही चाहिये। प्रत्येक विश्राम स्थल पर परिक्रमा वासियों के दर्शन और परिक्रमा करने के लिये आस-पास के लोग बड़ी श्रद्धा से आते हैं,दूकानें लग जाती हैं। मेला जम जाता है। रोजाना भोजनादि की सामग्री सभी पड़ाओं पर दुकानदारों से मिल सकती है। केवल ओढ़ना बिछावन-बरतन एवं नित्योपयोगी वस्तुओं को ही साथ लेनी पड़ती है, खन्ती-कुल्हाड़ी-लाठी छाता दियासलाई और लालटेन या बिजली बत्ती साथ रहे

तो समय पर बड़ा काम देती है। एकबार जो इस परिक्रमा का आनन्द ले लेता है उसे बार-बार परिक्रमा करने की लालसा बनी रहती है, कितने सन्त और सद्गृहस्थ नर--नारी ऐसे भी हैं, जो प्रति वर्ष यह महापुण्य प्राप्त करते हैं। अब पाठकों की जानकारी के लिये आगे पन्द्रहों गुफाओं का तथा मार्ग में पड़ने वाले तीर्थों का परिचय दिया जाता है, परिक्रमा करने वालों को विशेष जानकारी की बातें सन्त जनों द्वारा प्राप्त करना चाहिये। अब समय बदल गया है, परिक्रमा में भी चोरी बदमाशी करने वाले चूकते नहीं हैं, इसलिये यात्रियों को सदैव सावधान रहना चाहिये।

१—हनुमान नगर

दूर देश के यात्री फाल्गुन वदी चतुर्दशी को जनकपुर पहुँच जाते हैं और अमावस्या के दिन किराये की बैल गाड़ी आदि का प्रबन्ध कर लेते हैं, पहले तो आठ-दस रूपयों पर पन्द्रह दिनों के लिये 'बैलगाड़ी' मिल जाती थी। परन्तु आज-कल तो बहुत महँगी पड़ती हैं, लगभग १००) रुपये में। परिवार वालों को ही ऐसा करना पड़ता है, अधिकांश तो अपना डंडा-कुन्डा अपनी पीठ पर उठाये नाम ध्वनि करते मस्त चलते रहते हैं। दूसरों की गाड़ी में किराया देकर आप अपना सामान रख सकते हैं।

अमावस्या को सायंकाल ५ बजे लगभग श्रीजानकी मन्दिर में श्रीकिशोरी जी का दर्शन करके प्रार्थना-प्रणाम-परिक्रमा कर आशीर्वाद माँगकर प्रेमी भक्त सन्त झुण्ड के झुण्ड

झाँझ ढोलक घड़ी-घण्ट-शंख-सहनाई बजाते नामध्वनि मचाते नाचते कूदते चलते हैं, आगे-आगे 'श्री मिथिला-विहारी जी' भगवान् की पालकी चलती है, ये परिक्रमा के प्रधान ठाकुरजो माने जाते हैं। और जनकपुर से उत्तर धनुषा जी के रास्ते पर 'कचुरी' गाँव से पधारते हैं, लग-भग डेढ़ दो माइल पर 'हनुमान-गढ़ी' मन्दिर और 'हनुमान-नगर' गाँव मिलता है। आज 'मङ्गलमूर्ति मारुत नन्दन' की शरण में, 'सकल अमङ्गल मूल निकन्दन' के लिये सभी प्रेम सहित ठहर जाते हैं। भोजनादि की व्यवस्था महान्त जी की ओर से होती है, श्री मिथिला विहारी जी के खालसे में 'मिथिला-माहात्म्य' को कथा होती है, अन्य मुकामों में भी कथा-कीर्तन-लीला-झाँकी भजन भाव एवं सन्त सेवादि होते रहते हैं। जनकपुर से यहाँ आते समय रास्ते में 'मुरलीसर' 'गोपालसर' कूपेश्वर महादेव' और 'छत्रधारिणी' सर रास्ते से बाएँ पड़ते हैं।

२—कल्याणेश्वर (कलना)

प्रतिपदा को प्रातःकाल भगवन्नाम स्मरण कीर्तन करते लोग कल्याणेश्वर आते हैं। यहाँ से परिक्रमा आरम्भ होती है। यह जनकपुर से पाँच कोस पूर्व और दक्षिण कोण में है, यहाँ कल्याणेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर और कुण्ड है। परिक्रमा में लोग प्रायः नदी तालाब के किनारे उतरा करते हैं, यहाँ भी ऐसा ही होता है। हनुमान नगर से रामपुर, बौहरवा और अकौरा गाँव होकर आगे बढ़ते हैं तो 'यमुनी' नदी मिलती है, यह यमुना का अवतार पुण्यतोया पावन नदी है,

यम द्वितीया (कार्तिक शुक्ला २) के दिन यहीं पास में त्रिमला-यमुनी संगम पर मेला लगता है। आगे 'विमला' नदी मिलती है। और 'हरनै-हरलाखी' होकर कल्याणेश्वर जाते हैं, हरलाखी में हिरण्याक्ष जी का मन्दिर है। यहाँ थाना और पोस्ट आफिस भी है। यमुना नदी के उस पार 'भारत और इस पार नैपाल राज्य है। हरलाखी में साधु सन्तों को दही चूड़ा का भोजन मिलता है। इधर के जानकार परिक्रमा वासी कल्याणेश्वर में ही पहले से एकत्रित रहते हैं। यहाँ से सभी साथ-साथ चलते हैं।

३—गिरिजा-स्थान (बाग तड़ाग)

द्वितीया के दिन शीघ्र सूर्योदय के पूर्व ही स्नान पूजा करके प्रेमी जन 'जय सियाराम' नामध्वनि करते परिक्रमा प्रारंभ कर देते हैं, सुकुमार लोग कुछ जलपान कर लेते हैं, रास्ते में तीर्थ कुण्ड-नदियों का दर्शन-स्पर्श आचमन प्रणाम करते लोग नव दस बजे 'गिरिजा मन्दिर' पहुँच जाते हैं, यह 'फुल-हर' गाँव के पास है। श्रीराम चरित मानस कथित गिरिजा पूजन प्रसंग और 'पुष्प वाटिका' लीला यहीं हुई थी :=

'बाग तड़ाग विलोकि प्रभु, हरषे बंधु समेत ।
परम रम्य आराम यह, जो रामहिं सुख देत ॥

यह बाग तड़ाग भी यहीं पास में है, सायंकाल उसी जगह 'पुष्प वाटिका' प्रकरण की लीला भी होती है और 'सर समीप गिरिजा गृह सोहा' के आस पास तो मुकाम ही पड़ता है। दृश्य सुहावन है। यहाँ 'बाग तड़ाग' के किसी कृपा मूर्ति वृक्ष

के नीचे बैठकर प्रभु का ध्यान करना चाहिये—

'इत कलँगी उत चन्द्रिका, कुण्डल तरिवन कान।
सिय-सियवल्लभ मों सदा, बसो हिये बिच आन ॥

* पद *

बसौ यह सिय रघुवर को ध्यान।
श्यामल गौर किशोर वयस दोऊ, जे जानहुँ के जान ॥
लटकत लट लहरत श्रुति कुँडल, गहनन की झनकान।
आपुस में हँसि-हँसि के दोऊ, खात खवावत पान ॥
जहँ वसन्तऋतु महँ--महँ महँकत, लहरत लता वितान।
विहरत ते दोउ सुमन बाग में, अलि कोकिल कर गान ॥
यह रहस्य सुख इसको कैसे, जानि सके अज्ञान।
'देव' हुँ की जहँ गति नहिं पहुँचत थकि गये वेदपुराण ॥

'बाग तड़ाग' पर एक हरिव्यासी वैष्णव सन्त का आश्रम भी है। गाँव में एक अच्छी भी ठाकुर वाड़ी है। कल्याणेश्वर से यह मुकाम लगभग चार कोस है।

मटिहानी (मृत्खनी कुण्ड)

तृतीया के दिन सूर्योदय बेला में नित्य कर्म से निवृत हो नामस्मरण करते हुये प्रेमीजन परिक्रमा प्रारंभ करते हैं, जूता-छाता और बकवाद त्याग कर सीधी सादी चाल में भजन करते हुए भक्तों का झुण्ड नाम कीर्तन की मस्ती में आता है, तब बड़ा आनन्द मिलता है, वृद्ध मातायें और बच्चों को भी नव चेतन मिल जाता है। नित्य प्रति परिक्रमा जहाँ पूर्ण करते हैं वह

जगह याद रखकर दूसरे दिन वहीं से प्रारंभ की जाती है, परिक्रमा के प्रारम्भ और पूर्ति के अवसर पर—

'जय-जय सीताराम जी, जय श्रीमिथिला धाम ।
परिक्रमा प्रारम्भ भई, चलो रटें सियाराम ॥

'भला हो-जय सियाराम जय जय सियाराम' कह कर नाम ध्वनि करते हुए नर नारी नाचने लगते हैं। उस समय संसार की सुध भूल जाती है। पापी भी पावन बन जाते हैं। पूर्ति के समय दोहे में—'परिक्रमा पूरी भई' पाठ बोलते हैं। पण्डित लोग—

नमस्ते मिथिले पुण्ये सीताराम पदाङ्किते ॥ ५२ ॥
सुरादि पूजिते नित्ये परा भक्ति प्रदे शुभे ।
रामानन्द करी तुभ्यं नमस्ते मुक्ति दायिनि ॥ ५५॥
कीटा पतङ्गा मशकाण्याश्च सर्वे जलेचरा भूमिचराश्च सर्वे ।
गच्छन्ति ते भूमि निवास पुण्यात्परं पदं योगी जनैर्दुरापम्५६
अहं पापाति युक्तोऽपि त्वया मुक्तो न संशयः ।
तस्मात्त्वां मिथिले नित्यं नमस्यामि कृपां कुरु ॥ ५७ ॥

पढ़कर विद्वता का परिचय देते हुए भक्तिभाव पूर्वक मस्तक झुकाते हैं। दस बजे तक मुकाम पर लोग पहुँच जाते हैं, यह गिरिजा-बाग से तीन कोस लगभग है। बीच में 'तुलस्याही' नामक गाँव मिलता है इसमें परम प्राचीन भगवान् विष्णु का मन्दिर है, जो भूकम्प में गिरकर झोपड़ी बन गया है, पुराने दो-एक शिलालेख भी हैं, यहाँ 'तुलसी का बगीचा' रहता था,

गोस्वामी तुलसीदास जी यहाँ कुछ दिन ठहरे थे ऐसा भी लोग कहते हैं। यहाँ से आगे पुण्यतोया 'विरजा नदी' मिलती है। इसमें स्नान करनेसे माया का रज छूट जाता है। इससे आगे मिथिला प्रसिद्ध मटिहानी स्थान मिलता है, यहाँ 'मधवापुर बाजार' तक भारत का राज्य है परन्तु 'मटिहानी' नैपाल राज्य में है, यह धनाढ्य स्थान है। नैपाल राज्य के लावारिस स्थान मटिहानी को मिल जाते हैं, जिसे यहाँ 'अपताली करना' कहते हैं। यहाँ सैकड़ों सन्त-विद्यार्थी-विद्वान् भिक्षुक और अतिथियों का सत्कार होता है, स्थान श्रीरामानन्दीय वैष्णवों का है, अपनी पाठशाला है, उसमें लगभग एक सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं, उनका सब प्रबन्ध स्थान की ओर से होता है, न्याय, वेदान्त, व्याकरण, ज्योतिष, आयुर्वेद और वेद पढ़ाये जाते हैं। यहाँ भोजन का प्रबन्ध परिक्रमा वासियों को श्रीमान् महान्त जी की ओर से होता है।

यहीं से श्रीराम विवाह के समय मण्डप के लिये मृत्तिका लायी गयी थी जिसे लोग 'मटकौर' कहते हैं। इसी लिये इसका मटिहानी नाम पड़ा है, ऐसी कथा है।

५—जलेश्वर

नित्य नियम से निवृत हो सदा की भाँति नाम धुन मचाते लोग चतुर्थी के दिन 'जलेश्वर' आते हैं। रास्ते में 'सुग्गा' ग्राम में 'शुकदेव-सर' मिलता है, यहाँ अवधूत शिरोमणि श्रीसम्प्रदायाचार्य परमहंस श्रीशुकदेवजी समय-समय पर आकर निवास करते थे। यहाँ से थोड़ा आगे चलने पर जलेश्वर स्थान

मिलता है। यह मुकाम मटिहानी से दो कोस ही पड़ता है, यहां नैपाल के 'मुखरी' जिला के कचेहरी, पोस्ट-औफिस, टेलीग्राम आदि हैं। पहाड़ी लोगों की बस्ती अधिक है, बाजार भी अच्छा है। यहाँ महादेव जी सदा जलमग्न रहते हैं कभी अवर्षण होता है, तब जल सूखता है, लोगों का कहना है कि ऐसे समय पर उनका महाभिषेक होता है तो सब जल न मालूम कहाँ चला जाता है। जलमग्न हो जाते हैं तब सुवृष्टि होती है। यहाँ 'ध्रुवसर' धुबौली' गाँव के पास है, 'गरुड़सर' महादेवमठ के पास ही है। यहाँ सन्त और भिक्षुकों को भोजन का प्रबन्ध गाँव के महाजन जो हलवाई जाति के हैं उनकी तरफ से प्रति वर्ष होता है।

६—मड़ँई (इच्छावती-तट)

पंचमी को 'मड़ँई गाँव में मुकाम रहता है, पहले 'रतवारा' में रहता था, रतवारा में जो मन्दिर भूकम्प से नष्ट हो गया उसमें लकड़ी की कारीगरी अप्रतिम थी उसके भग्नावशेष आज भी देखने को मिलते हैं। ताम्र के गुम्बज में भगवान् विष्णु की प्रतिमा और गोलाकार प्रकार में अन्य काम बहुत ही कलापूर्ण और वैष्णव भावना से भरपूर हैं। जलेश्वर से मड़ँई लगभग चार कोस है, यहाँ 'इच्छावती' नदी का स्नान होता है। गाँव वाले बड़ी श्रद्धासे परिक्रमा वासियों की सुविधा का सम्पूर्ण प्रबन्ध करते हैं। लोग कहते हैं पहले गाँव में प्रति-वर्ष आग लगती थी परन्तु परिक्रमावास होने के बाद से अभी तक कभी नहीं लगी यहाँ (एक अछूत नारी (डोमिन) जो

कौशल-किशोर की कमनीय मूर्ति देखकर मुग्ध हो गई थी, उसकी मँड़ई (झोपड़ी) थी। उसका भावपूर्ण हृदय इस पद के द्वारा जान सकते हैं—

तोपर मैं वारी साँवलिया दुलहा, तोपर मैं वारी साँवलिया ।
शिर पर चोरा कमर, पट बीरा, ओढ़े गुलाबी चदरिया ।
गल बिच हीरा चबावें मुखबीरा, विहसन करै कहरिया ॥दु०॥
छैला-छबीला नुकीला, रसीला पहिरे जामा केशरिया ।
भौहें कमान तान नैन बाण मारे, भरिके काजर जहरिया ॥दु०॥
मिथिला की डोमिन सलोनी सकुमारी, तोहरे सरहज सरिया ।
सुधि-बुधि टार भइ प्रेम मतवारी, पड़त ही बाँकी नजरिया ॥दु०॥
अब तोहरे पिछवा नहिं तजिहौं, जैहौं संग अवध नगरिया ।
सरपत की कुटिया बनायके बसिहौं, तोहरे महल पिछवरिया ॥दु०
सरयू सरित तीरे-तीरे बहारब, साँझ सुबह दुपहरिया ।
ताहि ठौर मिलिहौं नहाय जब, जैहो प्राणजीवन धनुधरिया ॥दु०
तोहिं लगि मांगब दुकाने-दुकाने, कौड़ी बीच बजरिया ।
'नेहलता' जैहौं न कबहूं अनत ठौर, ऐसेई बितायब उमरिया ॥दु०॥

७—ध्रुव-कुण्ड

मंडई से 'ध्रुव कुण्ड' चार कोस है, रास्ते में 'माण्डवी नदी' मिलती है। सदा की भांति भजन कीर्तन का यहां भी आनन्द रहता है, यहाँ ध्रुवजी का मन्दिर है और 'ध्रुव कुण्ड' दर्शनीय हैं जंगल पास ही में है परन्तु यहाँ बाग बगीचों की कमी होने से उतरने में कुछ असुविधा होती है।

८—कञ्चन वन

सप्तमी को मुकाम कञ्चन बन ठहरता है, यह ध्रुवकुण्ड से चार कोस है, रास्ता जंगली मैदानों का है, खेतों की मेंड़े भी कहीं-कहीं कूदनी पड़ती है, बीच में दो नदियाँ भी मिलती हैं, 'अनारवन' में जिवछी और वनघोषा का संगमहै। यहाँ पर थोड़ी देर तक विश्राम करते हैं,तब महर्षिगण सेवित काञ्चनारण्य में पहुँचते हैं। यहाँ का दृष्य अत्यन्त रमणीय है, विरजा नदी के पुण्यतट पर दोनों ओर मुकाम करना पड़ता है। पास ही में गहन वन नाना तरु वनलता औषधि से सुशोभित परम सुन्दर लगता है,यहाँ सन्तों के दो चार आश्रम भी हैं। वृज में वृन्दावन अवध में प्रमोदवन और मिथिला में 'कञ्चन-वन' प्रसिद्ध है यहाँ श्रीअवधकुमार और निमिवंश दुलारी जी ने प्रेम प्रणय वश होलिका उत्सव किया था, आज भी नदी का जल गुलाल अवीर और अभ्रक मिश्रित उस दिन की याद दिलाता है। यहाँ प्रति वर्ष होलिका उत्सव परिक्रमा के मुकाम पर होता है। एकान्त भजनानन्दी गुप्त-प्रकट सन्तों के निवास से यह सदा भाग्यशाली बना रहता है। यहाँ कुछ जंगल के भीतर किसी वन-वृक्ष की लता मण्डित घनी छाया में बैठकर प्रेम से ध्यान करने पर प्रभु की अलौकिक कृपा का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। जंगल के जानवर भी इन साधु सन्तों को कुछ हानि कभी नहीं पहुँचाते, यहाँ भी साकेताधीश्वरी श्रीरामप्रियाजू की मनोहर छविका अनुराग पूर्वक ध्यान कर जीवन सफल बनाना चाहिये और उन्हीं का रसमय नाम रटना चाहिये।

यह जनकलली को ध्यान है।
राम उपासक सुचि सन्तन को, सरवस जीवन प्राण है।
कञ्चन रचित सुभग भद्रासन, मोतिन की लहरान है।
तापर बैठी चन्द्र ज्योतिसी, आनन सुधा समान है।
लाल चरण तल लाले करतल, लाल वसन परिधान है।
अङ्ग-अङ्ग लखि परत मनोहर, भूषण कीन्ह मकान है।
दोउ कर कमलन कमल विराजत; सखी पवावत पान है।
चौंर ढरत गृह महँ-महँ-महँकत, बाजत देव' निशान है।
विधि हरिहर जाकहँ जपत, रहत त्यागि सब काम।
सो रघुवर मन महँ सदा, सुमिरत सियको नाम॥

श्री जू के नाम जापक पर प्रभु बड़े प्रसन्न होते हैं 'श्रीशब्द' का ही भाषा रूप' सिया है, देखिये सन्तों का उपदेश कैसा सुन्दर है—

जो ते कारण जगत के, जा बिनु मृतक समान।
जा बिनु वेद असार है, राम प्रिया सोई जान॥
चिहुँकि तकत, आनन्द छकत, वकसत बहु धन धाम॥
जग मंगल मंगल सजत, सुनि सिय मंगल नाम॥

\+ \+ \+

श्री जानकी नाम मनोहर मीठ।
जापक जन सुखदायक सीधो, जनुसिद्धन को पीठ।
रसना पर आवत जनु पायो, सीय दरश को चीठ॥
जाके मनन गुनन ते झलकत, अन्दर बाहर दीठ।
बरबश काल फाँस ते छोड़त, बड़ो जबर वह ढीठ॥

अन्दर बाहर को मल शोषत, जस अंबर को रीठ ॥
महावर हुं को करत रंगीलो, जैसे रंग मजीठ ।
जाके रस के आगे लागे, 'देव' सुधा हूँ सीठ ॥

—शृंगार प्रतीप

सो, कहते सुख ऊपजे, 'ता' कहते तम नाश ।
तुलसी सीता जो कहै, राम न छाँड़ै पास ॥

—'तुलसी सतसई'

दुःख है कि-अधिक उपजाओ के लालच में पड़कर लोगों ने 'कञ्चनवन' भी नष्ट कर दिया है। अब तो नाम मात्र को थोड़ा सा वन बचा है।

कञ्चन वन के आवान्तर ये पुण्यारण्य भावुक भक्तों की भावना पूर्ण करने वाले हैं—सरोजवन २ सन्तानवन ३ मंदारन्वन ४ चम्पकारण्य ५ केलि कौतुकवन ६ कुमुदवन ७ वसन्तवन ८ शृंगारवन ९ कदम्बवन १० कल्लोलवन 11 लवंग-वन १२ केतकीवन १३ और कान्तिवन १४ ये चौदह वन कञ्चनवन के अङ्गभूत सर्वदा सुखप्रद हैं। श्री सद्गुरु कृपा द्वारा मानसी पूजा में निरत रसिकसन्तों को इनका दिव्य अनुभव प्राप्त होता है। यहाँ मानसी पूजा अवश्य करना चाहिये ।

९--पर्वता

यह 'कञ्चनवन' से पांच कोस है, रास्ता जंगली है, साथ छोड़कर अलग होने पर पहले तो बहुत भटकना पड़ता था, परन्तु अब उतना कठिन नहीं है। आधे रास्ते पर दूधमती

का उद्गम स्थान मिलता है, एक वृक्ष के मूल में से झरना निकलता है समतल भूमि ही में। आगे प्रसिद्ध क्षीरेश्वर' महादेव मिलते हैं, यह हरिहरपुर सखुआ गाँव के पास है, वहां लोग कुछ देर विश्राम करते हैं, जलपानादि भी करते हैं, जलपान करने को देहाती चीजें बिकने आती हैं, इधर का रामकिशोर कन्द मिश्री जैसा मीठा लगता है, कच्चा ही छीलकर भोग लगाया जाता है। आगे 'पयसुरनी' कुण्ड' मिलता है परन्तु उसमें प्राय: जल नहीं रहता। यहाँ से पर्वता मुकाम तक जल कहीं नहीं मिलता, निरपनिया देश है, पर्वता में भी रहने के लिये जल और बगीचों की यथोचित सुभीता नहीं है, फिर भी काम चल ही जाता है। यह 'कञ्चनवन, का सहायक पर्वतीय देश है' यहाँ 'पाँच पर्वत' परम पावन माने जाते हैं—१ पश्चिम में नीलाद्रि २—उत्तर में स्वर्णाद्रि ३-दक्षिण में कौतुकाद्रि ४-पूर्व में मधुश्रवाद्रि और मध्य में सञ्जीवनाद्रि पाँचों पर्वत श्रेणी के नीचे ही पड़ाव पड़ता है। पर्वतों का दूर से दर्शन मात्र ही कर लिया जाता है। पास जाकर आनन्द विहार विरले भावुक सन्त जन ही करते हैं।

१०--धनुषाजी

पर्वता से धनुषाजी केवल डेढ़ कोस मात्र ही है, मुकाम वहीं ठहर जाता है, यह जनकपुर का प्रसिद्ध तीर्थ है, जनकपुर से आने वाले ६ कोस दूर पड़ने पर भी यहाँ प्राय: अवश्य आते ही हैं; माघ महीने के प्रत्येक रविवार को यहाँ मेला लगता है। यह जनकल्याणार्थ महर्षि दधीचि के तप:पूत पावन अस्थियों

श्रीधनुषाजी
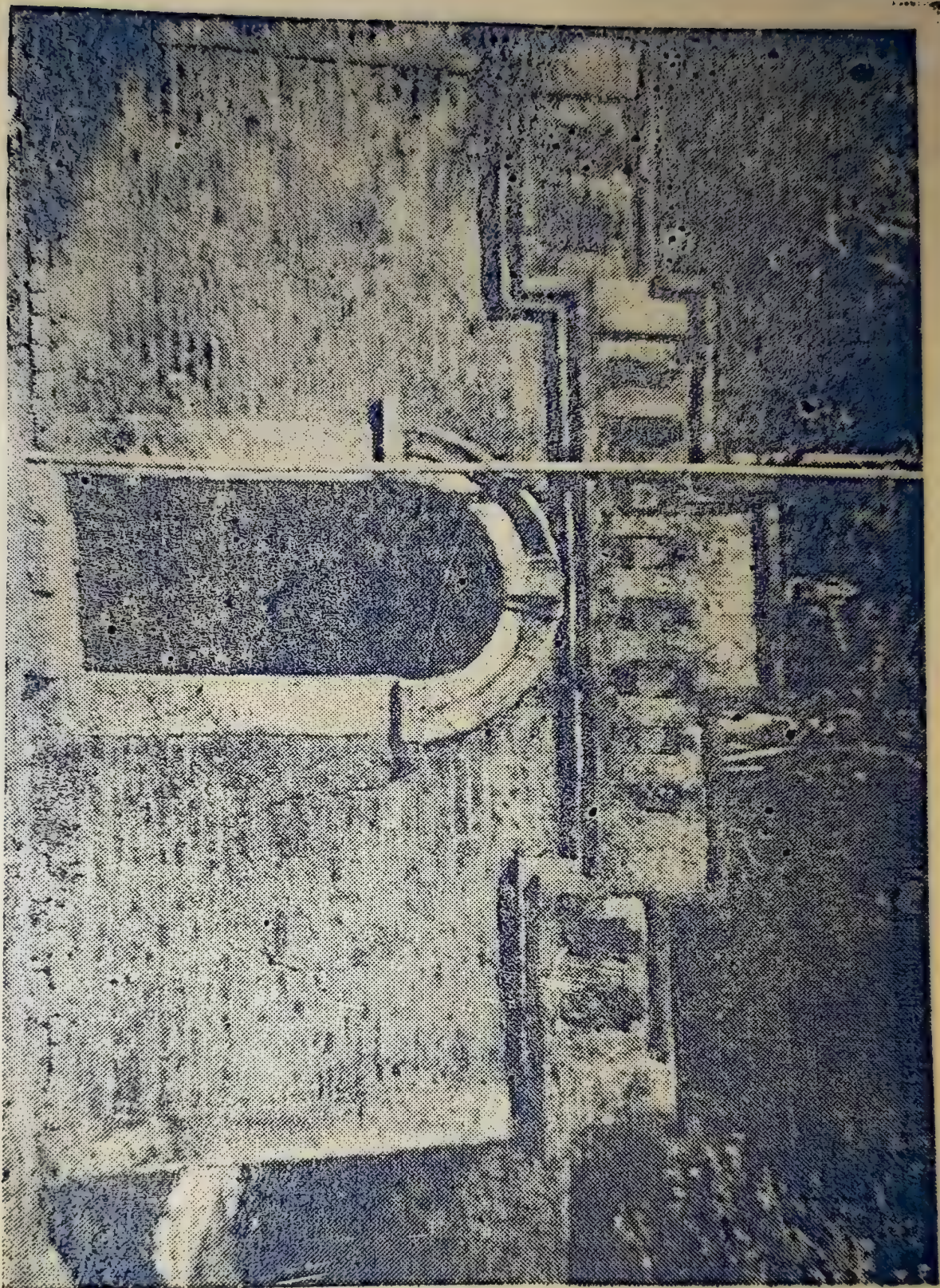
श्रीराम के कर कमलों से खण्डित शिव धनुष का प्रत्यक्ष दर्शन   पृष्ठ ८७

श्रीकञ्चन वन—

श्रीमिथिलाजी का सर्वश्रेष्ठ वन तथा श्रीविदेह महाराज के तपः सिद्धि का स्थान।   पृ० ६६

से विश्वकर्मा द्वारा निर्मित है, इस धनुष के द्वारा त्रिपुरासुर का भूतनाथ त्रिलोचन प्रभु ने विनाश किया था। एक बार शैव वैष्णव भक्तों के आग्रह वश शिव-विष्णु का प्रणय पूर्वक प्रेमयुद्ध हुआ, उसी में विष्णु भगवान् ने शिव धनुष को लीला मात्र से 'हुँकारेण जडीकृतः' जड़ बना दिया, शिव जी फिर उसे चढ़ा न सके, प्रभु ने अपने अवतार की सूचना देकर उसे तोड़ने की लीला का सुख सन्देश सुरेश्वर को देकर अन्तर्धान हो गये। वही धनुष विदेहवंशीय महाराज देवरात को प्राप्त हुआ, शिवप्रसाद मानकर उसकी पूजा करते थे, सीरध्वज महाराज (जनक) के समय में प्रभु ने अवतार लेकर उसको तोड़ा, धनुष की पूजा मिथिलेश जू ने की तो जगदम्बाजू के समेत जगदीश्वर का प्रेम सम्बन्ध उन्हें प्राप्त हुआ, अतः प्रभु प्रेम प्राप्ति के लिये आज भी लोग श्रद्धा पूर्वक उसकी पूजा सेवा दर्शन करते हैं। सुदूर पर्वत के विकट पथों का अतिक्रमण कर तिब्बत-भूटान तक के लोग मनोकामना पूर्ति के लिये यहाँ लालायित होकर आते हैं और सफल मनोरथ होते हैं।

श्रीरामस्य करस्पृष्टं धनुःखण्डस्य दर्शनम् ।
सर्वाघौघ हरं पुंसां सर्व कल्मष मार्जनम् ॥५।१३।
यथा रामेश्वरं लिङ्गं धनुषो दर्शनं तथा ।
महावैष्णव संस्कारैर्महायज्ञ व्रतादिभिः ।
महापुण्यातिरेकैश्च धनुषोदर्शनं भवेत् ॥ ५ । २३ ॥

श्रीसूरकिशोरजी तो यहाँ तक कह गये हैं—

'पाय कली धँसिहैं धरणी, निरखौ अबहीं जिनको पन है।
कह 'सूर किशोर' प्रतीति यहीं मनु श्रीसियरामहि को तनु है ॥'

यह घटता बढ़ता भी है, देखने में गली हुई ईंटों के झामा जैसे लगता है। परिक्रमा के अवसर पर कभी 'धनुष भंग' रामलीला भी होती है। एकादशी के दिन मुकाम विमला किनारे 'हरुसाहा' में रहेगा अथवा राम सागर पर करुणा में रहेगा यहाँ इसका निर्णय होता है। यहाँ 'पटने वाले' की सुन्दर धर्मशाला और दो एक दर्शनीय मन्दिर भी हैं, विश्राम-सागर पर 'सुञ्चा जी के पिपरा की कुटी' नामक सुन्दर मन्दिर है। इसमें सदावर्त और साधु सेवा का भी प्रबन्ध है। यहाँ का झूलनोत्सव प्रख्यात है। धनुषाजी से पूर्व 'वाणगंगा' का प्रवाह बहता है। यहाँ भी ठहने के लिए बगीचों का अभाव है पहले तो घोर जंगल था परन्तु अब जंगल कट गया है, छोटी-छोटी बस्तियां भी बस गई हैं। धनुषयज्ञ की विशाल मखशाला यहीं बनी थी। जिसमें संसार के शूर वीरों का सम्मेलन हुआ था।

'भगति हेतु सोइ दीन दयाला।
चितवहिं चकित धनुष मख शाला ॥

यहीं का प्रसंग है। प्रभु ने शिव धनुष यहीं तोड़ा था यह उसी का एक टुकड़ा है त्रेता में 'रंगभूमि' यहीं बनी थी।

११--सतोखर (सप्तर्षि-आश्रम)

यह धनुषा से तीन कोस है परन्तु कमला स्नान का लाभ लेने लिये परिक्रमावासी कुछ घूमकर जाते हैं, धनुषा जी

से कमला जो दो कोस हैं, वहाँ खूब भजन भाव जल होरी आदि सन्त जन कौतुक करते हैं, दही चूड़ा का बालभोग होता है, कमला तट का दही नामी है, यहाँ से तीन कोस सतोखर गाँव है। कुल पाँस कोस चलना पड़ता है। सतोखरमें ऋषियों के सात पोखर (तालाब) हैं, यहाँ वे भजन भाव करते थे, इसी लिये इसे सतोखर कहते हैं पास में सबैला कुशमाहा-ठीला भटिहान आदि गाँव हैं।

१२—हरुसाहा (विमला तट)

यहाँ विमला नदी जो श्रीकिशोरीजी की सखीरूपा है, उनके दर्शन और स्नान का लाभ मिलता है, कभी-कभी जल नहीं रहता है। एकादशी को व्रत होता है तो बड़ा बखेड़ा बढ़ जाता है, करुणा वाले फलाहार जुटाये रहते हैं और कुछ रईशो के ख्याल से भी महान्तों को भेंट पूजा की लालच देकर मुकाम तोड़ने का प्रयास किया जाता है। सतोखर से हरुसाहा चार कोस लगभग है, और वहाँ से तीन कोस 'करुणा। सुकुमार यात्रियों को मुकाम टूटने पर कष्ट हो जाता है। फिर भी लोग दुपहर 'विमलातट' पर बिताकर किसी भांती पाँव घसीटते जाते हैं ऐसी ताना तानो यद्यपि उचित नहीं है तथापि समय का फेर सब करा लेता है। आम जनता का कष्ट देखकर मुकाम न तोड़ने के लिये धर्म प्रिय नैपाल सरकार का विशेष ध्यान रहता है।

१३—करुणा (श्रीराम सागर)

यह हरुसाहा से तीन कोस है, यहाँ भक्तों का जमघट

अच्छा रहता है। यहीं पर पुष्पवाटिका में प्रिया प्रियतम के प्रथम समागम के दिन सायङ्काल में प्रभु ने संध्या वन्दन किया था और 'सिय मुख छवि विधु व्याज बखानी। गुरु पहँ चले निशावाढ़ि जानी॥' चरित्र प्रभु ने किया था, एकाएक प्रियाजू का वियोग लोक लीलार्थ इतने दिन रखना पड़ा इसलिये करुणा उमड़ पड़ी और धनुष भंग का सत्सङ्कल्प मन ही मन आपने कर लिया अतएव 'श्रीरामसागर' पर बसे हुए गाँव का 'करुणा' नाम पड़ गया। एकादशी के दिन फलाहार प्रायः यहीं होता है, कीर्तन झांकी और गान बजान का आनन्द रहता है। यहाँ के भक्त बड़ी श्रद्धा से सन्त सेवा करते हैं। यहां श्रीहरिहरदासजी नाम के विलक्षण संत रहते हैं।

१४-- विसौला (विश्वामित्र-आश्रम)

यह करुणा से एक कोस लगभग है, परन्तु परिक्रमा वासी लोग कल्याणेश्वर परिक्रमा पूर्ण करके तब 'विसौल' आते हैं, इस रास्ते से लगभग दो कोस पड़ जाता है। यहाँ का परिचय आगे विश्वामित्र ऋषि आश्रम प्रसंग में पाठक पढ़ चुके हैं। द्वादशी को प्रायः यहीं कढ़ी भात का भण्डारा पाकर सन्त जनकपुर जाते हैं। यहाँ के महान्त श्रीनागाजी महाराज बड़ी उदार भावना से सन्त सेवा करते हैं।

१५--गङ्गासागर

विसौल से जनकपुर चार कोस है, बीच में हरलाखी, हरनै दो गाँवों के बाद विमला (विल्बमती या बेलही) तट पर थोड़ी देर विश्राम और होरी गान गा बजाकर आगे बढ़ते

हैं, रास्ते में यमुना नदी पार कर अकौरा-बौहरवा [illegible] में कुछ लोग रात्रि निवास करके प्रातः काल चलते हैं। रास्ते में जलाधिका नदी मिलती है, पश्चात् रामपुर और कूपेश्वर होकर जनकपुर आते हैं। यहाँ 'गंगा-सागर पर परिक्रमा वासी ठहरते हैं, पूर्णिमा को अन्तगृही परिक्रमा कर 'जय सियाराम' नाम ध्वनि करते लोग अपने-अपने घर जाते हैं, मिथिला की मंजुल झांकी को हृदय में धारण कर रज मस्तक पर लगाते हैं और अपना जीवन कृतार्थ करते हैं। आइये अब अन्तगृही का कुछ आनन्द भी लीजिये—

अन्नगृही परिक्रमा

जनकपुर धाम के विवरण में प्रायः अन्तगृही परिक्रमा के अनुसार ही क्रम रक्खा गया है फिर भी वहाँ शास्त्रीय क्रम दिखा देना आवश्यक है। यह परिक्रमा फाल्गुन पूर्णिमा के दिन बड़े धूम धाम से होती है, लगभग पचास साठ हजार लोग प्रतिवर्ष यह लाभ लेते हैं। इसके सिवा श्रीरामनवमी-जानकीनवमी विवाह पंचमी-अक्षयनवमी एकादशी और रामानन्द जयन्ती आदि पर्वों पर बहुत से प्रेमी विशेष आनन्दोत्सव पूर्वक परिक्रमा करते हैं। प्रथम गंगा-सागर में स्नान पूजादिकर श्रीमिथिला भूमि को साष्टांग प्रणाम कर परिक्रमा प्रारम्भ करे। गंगा सागर से धनुष क्षेत्र आवे, वहां से पुरन्दर सरोवर वहाँ से महाराज सागर, वहाँ से विहार कुण्ड, वहाँ से अग्नि कुण्ड, वहाँ से मध्यमासर, वहाँ से रत्नसागर से कौण्डिन्य सर (कमंडलसर) वहाँ से अङ्गराग सर 'अरगजा-

कुण्ड और वहाँ से लक्ष्मण कुण्ड होकर गङ्गासागर आकर पुनः प्रेम पूर्वक प्रार्थना प्रणाम कर परिक्रमा पूर्ण करे। इन तीर्थों के अन्तर्गत बीच-बीच में जो तीर्थ और दर्शनीय मन्दिर पड़ते हैं, उनका सविस्तार वर्णन आगे कर दिया गया है। अब तो श्रीमौनीजी करपात्रीजी महाराज के आदेशानुसार नेपाल महाराज ने परिक्रमा की सड़क बनवा दी है, उसी सड़क पर लोग परिक्रमा करते हैं,तीर्थ सब भीतर रह जाते हैं।

"परिक्रमा वासियों को जो सहायता देता है और मार्ग साफ शुद्ध करते हैं, वह भी परिक्रमा का पुण्य प्राप्त करते हैं। जितने पाँव इस मार्ग में चलते हैं उतने हजार अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करते हैं। यात्रा में आने वालों का जो उत्साह बढ़ाता है वह वाञ्छित फल प्राप्त करता है। पथ में चलने वाले यात्रियों को धूप-वर्षादि से पीड़ित होने पर आश्रय भोजनादि देता है वह सपरिवार स्वर्ग का सुख भोगता है। उनके पाँव दबा देता है तो पितरों को तार देता है, जो चरण धोता है, उनकी कथा सुनता है, और उनका यश गाता है उसके समान संसार में कोई भाग्यशाली नहीं है।"

"परिक्रमा वासी श्रीधाम के दर्शन कर प्रेम विह्वल साष्टांग प्रणिपात पड़ जाता है उसके जन्म जन्मान्तरीय पाप नष्ट हो जाते हैं और प्रभु का दिव्य धाम पा लेता है। जो दर्शनमात्र से हर्षोन्मत्त होकर स्नेह विभोर धरणी में लोट पोट हो जाता है, अभिमान त्यागकर प्रेम और दीनता से श्रीरज में अबोध बालक सा बनकर लोटता है उसके परिक्रमा करते

समय जो पाप अपराध कृमी कीटादि हिंसा एवं परान्न पानी-यादि ग्रहण के दोष लगे हों वह तत्काल छूट जाते हैं, वह श्री-मैथिली जनकात्मजा की कृपा से परमपद का अधिकारी हो जाता है।"

श्रीधाम के आस पास

जो परिक्रमा का लाभ नहीं प्राप्त कर सकते हैं उन्हें धनुषा-कञ्चनबन-गिरिजाबाग आदि अकेले घूम फिर कर दर्शन करने जाना पड़ता है, परिक्रमा में जो तीर्थ नहीं पड़ते हैं और प्रसिद्ध एवं दर्शनीय हैं, उन्हें भी जान लेने चाहिये वे तीर्थ ये हैं तथा उनका परिचय इस प्रकार है—

नन्द महरी—यह जनकपुर से दस कोस उत्तर है, रास्ते में 'जनक सरोवर' और 'धनुषाजी' दो प्रसिद्ध तीर्थ मिलते हैं। यहाँ महाराज जनक के गोपालक नन्द बसा करते थे, सवा लक्ष गायें रखने वाला 'नन्द' गोप कहा जाता है, ऐसे कई गोप आपके पास थे, श्रीराम विवाह के समय कई लक्ष गायें आपने दहेज में दी थीं, उनमें से चार लाख तो श्रीदशरथजी ने जनकपुर में ही ब्राह्मणों को दान दे दी थी। मिथिला वासी व्यङ्ग करते हैं कि एक पुत्र हो जाय तो एक लक्ष गोदान करने का संकल्प था, चार-चार पुत्र हो गये, क्या करें ? धन्य श्री मिथिलेशजू कि श्री दशरथजी की मनौती पूरी करवा दी गयी। यहाँ श्री कमलाजी उत्तर-वाहिनी हैं, दृश्य बड़ा रमणीय है पर्वत और बन श्रेणी के मध्य कल-कल नादिनी भगवती कमला देवी दर्शकों के पाप के साथ मनः संताप भी नष्ट कर देती हैं।

कोई भी नदी उत्तर वाहिनी हो तो भागीरथीवत् पुण्य फलप्रदा बन जाती है। फिर यह तो कलियुग में गङ्गा का महत्व घट जाने पर उसका सम्पूर्ण माहात्म्य लेकर अवतीर्ण हुई है, इसके स्नान का महत्व कौन वर्णन कर सकता है। कमला मिथिला की सर्व प्रधान नदी है, यह गङ्गा और लक्ष्मी का अवतार मानी जाती है।

सर्वान्कामनवाप्नोति सर्वपाप क्षयो भवेत्।
कामान्पूरयते यस्मात्तस्मात्सा कमलास्मृता ॥२०।४८।
माघमासे विशेषेण कोटि यज्ञ फलं लभेत् ॥

नन्दमहरी पहाड़ी पर से कमलाजी की झाँकी का परम मनोहर दर्शन होता है। पहाड़ी पर मथानी और दधिकुण्ड का प्राकृतिक दृश्य है। यहाँ पास में शीशा-पानी बाजार है। जो पत्रक (तेजपात) मधु; फाकड, (कूट्ट) राई, सरसों तोरी पहाड़ी आल्लू, कस्तूरी, चँवर आदि के व्यापार का केन्द्र है। कमलाजी की मध्य धार में जहाँ तहाँ पत्थर की चट्टानों पर बैठकर भजन स्मरण करने का आनन्द अनिर्वचनीय है। यहाँ एक मन्दिर और साधू की कुटिया भी है। यहाँ से छः कोस आगे त्रिवेणी का मेला माघ में लगता है, जो भोटिया घोड़ा पहाड़ी कुत्ते और पहाड़ी चीजों के लिये प्रसिद्ध है। रास्ते में वन बड़ा रमणीय है। जंगली जानवर भी रहते हैं, सावधानी से संगी साथी लेकर चलना चाहिए।

२--जनक सरोवर—यह परम पवित्र तीर्थ है, परशुराम कुण्ड, जनक सरोवर, सुनैनासर और जनककूप ये चारों तीर्थ यहीं आस-पास थे, जिनमें पिछले दो नष्ट हो गये हैं, यहाँ

परशुराम कुण्ड पर कल्पवृक्ष और परशुरामजी की मूर्ति के दर्शन होते हैं। इसका वर्णन आगे आ चुका है।

जनकस्य सरो दृष्ट्वा दृष्ट्वा कल्पद्रुमं तथा।
स्नात्वा पीत्वा नरोयाति पदं शाश्वतमव्ययम् ॥१६।६३

३--श्रीकमलाजी—नन्द महरी के पास उत्तर वाहिनी कमलाका स्नान करने अब आप जनकपुरसे महेन्द्र नगर होकर वस मोटर) से कमला तट तक जा सकते हैं और कार्तिक पूर्णिमा के दिन जयनगर स्टेशन से लगभग दो फलांग पूर्व कमला तट पर मेला लगता है, पहले यह मेला स्टेशन से कोस भर दूर शिलानाथ महादेवके मठपर लगता था, परन्तु मन्दिर नदीमें गिर जानेसे अब यहां लगता है। वहाँ भी जा सकते हैं।

४--गेरुका—यह जनकपुर से दो कोस पश्चिम है यहाँ अधिक मासके प्रत्येक रविवार को मेले लगते हैं। यहाँ विरजा और गेरुका सङ्गम है, एक श्रीवैष्णव का मन्दिर भी है।

५--यमुना—यह जनकपुर से तीन कोस पूर्व है, यहाँ यमद्वितिया का मेला लगता है। यमुना और विमला दोनों का सङ्गम है। अकौरा-विरता ग्राम के पास है।

६--पन्थ पाकर----यह जनकपुर से १२ कोस पश्चिम है, जलेश्वर भिट्ठामोड़ होकर जाया जाता है सड़क पक्की है, मोटर जो सीतामढ़ी जाती है, उससे बथनाहा गाँवमें उतरकर एक मील चलना पड़ता है। श्रीकिशोरीजी की विदाई हुई तब गाँव के बाहर पालकी रखकर सखी सहेलियाँ यहीं से लौटाई गई थीं, कहते हैं कि श्रीस्वामिनीजूने सोचा कि समस्त ऋद्धियाँ

खिड़ियाँ तो मेरे साथ अवध चल रही हैं। तो यहाँ लोगों का निर्वाह कैसे होगा,इसलिये कृपा परवश श्रीकिशोरीजीने आँचर में जो धान बाँधा गया था – जिसको इधर 'खोइछा' भरना कहते हैं, छोट दिया, अतः यहाँ धान मात्र रह गया। यहाँ श्री-जानकी जी का मन्दिर और पाकर का पुराना पेड़ है, पाकर को कोई काटता नहीं, जो काटता है उसे कुछ न कुछ विघ्न हो जाता है। स्थान चमत्कारी हैं। अतिथि अभ्यागतों को गाँव वाले दही चूड़ा का भोजन कराते हैं। इस पाकर का फल असाध्य रोगों का विनाश करने में चमत्कारी है।

७---सीतामही--यह सीता जी की जन्मभूमि है, सीतामही का अपभ्रंश सीतामढ़ी हो गयाहै, अब यह शहर जिला होगया है, यहाँ सद्गुरु-निवास, सिद्ध बाबा का स्थान श्रीरामानन्द-आश्रम आदि कई दर्शनीय मन्दिर हैं, श्रीजानकी महल प्रधान है; यह लखपति स्थान हैं, पूर्व में महान्त विरक्त श्री रामा-नन्दीय वैष्णव थे, परन्तु गृहस्थ हो गये थे; अब उनके लड़के महान्त हैं। यहां पूर्व में लक्ष्मणा जी का स्नान है, यह पवित्र नदी है। यह लक्ष्मी जी का अवतार है—

तस्यां स्नानेन पानेन विष्णु रूपोभवेन्नरः ॥ २१। ६।
वैशाखस्य सिते पक्षे नवम्यां स्नानजं फलम्।
तथा चैत्र नवम्यां वै मया वक्तुं न शक्यते ॥ २१। १०।

यह जानकी जी की सखी होकर क्रीडा करने प्रकट हुई हैं। सीतामढ़ी जनकपुर से सोलह कोस है, पक्का राजमार्ग है, मोटर जाती है, जनकपुर से रेल द्वारा जयनगर दरभंगा

श्रीसीतामढ़ी का श्रीजानकी मन्दिर

श्री जानकी जी जहाँ प्रकट हुई हैं, उस परम प्राचीन मन्दिर के
प्राचीन श्री विग्रहों की झाँकी

होकर जाने में भी सुभीता है। यहां श्रीराम नवमी और विवाह पञ्चमी के मेले लगते हैं, परन्तु यथार्थ में यहां श्रीजानकी नवमी के दिन ही मेला लगना सङ्गत हैं। यहां जानकी मन्दिर के पास उर्विजा कुण्ड 'सीता कुण्ड' है जहाँ श्रीजू प्रकट हुईं थीं। कुछ वर्षों से श्रीसीतामढ़ी की भी परिक्रमा सन्तों ने चलाई है और श्रीजानकी नवमी को अन्तर्गृही परिक्रमा-जन्मोत्सव लीला बधाई इत्यादि उत्सव सुन्दर रूप से किया जाने लगा है।

दुर्गात्पश्चिमतो भागे योजनात्त्रितयात्परम् ।
यज्ञस्थलं नरेन्द्रस्य यत्रलाङ्गल पद्धतौ ॥८।२६।
समुत्पन्ना महाभागा सीता राघव वल्लभा ।
जनकेन गृहे नीता साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ८ ॥२७।
तस्मिन्यज्ञस्थले चैत्रे माधवे च मुमुक्षुभिः ।
यात्राकार्या विशेषण द्वयोर्जन्मदिनो यतः ॥ ८ । २८॥

श्रीजानकी नवमी सीतामढ़ी में, श्रीरामनवमी अयोध्या में और श्री विवाह पञ्चमी जनकपुर में विशेष पुण्यप्रद हैं। सीतामढ़ी से पूर्व में चक्र मुनी का आश्रम, पश्चिम में पुण्डरीक आश्रम पुनौरा, दक्षिण में खड्ग मुनिका आश्रम और उत्तर में हलेश्वर नाथ है। मध्य में श्रीमहावीरजी का मन्दिर है, इनके सिवा सेठ साहुकारों के तथा सन्तों के कई सुन्दर मन्दिर हैं।

८---वराह क्षेत्र

यह जनकपुर से पूर्व है, दस दिन का पैदल रास्ता है, कटिहार लाइन के 'जोगवनी' स्टेशन से उतर कर विराट नगर

से मोटर के रास्ते से भी जाते हैं यहाँ 'बनखण्डी बाबा' की धूनी और 'वाराह भगवान्' के दर्शन होते हैं, कार्तिक पूर्णिमा को भारी मेला लगता है। यह पहाड़ी मार्ग है, भोजन सामग्री की भी पूर्ण सुविधा नहीं रहती है। यात्री कष्ट सहकर भी पुण्य लाभ के लिये बड़ी श्रद्धा से जाते हैं। यहाँ कौशिकी नदी का स्नान होता है, यद्यपि वैशाख में यात्रा का विधान है परन्तु कार्तिक में ही विशेष लोग जाते हैं। यह मिथिला की पूर्वी सीमा पर है—

माधवे दुर्लभे मासे तत्रापि कौशिकी नदी ।
मिथिला पुण्यदा यत्र किं मुक्ति दुर्लभा भवेत् ॥१८।१८॥

'परम दुर्लभ वैशाख मास में मिथिला जैसे पावन प्रदेश में यदि कौशिकी नदी का स्नान मिल जाय तो मुक्ति क्या दुर्लभ है ? यह विश्वामित्रजी की बहन है। महा पुण्य प्रदा है।

६--हरिहर क्षेत्र

यह मिथिला प्रदेश की दक्षिण-पश्चिम सीमा पर है, यहाँ पुलह मुनिका आश्रमहै, यहीं पर राजर्षिजड़भरतजी पूर्व जन्ममें भजन करते समय मृगी पुत्र में आसक्त हो गये थे, यहाँ संसार प्रसिद्ध सोनपुर का मेला कार्तिक पूर्णिमा पर लगता है। यहीं हाजीपुर श्रीराम चौरा घाट पर प्रभु श्रीमिथिला जाने के लिए गंगापार उतरे थे। सोन-पुर का पुल और रेलका लम्बा प्लेट-फार्म सुप्रसिद्ध है। यहाँ गङ्गा भागीरथी और शालिग्रामी का सङ्गम है। शालीग्रामी को गण्डक और नारायणी भी कहते

हैं, यह हिमालय से नैपाल तराई होकर इधर आती है, मुक्ति-क्षेत्र 'दामोदर कुण्ड' के पास इस नदी में चक्राङ्कित प्रभु के स्वयंव्यक्त विग्रह नाना प्रकार के सुन्दर शालीग्राम प्रकट होते हैं। यह श्रीजानकीजी की सखी है—

तस्यां स्नानेन दानेन महापुण्य फलं लभेत् ।
कार्त्तिक्यांपौर्णमास्याञ्च विशेप फलदा मता ॥
नैवोपमा भवेत्तस्याः साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपिणी ।
दर्शनात्स्पर्शनात्पानान्मुच्यते नात्र संशयः ॥
(२१।६+७)

इस प्रकार मिथिलापुरी श्रीराम स्वरूप है, हिमालय शिरोभाग है और जाह्नवी चरण कमल। गण्डकी दहिने और कौशिकी बाएँ भाग में हैं 'हृदये कमला देवी जानकी वल्लभा सखी' है, और सर्व तीर्थ अङ्ग प्रत्यङ्गों में हैं, इसका महत्व दिखाना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है, कृपा पीठ और सिद्ध पीठ होने से-योग-भोग-मुक्ति 'करतले स्थिता' रहती है। 'मिथिला अवनि पुनीत भजन तत्काल सफलता' और 'सुख-मानि वसे मिथिलापुरी तिन पद रज हौं शिरधरौं' कहकर सन्त जन इसका रहस्य समझाते हैं।

'दिव्य रूप मिथिला के वासी। ब्रह्म समान देह अविनाशी ॥
नित्य विलास महारस भोगी। परतम ईश परम संयोगी ॥

मिथिला वासियों ने तो प्रभु को प्रेमवश यहीं रख लिये हैं देखिये एक प्रेमी प्रभु को कैसे समझा रहे हैं—

'बसो किन राजा बनि जनक नगरिया ।
मृदु मुस्कयाय हरो मन बनरे ! डारी नेह रसरिया ॥
रसिक रमण चितवत चित चोरत, मारी नैन 'कटरिया ।
यहिपुर बीच बसाय सजन पुर, रुचि शुचि कनक अटरिया ॥
विमल चांदनी चौकें चमन की, निकट विदेह बखरिया ।
ललना ललकि मिलें नित लालन, सियां सरिस प्रिय सरिया ॥
करहिं कटाक्ष सुभग मृग नयनी, सरहज प्रेम नजरिया ।
'मौन' मुदित नितअवध नगर में, भेजत रहियो खबरिया ॥

आप भी उनके साथ कुछ देर रहकर श्रीमिथिला का रस लूट लीजिए और 'मिथिला जन्म भलेरी' मनाइये ।

मैं झाँकी बहुत संक्षेप में लिखना चाहता था, परन्तु प्रेमी सन्तों की आज्ञा हुई कि मिथिला का रहस्य अति गुप्त है, बहुधा लोग इस प्रभु के अन्तरङ्ग धाम से अज्ञात से रह जाते हैं । एतदर्थ प्रसंगानुसार कुछ वर्णन बढ़ा दिया गया है, इससे पाठकों को भी रुचिकर होगा और 'मिथिला माहात्म्य' की पोथी का कुछ काम तो अवश्य कर सकेगा । आशा है, 'मधुकर सरिस सन्त गुणग्राही' मेरी अज्ञानतावश प्रादुर्भूत दोषों को 'परिहरि वारि विकार' 'सन्तहंस गुण गहहिं पय' चरितार्थ करेंगे, यदि निर्हेतु की कृपा करने वाले रसिकसज्जनों को मिथिला यश गाने के नाते मुझपर कुछ भी कृपा कटाक्ष करने की इच्छा होजाय तो आप अपनी उदारता से इस अकिञ्चन को भी श्रीमैथिलीरमणजू के पादारविन्दों में परम प्रेम स्वरूपा भक्ति अविचल रूपसे प्राप्त हो, बस, यही आशीर्वाद देकर कृतार्थ करेंगे ।

श्रीसीतारामचन्द्रार्पणमस्तु

विचारणीय बातें

१—जो तीर्थ कुण्ड-सरोवर-कूप अथवा देवालय नष्ट होते हों उनका जीर्णोद्धार कर बचाने का यथा शक्ति प्रयत्न करना चाहिये तथा नष्ट हो गये हों जैसे रतवारा तुलस्याही आदि उनका पुनरुद्धार करना उन उन तीर्थों के निकटवर्ति सज्जनों का और राज्य प्रबन्धकों का पुनीत कर्तव्य है।

२—जिन तीर्थों पर शिलालेख नष्ट होगये हैं वहाँ तीर्थ का नाम तथा पर्व यात्रा तिथि लिखवाकर गड़वा देना तथा गड़े हुए पत्थरों की रक्षा करना धार्मिक सज्जनों तथा शासकों का पावन कर्तव्य है।

३—भूकम्प और बाढ़ की अधिकता के कारण जहाँ प्राचीन चिन्ह लुप्त हो गये हैं परन्तु तलावादि की खुदाई के समय यदि कुछ चिन्ह मिल जाय तो उनको सुरक्षित रखने का प्रबन्ध राज्य की ओर से करना चाहिये। जैसे अग्नि कुण्ड विहार कुण्ड तथा महाराज सागर की खुदाई के समय मिले चिन्ह सुरक्षा न होने से नष्ट हो गये, जिसका उल्लेख भारतेन्दु श्रीहरिश्चन्द्रजी ने अपनी 'जनकपुर-यात्रा' में किया है।

४—प्राचीन सन्तों के ग्रन्थों को नष्ट होने से बचाना तथा उनको सर्वजन सुलभ बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

५—मेला के अवसरों पर सफाई का पूरा प्रबन्ध कराने के लिये राज्य प्रबन्धकों को तथा नगरपालिका को उत्साहित करना चाहिये तथा स्वयं भी गन्दकी न हो उसका पूरा ध्यान रखना चाहिये।

६—आततायियों से सताये गये तथा रोग पीड़ितों का दुःख निवारण करने केलिये सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये।

७—तीर्थ मन्दिरों-जलाशयों सड़कों तथा धर्मशालादिक सार्वजनिक स्थानों के आस पास मल-मूत्रादि द्वारा कभी भी गन्दगी न फैलानी चाहिये।

८- मछली मारना, शिकार खेलना, मदिरा तथा वेश्या की दुकान लगाना श्री जनकपुर धाम में धर्म रक्षक नेपाल सरकार की ओर से मना है, अतएव इन पापों से बचकर राज्य और धर्म दण्ड के महान् अपराध से स्वयं बचना तथा दूसरों को बचाना चाहिये, परन्तु आजकल इसकी भयङ्कर उपेक्षा हो रही है इस लिये इस ओर धर्म प्रिय शासकों को ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

९-दूर देश के तीर्थ यात्रियों को अपना पूज्य अतिथि तथा प्रिय परिवार तुल्य मानकर उनको सुख सुविधा प्रदान करना चाहिये। वे हमारे देश वासियों को तथा श्रीधाम की कीर्ति गाते जायं ऐसा वातावरण रखना चाहिये।

१०--एकदम परिक्रमा की सड़क के किनारे पशुवध तथा मछली-मांस-मदिरा बेचना सर्वथा बन्द कर देना चाहिये। निरामिष शाकाहारी यात्रियों को भजन कीर्तन करते हुए परिक्रमा लगाते समय यह दृश्य देखने से कितना कष्ट होता होगा और यहाँ से क्या भाव लेकर जाते होंगे इसका विचार करना चाहिये।

उपर्युक्त बातें अथवा अन्य भी ऐसी-ऐसी तीर्थ की शोभा सम्पत्ति बढ़ाने वाली बातों का धर्म प्रेमी सज्जनों को सतत ध्यान रखना चाहिये। राज्य प्रबन्धकों को भी अपनी तथा श्रीधामकी शोभा-सुयश एवं धर्म बृद्धि के लिये भजन--कीर्तन कथा सत्सङ्ग लीला झांकी तथा उत्सवों के अवसर पर इसका आयोजन करने वालों को सहायता प्रदान कर उत्साह बढ़ाना चाहिये तथा भजनानन्दी पुण्यात्मा साधु सन्तों का संरक्षण कर उनके शुभाशीर्वाद भाजन बनना चाहिये।

सीते ! प्रसन्ना भव ! श्रीरामः शरणं मम।

सीते ! प्रसन्ना भव ! श्रीरामः शरणं मम।

❁ मनको–सदुपदेश ❁

चञ्चलता सिगरी तजिके-
मन मान कही यह बात भली है।
सेउ सिया पद पङ्कज धूरि,
सञ्जीवन मूरि विहार थली है ॥
वारहि वार सिखावति है,
अपने मन को यह प्रेम अली है।
ठाकुर रामलला हमरे,
ठकुराइन श्री मिथिलेश लली है ॥

—श्री प्रेमसखी जी

श्री मिथिला--धाम

मनोहर मैथिलीजू को धाम।
मन–मोहत जो मोहन जू को, मङ्गल मोद निधान ॥
विष्णु--विरञ्चि रहत अरुझाये, ललित लतन्ह वसुयाम।
शुक-पिक बनि सुर-वनिता सुमिरत, सियको नाम ललाम॥
चौदह भुवन तीन लोकन्ह के, पावन तीर्थ तमाम।
'प्रेमनिधी' रजकण पर वारों, जय श्री मिथिला धाम ॥

—प्रेम माधुरी

श्रीदुलहा भगवान् का मन्दिर

श्रीरामानन्द--आश्रम, जनकपुरधाम

आप श्रीमिथि[illegible] पधारें तो श्रीरामानन्द आश्रम में श्रीदुलहा सरकार के दर्शन अवश्य करिये। आपको परमानन्द प्राप्त होगा। श्रीजनकपुर आकर यदि आप इनके दर्शन से व[illegible] रह गये तो यह दुर्लभ लाभ न मिलने का पश्चात्ताप हो[illegible]ुर में प्रकट प्रभु विराजते हैं। प्रतिवर्ष अनेकों भक्त [illegible] प्राप्त कर कृतार्थ होते रहते हैं। सम्भव है आपभी उनकी कृपाकोर पर निछावर हो जायँ।

यहां पर आपको सनातन धर्म का विशाल साहित्य पढ़ने को मिलेगा, साथ ही साथ कथा कीर्तन सत्सङ्ग भजन का भी अलभ्य लाभ प्राप्त होगा।

निवेदक—

परिचारक, श्रीरामानन्द-आश्रम

जनकपुर धाम (नेपाल)

सूचना--

श्रीजनकपुर धाम आने के लिये बरौनी-कटिहार लाइन के समस्तीपुर जंकशन से जयनगर होते हुए रेल से तथा मुजफ्फरपुर सीतामढ़ी होते हुए मोटरसे आने की सुविधा है।